दि आसाम वैली स्कूल

जागरण 2019

জাগৰণ

जागरण

जागरण

वार्षिक पत्रिका – 2019

प्रकाशक

भारतीय भाषा विभाग

दि असम वैली स्कूल

मुख्य संपादक : डॉ. राजेश कुमार मिश्र

सहायक संपादक : श्रीमान संजय दीक्षित

सहायक संपादक मण्डल : श्रीमान प्रेम कुमार सिंह

: श्रीमान अनिल कुमार यादव

: श्रीमती ममता मिश्रा

: श्रीमती मनदीप कौर

: डॉ. परिणीता गोस्वामी

: श्रीमती प्रार्थना बोरा फूकन

विद्यार्थी संपादक मण्डल : सिकुनप्रिया गोस्वामी

: आरव जैन

: आर्यन खाटूवाला

: वेदांश जिंदल

आवरण सज्जा : अनुष्का जोशी

: अनिकेत अनंत जोशी

: डॉ. राजेश कुमार मिश्र

फोटोग्राफ : श्रीमान प्रेम कुमार सिंह

संपादकीय पता : दि असम वैली स्कूल, बालीपारा, शोणितपुर (असम)

ईमेल का पता :rkm@assamvalleyschool.com

संपादक की कलम से.....

प्रिय सुधी पाठकगण,

भारतीय भाषा विभाग की वार्षिक पत्रिका जागरण के माध्यम से एक बार पुनः आपसे जुड़ते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी हमने अपनी इस पत्रिका में विद्यार्थियों की भावनाओं को पुष्पित और पल्लवित करने का अथक प्रयत्न किया है। बालमन की भावनाओं को शब्द-रूप में मूर्त करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य है।

किसी भी विद्यालय की उत्कृष्टता की पहचान उसके विद्यार्थी होते हैं। अतः मेरी नज़रों में शिक्षा का उद्देश्य तभी सार्थक होता है, जब विद्यार्थी पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान में भी दक्ष हों। विद्यार्थियों की चंचलता और वैचारिकता को सृजनात्मकता में परिवर्तित करना ही शिक्षक का मूल ध्येय होता है। इसलिए हमने बाल-मनोभावों को कहानी, निबंध, यात्रा-संस्मरण एवं कविता के साथ-साथ चित्रात्मक स्वरूप में भी प्रस्तुत करने का पूर्ण प्रयास किया है। हमारा यही प्रयास रहा है कि विद्यालय के अधिकांश विद्यार्थी इस रचनात्मक कार्य में अपनी अधिकतम् सहभागिता कर सकें। पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए विभाग ने ऑन लाइन पत्रिका के प्रकाशन की ओर कदम बढ़ाया है।

जागरण के सफल प्रकाशन हेतु संपादक होने के नाते सर्वप्रथम में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान डॉ. विधुकेश विमल जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ जिन्होंने विद्यालय में भारतीय भाषाओं के विकास में अपना असीम सहयोग प्रदान किया है। हिंदी विभाग के समस्त सहयोगियों श्रीमान संजय दीक्षित, श्रीमान प्रेम कुमार सिंह, श्रीमान अनिल कुमार यादव, श्रीमती ममता मिश्रा एवं श्रीमती मनदीप कौर जी का भी सहयोग के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। असमिया विभाग की भाषा अध्यापिका डॉ. परिणीता गोस्वामी एवं श्रीमती प्रार्थना बोरा फूकन के साथ-साथ बांग्ला भाषा के अध्यापक श्रीमान मल्हार रक्षित जी का भी मैं आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने असमिया और बांग्ला भाषा की रचनाओं के संपादन में अपना अप्रतिम योगदान दिया। आशा करता हूँ कि आप हमारे नौनिहालों की रचनाओं को पुनः अपने हृदय में स्थान देकर हमें प्रेरित करेंगे। हम आपके सहयोग एवं सुझाव का सदैव स्वागत और सम्मान करते हैं।

डॉ. राजेश कुमार मिश्र

संपादक, जागरण

हिंदी विभाग

दि असम वैली स्कूल

बालीपारा, शोणितपुर

rkm@assamvalleyschool.com

hsmmu@assamvalleyschool.com

हिन्दी

रचना कोश

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या 1 – यह भारत देश हमारा, मेरा अभिमान तिरंगा, समय का पहिया

पृष्ठ संख्या 2 – मेरा भारत देश महान, बीते पल, इस कश्मकश का नाम है ज़िंदगी

पृष्ठ संख्या 3 – गाँधी, माँ

पृष्ठ संख्या 4 – सच्चा देशभक्त, सच्चा दोस्त, मेरा भारत महान, हमारा प्यारा हिंदुस्तान

पृष्ठ संख्या 5 – हौंसला, मेरा देश

पृष्ठ संख्या 6 – मोबाइल और रिश्ते, ज़िंदगी, क्यों डर लगता है मुझे

पृष्ठ संख्या 7 – भारतमाता का मंदिर, मेरी माँ

पृष्ठ संख्या 8 – पेड़ हमारे सच्चे साथी, भारत देश है सबसे प्यारा, मैंने देखा

पृष्ठ संख्या 9 – दीवारें बनीं घर

पृष्ठ संख्या 10 – गांधी : एक आदर्श, परिवर्तन

पृष्ठ संख्या 11 – आर्टिकल 370

पृष्ठ संख्या 12-13 – पाइका विद्रोह

पृष्ठ संख्या 14 – राजगुरु महापात्रा, गीता : एक प्रेरणा

पृष्ठ संख्या 15 – असली विजेता

पृष्ठ संख्या 16 – मैं जीत गया

पृष्ठ संख्या 17 – आखिर मैं बेहोश क्यों हुई ?

पृष्ठ संख्या 18 – गलती का एहसास

पृष्ठ संख्या 19 – छूकर मेरे मन को – हर्ष अग्रवाल

पृष्ठ संख्या 20 – छूकर मेरे मन को – आर्यन साहू

पृष्ठ संख्या 21 – छूकर मेरे मन को – ओजस ज्योति बोरा हजारिका

पृष्ठ संख्या 22 – छूकर मेरे मन को – कपीश हरसिंगपुरिया

पृष्ठ संख्या 23 – छूकर मेरे मन को – श्रुति कोठारी

पृष्ठ संख्या 24 – हिंदी वर्ग पहेली

पृष्ठ संख्या 25 – मेधा परीक्षण

पृष्ठ संख्या 26 – रास्ता ढूँढिए

पृष्ठ संख्या 27 – देखो हँस न देना

यह भारत देश हमारा

सदियों से सम्मानित पूजित
वेद-मंत्र, गीता से गुंजित
प्रेम-भाव सरिता से सिंचित
दुनिया भर से यह प्यारा
यह भारत देश हमारा।

यहाँ ऋषि मुनियों की वाणी
महापुरुषों की अमर कहानी
मानवता की अमिट निशानी
सकल विश्व से यह न्यारा
यह भारत देश हमारा।

गीता और कुरान यहाँ पर
गुरुवाणी का मान यहाँ पर
सकल गुणों की खान यहाँ पर
सबकी आँखों का तारा
यह भारत देश हमारा।

गुणकारी औषधियों का घर
अंतरिक्ष की शान यहाँ पर
सात स्वरों वास यहाँ पर
नदियों की कल-कल धारा
यह भारत देश हमारा।

काव्य बागरोडिया
कक्षा-दसवीं

मेरा अभिमान तिरंगा

तीन रंगों से सजा तिरंगा
भारत का अभिमान तिरंगा
सेना की है शान तिरंगा
भारत की पहचान तिरंगा।

वीरों की तलवार तिरंगा
खलिहानों का तेज तिरंगा
देशप्रेम की ज्योति तिरंगा
बलिदानों का भान तिरंगा।

खुशियों की सौगात तिरंगा
दुखियों का अवलंब तिरंगा
हर मानस के साथ तिरंगा
प्रेम-भाव से भरे तिरंगा।

जीवन का संचार तिरंगा
खुशहाली का भाव तिरंगा
मित्रों का है मित्र तिरंगा
दुश्मन का है काल तिरंगा।

शौर्य केडिया
कक्षा-दसवीं

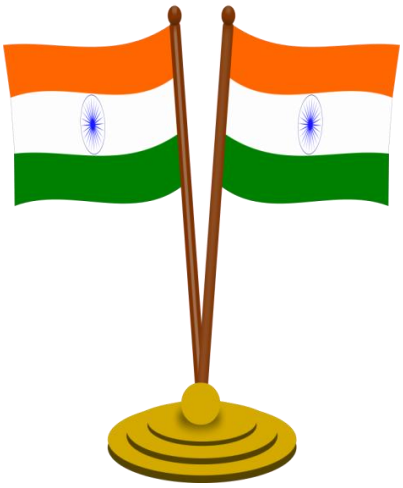

समय का पहिया

समय का पहिया चले निरंतर
सबको यही सिखाता है
जो चलता है बिना रुके बस
मंजिल वह ही पाता है।

रुक जाने से थमता जीवन
गात शिथिल हो जाता है
गति के साथ कर्म जो करता
स्वस्थ वही कहलाता है।

सरिता हर पल कल-कल बहती
स्वच्छ नीर ले जाती है
ठहरे ताल के पानी में
दुर्गंध सदा ही आती है।

सम्राट गुप्ता
कक्षा-दसवीं

मेरा भारत देश महान

दुनिया भर के सब देशों में
सबसे ऊँची अपनी शान
प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता
मेरा भारत देश महान।

यहाँ सभी लोगों का स्वागत
सबका है सम्मान यहाँ
गंगा की इस अमर धरा-सा
दूजा कोई धाम कहाँ।

गीता और कुरान यहाँ पर
गौतम बुद्ध का ज्ञान यहाँ
राम-कृष्ण की कर्मभूमि-सा
कोई पावन धाम कहाँ।

वीर शहीदों की यह भूमि
प्यार दिलों में रचती है
मातृभूमि के दीवानों के
रग-रग में यह बसती है।

आरव जैन
कक्षा-दसवीं

बीते पल

समय गुजर जाने पर हमको
बीते पल याद आते हैं,
तन-मन में उल्लास जगाकर
बेचैनी कर जाते हैं।

बचपन का वह अल्हड़पन
दिल में शोर मचाता है,
मित्रों के संग खेल खेलना
सब कुछ ही याद आता है।

दिन की उछलकूद और मस्ती
फिर एक बार बुलाती है,
बीते गए जो बचपन में पल
उनकी फिर याद आती है।

हृदयांश गोयल
कक्षा-सातवीं

इस कश्मकश का नाम है ज़िंदगी

कसक हुई कुछ दिल में
आँख में हुई नमी
पूछ उठा हर अश्क मेरा
क्या इसी कश्मकश का नाम है ज़िंदगी ?

कुछ पंख फैलाती
कुछ जुनून में थरथराती
कहीं गिरती, कहीं संभलती
कुछ हिचकिचाती
कभी दबे पाँव आती
क्या इसी कश्मकश का नाम है ज़िंदगी ?

हर ज़र्रे में तू है
हवा के रुख़ में तू है
खुली आँखें तो,
खुले आसमान में तू है

हर साये, हर रास्ते
हर मक़ाम में तू है
हल्की-सी जो हुई आहट
तो भी तेरी ही गूँज
कैसी है यह कश्मकश
क्या इसी कश्मकश का नाम है ज़िंदगी ?
कभी कहीं तू सरल पहेली
कभी कहीं तू जवाब अनोखा
कभी कहीं तू अनसही उलझन
कभी कहीं तू प्यार का धोखा
कभी कहीं तू बहती जाती
कभी कहीं तू रुकी जवानी
क्या इसी कश्मकश का नाम है ज़िंदगी।
कुछ रिश्ते गहरे, कुछ हाथ छूटे
कुछ महकी आस, कुछ ख़्वाब टूटे
कुछ पाने की चाह कभी
कभी एक आरजू बिखरी
कभी मुकम्मिल जहां
कभी यह खालिश कहीं
कभी कहीं गुमराही, गुमनामी
कभी कहीं रुकती, थमती
जैसी भी है मेरी या तेरी
पर यही है वह कश्मकश
जिसका नाम है ज़िंदगी।

डॉ. पूजा जैन बैंजामिन
अध्यापिका अंग्रेजी विभाग

गांधी

एक महात्मा पहनके चश्मा
लेकर लाठी हाथ
गात में धोती, हाथ में लाठी
लिए सत्य का साथ।

मानवता के साथ अहिंसा
करता सदा प्रयोग
पाठ सिखाता गीता का वह
कर्म-वचन का योग।

देख देश की हालत उसने
छोड़ दिया सुख धाम
मानवता की रक्षा के हित
किए सदा सब काम।

ऊँच-नीच के भेदभाव को
उसने दूर भगाया
अपने अथक प्रयत्नों से
बदली देश की काया।

अंग्रेजों के मन में उसने
सत्य का खौफ़ जगाया
देश हुआ आज़ाद हमारा
वह राष्ट्रपिता कहलाया।

हमराज सिंह जस्सल
कक्षा-ग्यारहवीं

माँ

माँ ने हमको जन्म दिया
उसने सारा कष्ट सहा
चलना उसने सिखलाया
सदा प्यार ही दिखलाया।

घर पर हमें पढ़ाती है
खाना गरम खिलाती है
अच्छी बात बताती है
पढ़ना हमें सिखाती है।

बच्चों के संग रहती है
सब दुःख खुद ही सहती है
चैन नींद की देती है
हम सबसे कम सोती है

दुनिया की परवाह नहीं
माँ जैसी कोई छाँह नहीं

ईश्वर का वरदान है माँ
हम बच्चों की जान है माँ।

हिमांशु गोयनका
कक्षा-सातवीं

सच्चा देशभक्त

देश की खातिर जान लुटाना
शत्रु के दल पर चढ़ जाना
भारत माँ की लाज बचाना
यह है देशभक्त का काम।

सीमाओं पर हर पल डटना
अपने कदम न पीछे रखना
चुनौतियों से हरदम लड़ना
यह है देशभक्त का काम।

भूकंप हो या सूखा आए
नदियाँ बाँध तोड़ उफनाएँ
पीड़ित की जो मदद को आए
यह है देशभक्त का काम।

काश्वी अग्रवाल
कक्षा-सातवीं

सच्चा दोस्त

सच्चा दोस्त वही है
जो मुश्किल में साथ दे
गलत राह में जाने पर
हमको कसकर डाँट दे।

साथ हमारा कभी न छोड़े
हमसे मुख वह कभी न मोड़े
राह में जितने आएँ रोड़े
उनकी दिशा तुरंत वह मोड़े।
साथ हमेशा सच का पकड़े
हाथ कभी न मेरा झटके
अंधेरा हो अगर राह में
वह मेरी बाती बन जाए।

निशांता बोरा
कक्षा-पाचवीं

मेरा भारत देश महान

मेरा भारत बहुत महान
विश्व में अलग है इसकी शान
सुबह-सुबह चिड़ियों का डेरा
हर दिल में ईश्वर का बसेरा
सुबह उठे मस्ज़िद से अजान
मेरा भारत बहुत महान।

इसकी नदियाँ कल-कल बहतीं
खेतों में हरियाली भरतीं
कोयल मीठे गीत सुनाती
सब लोगों का मन बहलाती
मंदिर में घण्टों का नाद
मेरा भारत बहुत महान।

सिद्धी पाठक
कक्षा-सातवीं

हमारा प्यारा हिंदुस्तान

विश्व में है इसकी पहचान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान
यहाँ सब धर्मों का सम्मान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।

हिमालय पर्वत सबसे महान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान
यहाँ की नदियाँ हमारी जान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।

यहाँ सब रत्नों की है खान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान
यहाँ वृक्षों में बसें भगवान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।

यहाँ सब पहने विविध परिधान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान
हमें इस धरती पर अभिमान
हमारा प्यारा हिंदुस्तान।

सौम्या अग्रवाल
कक्षा- आठवीं

हौंसला

दिल में हमेशा एक प्रश्न होता है
आखिर सफलता कब आएगी ?
कोशिशों के बाद भी
मेहनत के साथ भी
यह भय बना रहता है।

समय तेजी से दौड़ता है
आशा की किरण चमकती है
जोश छलकता है, लेकिन
समय हमेशा किसका साथ देता है
यह भय बना रहता है।

दिल की धड़कने बढ़ती हैं
साँसें तेजी से चढ़ती हैं
जीत की आरजू जगती है
कहीं हम पिछड़ न जाएं
यह भय बना रहता है।

हौंसले बनते हैं
अरमान पनपते हैं
दूरियाँ घटती हैं
तभी अचानक मन में
तूफ़ान आने का
बात बिगड़ जाने का
यह भय बना रहता है।

कृष अग्रवाल
कक्षा- ग्यारहवीं

मेरा देश

हरियाली से भरी धरा पर
फूलों का श्रृंगार है
रंग-बिरंगी तितली इसके
सुंदर से परिधान हैं।

नदियों की बहती धारा से
मुखरित सुंदर तान है
सूरज की किरणों से जगमग
सुंदर सकल वितान है।

ऊँचे शिखर हिमालय के
देते औषधि का दान हैं
केसर की सुंदर क्यारी सब
काश्मीर की शान हैं।

सागर चरण पखारे इसके
रत्नों की यह खान है
सकल विश्व के सब देशों में
मेरा देश महान है।

सिकुनप्रिया गोस्वामी
कक्षा- ग्यारहवीं

मोबाइल और रिश्ते

भीड़ से भरी दुनियाँ में
हमारे पास समय कहाँ,
नज़र घुमाओ जिस तरफ
सब लगते हैं व्यस्त यहाँ।

मोबाइल की दुनिया में
सभी जन डूब रहे हैं,
अपनों के पास बैठे हुए
लेकिन फोन में डूब रहे हैं।

भाई-बहन और माता-पिता से
हम बहुत दूर हो गए हैं,
फोन के काल्पनिक जगत में
हम सब खो गए हैं।

जितने पास नहीं रिश्ते
उससे ज्यादा ऐप हैं,
मोबाइल में डूब चुके सब
अब रिश्तों में गैप हैं।

बसुमन लोहिया
कक्षा- दसवीं

ज़िंदगी

ज़िंदगी एक लहर की तरह
कभी उठती
तो कभी गिरती है,
ज़िंदगी एक किताब की तरह
कभी खुलती
तो कभी बंद होती है।
ज़िंदगी एक दौड़ की तरह
कभी तेज
तो कभी धीमी होती है,
ज़िंदगी एक मोड़ की तरह
कभी तीव्र
तो कभी सामान्य होती है।
ज़िंदगी खेल के मैदान की तरह
कभी जीतती
तो कभी यहाँ हार होती है,
ज़िंदगी एक परछाई की तरह
कभी लम्बी
तो कभी छोटी होती है।
ज़िंदगी एक उलझन की तरह
कभी सुलझी
तो कभी अनसुलझी रहती है,
ज़िंदगी एक पैग़ाम की तरह
कभी खुशी
तो कभी बेहद ग़म देती है।

उत्कर्ष अग्रवाल
कक्षा- दसवीं

क्यों डर लगता है मुझे ?

लोगों की भूखी निगाहों से
अतृप्त मन की आहों से
अकेली सूनसान राहों से
क्यों डर लगता है मुझे ?

मैं भी तो एक इंसान हूँ
सरलता की पहचान हूँ
फिर भी अकेली होने पर
क्यों डर लगता है मुझे ?

जैसी भी हूँ,अनमोल हूँ
खुद में बहुत ही मौन हूँ
अपने विचार बताने में
क्यों डर लगता है मुझे ?

ऐसा रूप दिया उस रब ने
इसको क्यों कोसा है सबने

लोगों की सोच से लड़ने में
क्यों डर लगता है मुझे ?

सृष्टि बजाज
कक्षा - आठवीं

भारत माता का मंदिर

भारत माता के मंदिर में
फिर न कोई दुश्मन आ पाए,
जान भले ही जाए मगर
कश्मीर न यह जाने पाए।

माँ कह दे आज सुपुत्रों को
कश्मीर जगाता है तुमको,
जागो राणा, जागो भामा
कश्मीर बुलाता है तुमको।

काली थी रात अमावस की
जब आर्यावर्त ही दहल गया,
रो पड़ा बिलखकर ननकाना
तक्षशिला पाक में समा गया।

कट गईं भुजाएं जननी की
बन गया पाक और भारत देश,
असंख्य शहीद हो चले गए
बँट गया अपना प्यारा स्वदेश।

रक्षा कर लो डल झेलम की
बिखरा न सकें अरि अंगारे,
जान भले ही जाए मगर
कश्मीर नहीं जाने पाए।

अनिल कुमार यादव
हिंदी अध्यापक

मेरी माँ

जब मैं हँसता, वह भी हँसती
मुझे कभी न रोने देती
कोई भी पीड़ा आने पर
मेरे सारे दुःख हर लेती।

मुझे खिलाकर तब खुद खाती
कभी-कभी भूखी रह जाती
मुझे सुलाती सूखे बिस्तर पर
वह खुद गीले पर सो जाती।

मुझे कभी चोट लगने पर
उसने सारा दर्द उठाया
मैं दुनिया में खुशनसीब हूँ
मेरे ऊपर है माँ का साया।

दुनिया सारी क्षणभंगुर है
न जाने कब क्या हो जाए
माँ की ममता है जिसके संग
उसे कष्ट कभी छू न पाए।

दुनिया भर की सुख-सुविधाएँ
छोड़ हमेशा माँ को चुनना
माँ से हारे सभी देवगण
माँ की हमेशा पूजा करना।

आर्यन खाटूवाला
कक्षा - ग्यारहवीं

माँ और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर होती हैं।

पेड़ हमारे सच्चे साथी

पेड़ हमारे सच्चे साथी
हरदम साथ निभाते हैं
फल और फूल हमें देकर
सारा जग महकाते हैं।

जहाँ कहीं भी धूप निकलती
छाया हमें दिलाते हैं
औषधियाँ देकर हम सबको
जीवन स्वस्थ बनाते हैं।

लगती जब भी भूख किसी को
ताज़े फल तुरत खिलाते हैं
वर्षा लाकर तप्त धरा की
तुरत ही प्यास बुझाते हैं।

निहाल जजोडिया
कक्षा - सातवीं

भारत देश है सबसे प्यारा

भारत देश है सबसे प्यारा
आओ इसे सजाएँ हम,
ये है अपनी धरती माता
इसको शीश नवाएँ हम।

तिलक, बोस, आज़ाद है जन्में
इस भारत की भूमि पर,
आओ गर्व करें हम अपने
देश के वीर जवानों पर।

भारत की धरती पर रहते
हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,
आपस के भाईचारे से
दुनिया में तारीफ़ है पाई।

यह संस्कृति का देश है यारों
इस धरती पर स्वर्ग है यारों,
इसका तिरंगा सबसे प्यारा
भारत अपना देश है न्यारा।

अनन्या यादव
कक्षा - चौथी

मैंने देखा है

दुनिया बदल गई है
यह सबको कहते देखा है
पर मैं यह कैसे कह दूँ
जब बहुत देखना बाकी है
मैंने देखा इस दुनिया को
अक्सर रंग बदलती है
कहती है कुछ किसी एक से
दूजे से कुछ कहती है।

किस्मत को रोते देखा है
मैंने बहुत से लोगों को
कर्म के पथ से हटते देखा
मैंने कुछ इंसानों को
ईमानदार का जीना मुश्किल
मौज कर रहे झूठे हैं
अपनी धुन में लगे हुए बस
परहित में सब रीते हैं।

दुष्कर्मों की ख़बरें सुनकर
गुस्सा मन में आता है
जालिम को क्यों सज़ा में देरी
सोच के मन घबराता है
घुट-घुट कर मरते देखा है
मेहनत करने वालों को
मौज तरक्की करते देखा
साहब जी के प्यादों को।

अंशु कुमारी
कक्षा - ग्यारहवीं

दीवारें बनीं घर

हम सबका एक ही घर होता है- वह घर जहाँ हमारा बचपन गुज़रा, जहाँ हमारे माँ-बाप रहते हैं और जहाँ हमने सारे सुख दुख देखे और जीवन के सभी पलों को जिया। पर..... आज मेरे पास एक नहीं दो घर हैं। एक मेरा अपना घर और एक मेरा स्कूल – दि असम वैली स्कूल। जब मैं अपने पहले दिन को याद करती हूँ तो मुझे यकीन नहीं आता कि कैसे कुछ ही सालों में मुझे एक अंजान जगह से इतना लगाव हो गया कि मन करता है कि पूरी ज़िंदगी ही यहाँ गुजार दूँ। लेकिन जीवन चलते रहने का नाम है।

आज पाँच सालों बाद जब मैं स्कूल में अपने पहले दिन को याद करती हूँ तो मुझे एक अलग सा एहसास होता है। मैं यहाँ कक्षा आठ में दाखिले के लिए 2015 में आयी थी। जब मेरी माँ ने मुझसे पूछा कि क्या तुम्हें असम वैली स्कूल में पढ़ना है, तब मैंने बड़ी खुशी से वहाँ पढ़ने का मन बना लिया था और जब मैं प्रवेश परीक्षा देने आई तो स्कूल देखकर मेरे पैरों तले ज़मीन ही खिसक गयी। मैंने इतना बड़ा स्कूल पहले कभी नहीं देखा था। स्कूल परिसर देखने के लिए जब मुझे एक जगह से दूसरी जगह ले जाया गया तो मुझे लगा कि मैं किसी भूल भुलैया में आ गयी हूँ। स्कूल देखते देखते मेरे पैरों में दर्द सा होने लगा था। इतना बड़ा स्कूल भी होता है मुझे तब समझ में आया। वहाँ का मौसम बहुत खुशनुमा था। सब कुछ सोच विचारकर मैंने अपना मन बना लिया था कि मुझे यहीं पर पढ़ना हैं। प्रवेश परीक्षा के चार दिनों के बाद अपना परिणाम देखकर मेरी यह कामना पूरी हो गयी और मेरा दाखिला दि असम वैली स्कूल में हो गया। मैंने खुशी खुशी स्कूल जाने की तैयारी की और आखिर वह दिन आ ही गया जब मुझे अपना घर छोड़कर जाना पड़ा।

घर छोड़ते समय मुझे थोड़ा दुख तो हुआ कि क्या पता वहाँ घर जैसा माहौल मिलेगा या नहीं पर अपने सपनों को पूरा करने के लिए एक दिन सबको अपना घर छोड़ना ही पड़ता है, इसलिए थोड़ी देर बाद ही मेरा यह दुख दूर हो गया क्योंकि अब मुझे अपने जीवन के सपनों को भी साकार करना था। 10 घंटे की थकान भरी यात्रा के बाद जब मैं स्कूल पहुँची तब मुझे कोपिली सदन ले जाया गया। जब मेरा सामान मेरे कमरे में रखवा कर मेरे माता-पिता वहाँ से जाने की तैयारी करने लगे तब उस पल मुझे अंदर से बहुत ही दुख हुआ और मैं रो पड़ी। मुझे रोता देखकर मेरे माता- पिता भी अपने आँसू न रोक पाये। उनके जाने के बाद हॉस्टल की लड़कियों ने मुझे संभाला और मुझे यहाँ के बारे में बताने लगीं। धीरे धीरे सब मेरी अच्छी दोस्त बन गईं और मुझे अपनेपन का एहसास होने लगा।

मेरे हॉस्टल की दीवारों ने कब घर का रूप ले लिए मुझे पता ही नहीं चला। मैं यहाँ के परिवेश में पूरी तरह से ढल गयी। आज मैं यहाँ बहुत खुश हूँ और मुझे पता है कि कुछ महीनों बाद ही मेरी पढ़ाई पूरी हो जाएगी और मुझे यहाँ से जाना होगा। शायद यहाँ से जाने पर मेरी आँखों में उतने ही आँसू होंगे जितने यहाँ आने के समय मेरी आँखों में थे। ज़िंदगी के ये चार साल मेरे जीवन में हमेशा अविस्मरणीय रहेंगे।

शगुन अग्रवाल
कक्षा – ग्यारहवीं

गांधी : एक आदर्श

भारत के राष्ट्रपिता कहलाने वाले गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। बचपन में वे आम बालकों के समान शरारती और असहज क्रियाकलाप करने वाले थे। धीरे-धीरे वे जैसे-जैसे बड़े होते गए वैसे-वैसे उनमें अकल्पनीय परिवर्तन होते चले गए। उनके आचरण और व्यवहार में आए सकारात्मक परिवर्तनों ने उन्हें एक आम आदमी से आदर्श व्यक्ति बनने का मार्ग प्रशस्त किया। गांधी जी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा भारत में और उच्च शिक्षा विदेश से अर्जित की। जब वे उच्च शिक्षा के लिए विदेश गए तो उनके मन में एक व्यावसायिक रूप से सफल व्यक्ति बनने की इच्छा थी लेकिन जब वे विदेश से वापस लौटे तो उनका लक्ष्य परिवर्तित हो चुका था।

गांधी जी ने न केवल भारत की आज़ादी में अपना अविस्मरणीय योगदान दिया वरन् विश्व-पटल पर होने वाले अन्याय के खिलाफ़ भी अपनी आवाज़ बुलंद की। दक्षिण अफ्रीका में काले-गोरे के बीच होने वाले भेदभावपूर्ण रवैये के खिलाफ भी गांधी जी ने आंदोलन चलाया और जिसमें उन्हें जीत हासिल हुई। भारत को गुलामी की जंजीरों से आज़ाद कराने के लिए उन्होंने भारत के जनमानस को एक ध्वज के नीचे एकत्रित किया। लोगों को साथ लेकर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ भी आंदोलन खड़े किए। भारत में फैली हुई जाति-पाँति की खाई को पाटने के लिए भी गांधी जी अनेक प्रयास किए। गांधी जी के अथक प्रयासों के कारण ही भारत में जन-जागरण हुआ। भारत के लोग उनको पिता के समान मानकर उनका आदर किया करते थे। गांधी जी ने भारत के लोगों को यह भी सिखाया कि दमन के खिलाफ आवाज़ उठाने से ही दमन का अंत किया जा सकता है लेकिन हमें कभी भी हिंसा का सहारा नहीं लेना चाहिए क्योंकि हिंसा से हिंसा पर विजय नहीं प्राप्त की जा सकती।

भारत के लोगों को सत्य और अहिंसा की अमोघ शक्ति गांधी जी ने ही प्रदान की। सत्याग्रह और असहयोग जैसे बड़े-बड़े आंदोलनों को खड़ाकर गांधी जी ने यह दिखा दिया कि अहिंसा में कितनी बड़ी शक्ति होती है। गांधी जी का सबसे बड़ा सिद्धांत था कि बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो और बुरा मत बोलो। गांधी जी ने जीवन पर्यन्त अपने बनाए सिद्धांतों का पालन कर लोगों के समक्ष एक आदर्श आचरण प्रस्तुत किया। आज सभी भारतवासी गांधी जी को राष्ट्रपिता के रूप में याद करते हैं। आज हमारे देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी गांधी के विचारों को सराहा जाता है। वे केवल हमारे ही पूज्य नहीं हैं बल्कि सारा विश्व गांधी को एक महामानव मानकर उनके सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास करता है।

गांधी विद्यार्थियों के लिए भी प्रेरणा-स्रोत हैं। आज हम गांधी को एक व्यक्ति न मानकर एक विचार मानते हैं। गांधी जी समय को बहुत ही मूल्यवान मानते थे और यही कारण था कि वे हमेशा अपनी कमर में घड़ी को लटकाकर रखते थे। गांधी जी को समय व्यर्थ करना बिल्कुल पसंद नहीं था। यदि विद्यार्थी गांधी जी के विचारों में से समय-पालन और सादगी के विचारों को अपना ले तो सहजता से सफलता मिल सकती है।

कृतार्था कौशिक
कक्षा – सातवीं

परिवर्तन

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। सृष्टि के कण-कण में परिवर्तन अनिवार्य रूप से दिखाई देता है। बिना परिवर्तन के संसार धीरे-धीरे नीरस

हो जाएगा। परिवर्तन से ही जीवंतता बनी रहती है। यदि हम एक से स्वरूप का अवलोकन करते रहें तो निश्चित ही उससे मन में बोझिलता का भाव आने लगता है। प्रकृति भी समयानुसार अपने अंदर परिवर्तन लाकर लोगों को आकर्षित करती रहती है। लोगों की आदत एवं प्रकृति भी परिवर्तनीय है। वह कभी किसी के प्रति अच्छा हो जाता है तो कभी किसी के प्रति बुरे व्यवहार का प्रदर्शन करने लगता है। मानव जाति भी परिवर्तन के सूत्र में बँधी हुई है। यदि भोजन भी मनुष्य को एक जैसा मिलता रहे तो एक ऐसा समय अवश्य आएगा जब वह उससे ऊब जाता है। यही कारण है कि हम बदलाव के साथ रहना बेहतर मानते हैं।

आज हम देश की परिस्थिति की समीक्षा करें तो हम पाएंगे कि समाज में अराजकता और असहिष्णुता का मुख्य कारण मानवीय व्यवहार ही है। यदि यह मानवीय व्यवहार समाज के प्रति अपेक्षित नहीं होता है तो समाज में विसंगतियाँ पैदा होती हैं और इन्हीं विसंगतियों के कारण सामाजिक द्वेष की भावना का जन्म होता है। यदि हम विश्व-पटल की चर्चा करें तो हम देखते हैं कि सामाजिक स्थिरता और तटस्थता ने ही क्रांतिकारी परिवर्तन को जन्म दिया है। भारत देश के परिपेक्ष्य में यह देखें तो हम पाएंगे कि कभी भारत सोने की चिड़िया कहलाता था लेकिन आज वह आर्थिक मंदी से जूझता हुआ राष्ट्र है जिसके पास न जाने अशिक्षा, भुखमरी और बेरोजगारी समेत कितनी समस्याएँ हैं। आने वाले समय में इनका भी कोई न कोई हल निकलेगा और यह राष्ट्र पुनः उसकी अपनी सुनहरी पहचान को हासिल करेगा। मेरा मानना है कि सामाजिक सोच ही परिवर्तन का प्रथम चरण है।

आज का समय जनजागरण का समय है। लोगों की सोच तेजी से बदल रही है और यह बदलती हुई सोच ही मानव को परिवर्तन की ओर ले जाकर एक नवीन राष्ट्र को जन्म देगी। संसार में कुछ भी स्थिर नहीं है। अस्थिर संसार में किसी भी चीज़ को स्थिर रखना किसी चुनौती से कम नहीं है। आज धीरे-धीरे विश्व में मीडिया का प्रभाव बढ़ रहा है जिसके परिणामस्वरूप जागरूकता का संचार दिखाई देता है। यही जागरूकता परिवर्तन का प्रथम कारक बनती है। जलवायु परिवर्तन भी लोगों की सोच एवं अन्य गतिविधियों में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी है। एक छोटे से उदाहरण के द्वारा मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि परिवर्तन तब होता है जब हमें या तो बहुत ही अच्छे परिणाम मिल रहे हों या परिणाम हमारे लिए नुकसानदायक साबित हो रहे हों।

आज समाज में नवीन चेतना का भाव जन्म ले रहा है। यही कारण है कि पॉलीथीन की लम्बी समय तक गुलामी में रहने के बाद आज लोगों को इसके होने वाले दुष्परिणामों से डर लगने लगा है। इससे भयभयीत होकर आज एक विश्वव्यापी सहमति उभरकर आ रही है कि पॉलीथीन के प्रयोग को प्रतिबंधित करना होगा जिससे मानव एवं जीव जाति के हितों की रक्षा की जा सके। इसी प्रकार जल संकट का कारण भी मनुष्य ही है और इस संकट की भयावह स्थिति को देखकर आज हम जल संकट से उबरने के लिए अधिक पेड़ लगाने और पर्यावरण को सुंदर बनाने के बारे में सोचना शुरू कर रहे हैं। अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि संकट के भय से ही परिवर्तन जन्म लेता है।

नीरज शर्मा

कक्षा – दसवीं

आर्टिकल 370

एक दिन अचानक कश्मीर में फ़ौज की सरगर्मी तेज हो गई। अचानक कश्मीर में फ़ौजियों की संख्या बढ़ने के कारण कश्मीर के राजनैतिक गलियारों में चर्चा होने लगी कि कश्मीर में कुछ बड़ा होने वाला है। यह सभी घटनाएँ इतनी गोपनीय तरीके से हो रही थीं कि किसी को कुछ सोचने समझने का समय ही नहीं मिला। सड़कों, गलियारों और टी. वी. पर आने वाली बहसों में यह चर्चा तो अवश्य थी कि कुछ तो अवश्य होने वाला है लेकिन यह किसी को अंदाजा नहीं था कि क्या होने वाला है ? कुछ दिनों बाद एक

दिन अचानक यह खबर सामने आयी कि भारत सरकार ने कश्मीर से धारा 370 और 35 ए. समाप्त कर दिया है। इस सूचना के बाहर आते ही राजनेताओं ने अपनी बयानवाजी शुरू कर दीं लेकिन उसका जनमानस पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ रहा था। कश्मीर और कश्मीरियों की सुरक्षा के लिए बड़ी मात्रा में सैनिक बल की तैनाती हो चुकी थी और विघटनकारी बयान देने वाले नेताओं के ऊपर सख्ती कर दी गई जिससे वे किसी प्रकार की अराजकता न फैला सकें। इतनी बड़ी प्रतिक्रिया देखकर मन में यह प्रश्न आना स्वाभाविक था कि यह धारा क्या है और इसके अस्तित्व को लेकर लोग इतनी प्रतिक्रियाएँ क्यों दे रहे हैं मैंने धारा 370 के अब तक के अस्तित्व के विषय में जानने के लिए संबंधित दस्तावेजों को खोजने का प्रयास शुरू किया। मुझे पता चला कि भारत की आज़ादी के बाद कुछ राजा आज़ाद हिंदुस्तान के साथ स्वेच्छा से जुड़ गए और कुछ राजा अपनी कुछ शर्तों के साथ भारतीय गणराज्य में आ मिले। दक्षिण भारत के राजाओं को भारत के साथ जोड़ने का काम सरदार बल्लभ भाई पटेल ने शुरू किया और उन्होंने इस काम में सफलता भी प्राप्त की। लेकिन कश्मीर के राजा हरिसिंह ने भारत के साथ जुड़ने की इच्छा नहीं जाहिर की। हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने उनको भारत में मिलाने के लिए अनेक प्रयास किए।

कुछ नाटकीय घटनाक्रम चलने के बाद सभी लोग उचित समय आने का इंतज़ार करने लगे। पाकिस्तान ने कश्मीर को अपने देश में मिलाने के लिए कबाइलियों का एक बड़ा दशता कश्मीर भेजा। जब राजा हरिसिंह को यह जानकारी मिली तो वे घबरा गए और उन्हें समझ में आ गया कि बिना भारत में विलय के कश्मीर का अपना कोई अस्तित्व नहीं बचेगा। यह विचार कर उन्होंने भारत के साथ कश्मीर के विलय का प्रस्ताव रखकर भारत सरकार से सुरक्षा की माँग की। भारतीय सेना कश्मीर की रक्षा के लिए वहाँ पहुँची और उसने कबाइलियों को कश्मीर से खदेड़ने का काम शुरू कर दिया। कश्मीर के काफी बड़े भूभाग से कबाइलियो को पीछे तो धकेल दिया गया लेकिन पाकिस्तान ने अपनी नापाक हरकत से कश्मीर एक बड़ा हिस्सा अपने कब्जे में लिया और अपना दावा ठोक दिया।

कश्मीर के भारत में विलय के समय उस राज्य को कुछ अतिरिक्त सुविधाएँ देने के विचार से अस्थायी रूप से धारा 370 और आर्टिकल 35 ए. को अस्तित्व में लाया गया। यह धारा इसलिए रखी गई जिससे वहाँ के लोग धीरे-धीरे अपने देश के साथ घुलमिल जाएं और वहाँ की सांस्कृतिक विरासत को देश के साथ साझा कर सकें। विघटनकारी शक्तियों के बहकावे में आकर लोग अस्थायी व्यवस्था को संविधान से ऊपर मानकर कश्मीर की जनता को भड़काने का काम करने लगे। इस धारा के अस्तित्व में होने के कारण कश्मीर अनेक आतंकी गतिविधियों का शिकार रहा और वहाँ की जनता भारत की मुख्य धारा से कटकर रहने लगी जिसके कारण इस धारा को हटाना आवश्यक हो गया था। धारा 370 हटने के बाद ही कश्मीर का सर्वांगीण विकास संभव था। राजनैतिक इच्छाशक्ति के बलवती होने के परिणामस्वरूप इसे समाप्त कर एक देश एक विधान एक संविधान के सपने को साकार किया गया। अब ऐसा लगता है कि कश्मीर भारत के अन्य राज्यों की तरह तेजी से अपना विकास करेगा। भारत में चलने वाली सभी जनकल्याणकारी योजनाओं का सीधा लाभ वहाँ की जनता को मिल सकेगा। हमें खुशी है कि अब हमारा देश कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक ही संविधान रखता है। इससे हमारा देश और मजबूत होगा।

आरव जैन

कक्षा – दसवीं

पाइका विद्रोह

भारत को आज़ाद हुए एक लम्बा समय व्यतीत हो चुका है। लेकिन आज भी हम इतिहास के पन्नों को खंगालकर भारतीय स्वाधीनता संग्राम के तथ्यों को एकजुट करने का प्रयास कर रहे हैं। भारतीय इतिहास में 1857 को प्रथम स्वाधीनता संग्राम माना जाता है, अब सरकार उस इतिहास में बदलाव करने पर

विचार कर रही है। 1857 की क्रांति से पहले हुए 1817 के पाइका विद्रोह को पहला संग्राम मानने की सिफ़ारिश केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री श्रीमान प्रकाश जावडेकर ने की है।

1817 में ओडिशा में हुए पाइका विद्रोह ने पूर्वी भारत में कुछ समय के लिए ब्रिटिश राज की जड़े हिला दी थीं। मूल रूप से पाइका ओडिशा के उन गजपति शासकों के किसानों का असंगठित सैन्य दल था, जो युद्ध के समय राजा को सैन्य सेवाएं मुहैया कराते थे और शांतिकाल में खेती करते थे। इन लोगों ने 1817 में बक्शी जगबंधु विद्याधर के नेतृत्व में ब्रिटिश राज के विरुद्ध बगावत का झंडा उठा लिया था।

खुर्दा के शासक परंपरागत रूप से जगन्नाथ मंदिर के संरक्षक थे और धरती पर उनके प्रतिनिधि के तौर पर शासन करते थे। वे लोग ओडिशा के लोगों की राजनीतिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता का प्रतीक थे। ब्रिटिश राज ने ओडिशा के उत्तर में स्थित बंगाल प्रांत और दक्षिण में स्थित मद्रास प्रांत पर अधिकार करने के बाद अंग्रेजों ने 1803 में ओडिशा को भी अपने अधिकार में कर लिया था। उस समय ओडिशा के गजपति राजा मुकुंददेव द्वितीय अवयस्क थे और उनके संरक्षक जय राजगुरु द्वारा किए गए शुरुआती प्रतिरोध का अंग्रेजों द्वारा क्रूरता पूर्वक दमन किया गया और जयगुरु के शरीर के जिंदा रहते हुए ही टुकड़े कर दिए गए।

कुछ सालों के बाद गजपति राजाओं के असंगठित सैन्य दल के वंशानुगत मुखिया बक्शी जगबंधु के नेतृत्व में पाइका विद्रोहियों ने आदिवासियों और समाज के अन्य वर्गों का सहयोग लेकर बगावत कर दी। पाइका विद्रोह 1817 में आरंभ हुआ और बहुत ही तेजी से फैल गया। हालांकि ब्रिटिश राज के विरुद्ध विद्रोह में पाइका लोगों ने अहम भूमिका निभाई थी, लेकिन किसी भी मायने में यह विद्रोह एक वर्ग विशेष के लोगों के छोटे समूह का विद्रोह भर नहीं था।

घुमसुर जो कि वर्तमान में गंजम और कंधमाल जिले का हिस्सा है, वहाँ के आदिवासियों और अन्य वर्गों ने इस विद्रोह में सक्रिय भूमिका निभाई। वास्तव में पाइका विद्रोह के विस्तार का सही अवसर तब आया, जब घुमसुर के 400 आदिवासियों ने ब्रिटिश राज के खिलाफ बगावत करते हुए खुर्दा में प्रवेश किया। खुर्दा, जहाँ से अंग्रेज भाग गए थे, वहाँ की तरफ कूच करते हुए पाइका विद्रोहियों ने ब्रिटिश राज के प्रतीकों पर हमला करते हुए पुलिस थानों, प्रशासकीय कार्यालयों और राजकोष में आग लगा दी।

पाइका विद्रोहियों को कनिका, कुजंग, नयागढ़ और घुमसुर के राजाओं, जमींदारों, ग्राम प्रधानों और आम किसानों का समर्थन प्राप्त था। यह विद्रोह बहुत तेजी से प्रांत के अन्य इलाकों जैसे पुर्ल, पीपली और कटक में फैल गया। विद्रोह से पहले तो अंग्रेज चकित रह गए। लेकिन बाद में उन्होंने आधिपत्य बनाए रखने की कोशिश की लेकिन उन्हें पाइका विद्रोहियों के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। बाद में हुई कई लड़ाइयों में विद्रोहियों को सफलता मिली, लेकिन तीन महीनों के अंदर ही अंग्रेज अंतत: उन्हें पराजित करने में सफल रहे।

इसके बाद दमन का व्यापक दौर चला जिसमें कई लोगों को जेल में डाला गया और अपनी जान भी गँवानी पड़ी। बहुत बड़ी संख्या में लोगों को अत्याचारों का सामना करना पड़ा। कई विद्रोहियों ने 1819 तक गुरिल्ला युद्ध लड़ा, लेकिन अंत में उन्हें पकड़ कर मार दिया गया। बक्शी जगबंधु को अंतत: 1825 में गिरफ्तार कर लिया गया और कैद में रहते हुए ही सन् 1829 में उनकी मृत्यु हो गई।

हालाँकि पाइका विद्रोह को ओडिशा में बहुत ऊँचा दर्जा प्राप्त है और वहाँ के बच्चे अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ाई में वीरता की कहानियाँ पढ़ते हुए बड़े होते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से इस विद्रोह को राष्ट्रीय स्तर पर वैसा महत्व नहीं मिला जैसा कि मिलना चाहिए था। भारत सरकार ने इस विद्रोह को समुचित पहचान देने के लिये ही इस घटना की 200 वीं वर्षगांठ को उचित रूप से मनाने का निर्णय लिया है।

(संकलित)

रचित अग्रवाला
कक्षा – ग्यारहवीं

राजगुरु महापात्रा

शिवराम हरि राजगुरू महापात्रा का जन्म 24 अगस्त 1908 को पूणे जिले के खेड़ा ग्राम में हुआ था। राजगुरू भरतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान क्रांतिकारी थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजगुरू का बलिदान एक महान घटना थी। इस महान क्रांतिकारी को भगतसिंह और सुखदेव के साथ 23 मार्च 1931 को फाँसी पर लटका दिया गया था। इनके बलिदान ने भारतीय क्रांति में हलचल पैदा कर दी थी। इनके बचपन के कुछ मित्र इन्हें गुरु कहकर भी पुकारते थे।

राजगुरू बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों के धारक थे। छः वर्ष की छोटी-सी आयु में इनके पिता की मृत्यु हो गई जिसके कारण यह वाराणसी शिक्षा ग्रहण करने आ गए। राजगुरू को संस्कृत सीखने की बहुत ललक थी। राजगुरू ने हिंदुओं के अनेक पवित्र ग्रंथों के अध्ययन के साथ-साथ वेदों का भी ज्ञान प्राप्त किया। राजगुरू को लघु सिद्धांत कौमुदी जैसे क्लिष्ट ग्रंथ भी कंठस्थ थे। बचपन से ही इनको अपने स्वास्थ्य के प्रति बेहद लगाव था। वे नियमित व्यायाम करते और शरीर को फुर्तीला रखने के लिए दौड़ भी लगाते थे। भारतीय महापुरुषों में इन्हें छत्रपति शिवाजी बहुत ही प्रिय थे। इनको उनकी युद्धकला बेहद रुचिकर लगती थी।

वाराणसी में विद्याध्ययन के समय इनका संपर्क देश के अनेक क्रांतिकारियों से हुआ और उनसे प्रभावित होकर राजगुरू हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी से जुड़ गए। अनेक क्रांतिकारी इनकी पहचान को गोपनीय रखने के लिए इन्हें रघुनाथ के नाम से पुकारते थे। इनके प्रमुख क्रांतिकारी मित्रों में चंद्रशेखर आजाद, सरदार भगत सिंह और यतीन्द्रनाथ दास आदि शामिल थे। सभी क्रांतिकारियों में इनका निशाना सबसे अचूक था। इसी कारण साण्डर्स की हत्या करने की योजना में राजगुरू को शामिल किया गया। चंद्रशेखर आजाद इन तीनों क्रांतिकारियों को बेहद प्यार करते थे। इसलिए वे उनके साथ साये की तरह रहते थे।

साण्डर्स की हत्या के बाद इस क्रांतिकारी को पकड़ लिया गया और 23 मार्च 1931 को भगत सिंह और सुखदेव के साथ लाहौर के सेण्ट्रल जेल में फाँसी की सजा दे दी गई। इस महान क्रांतिकारी के बलिदान के बाद देश में आक्रोश की लहर उमड़ पड़ी और वह विद्रोह की आग इतनी भयानक हुई कि एक दिन अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। इस महान क्रांतिकारी का नाम आज भी भारत के इतिहास में आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है।

(संकलित)

मेहुल अग्रवाला

कक्षा - ग्यारहवीं

गीता : एक प्रेरणा

मानव एक विकासशील प्राणी है। विकास की इस दौड़ में मानव को आधुनिकता ने सबसे अधिक प्रभावित किया है। आधुनिकता की दौड़ में इनसान चारों ओर से इक्कीसवीं सदी के चमत्कारों से घिरकर अपनी आध्यामिकता को एक किनारे करता जा रहा है। यदि हम आज मनुष्य के जीवन का अध्ययन करें तो पाएंगे कि वह अपने जीवन का सर्वाधिक समय मोबाइल, कम्प्यूटर और गाड़ी के साथ व्यतीत करता है। इन सभी आकर्षणों से वह इतना जकड़ा हुआ है कि उसे अपने विवेक के प्रयोग करने का समय ही प्राप्त नहीं होता है। मैं मानता हूँ कि इन सभी वस्तुओं ने जीवन को सहज एवं सरल बनाकर मानवता पर बहुत बड़ा उपकार किया है लेकिन यह भी सच है कि सहजता और सरलता प्रदान करने वाले इन साधनों ने मानवीय सोच को अपने तक ही सीमित भी कर लिया है।

आधुनिक युग के युवा धीरे-धीरे जीवन के वास्तविक अर्थ से दूर होते चले जा रहे हैं। आज उनका ध्येय केवल आत्मकेंद्रित होकर रह गया है। आधुनिक संसाधनों के प्रयोग ने हमें विकास की ऊँचाइयों तक तो पहुँचा दिया है लेकिन भावनात्मक रूप से काफी कमजोर भी कर दिया है। यही कारण है कि विकास

की इस अंधी दौड़ में यदि कोई युवा स्वयं को बनाए रखने में असफल महसूस करता है तो वह जीवन त्यागने जैसे कठोर कदम भी उठाने से पीछे नहीं रहता। विकास की प्रतिस्पर्धा में लगे हुए माता-पिता भी अपने बच्चों को समुचित समय नहीं दे पाते जिसके कारण बच्चों का उनके प्रति लगाव धीरे-धीरे कम होता जा रहा है।

भारत हमेशा से ही आध्यात्म का केंद्रबिन्दु रहा है। इसने सारे संसार को सत्य की झलक दिखाई है। दुनिया का मार्गदर्शन करने वाला देश आज स्वयं भटकाव की स्थिति से गुजर रहा है। आज हमारे देश के युवाओं को उसी आध्यात्मिक संबल की आवश्यकता है जो उनका सही मार्गदर्शन कर सके। भारतीय दर्शन के क्षेत्र में गीता हमारी सच्ची मार्गदर्शक हो सकती है जो मानव मात्र को कल्याण और शांति का मार्ग बताती है। आज आवश्यकता है कि हम अपने ही देश के इस महान ग्रंथ को पढ़कर अपना आध्यात्मिक विकास करें। यह पुस्तक वह शक्ति रखती है जो समस्त युवाओं को इस संक्राति काल में भी उचित दिशा बोध करा सकती है।

मेरी नज़र में गीता एक धार्मिक ग्रंथ न होकर एक आध्यात्मिक क्रांति पैदा करने वाला ग्रंथ है। जो लोग इसे किसी धर्म के चश्मे से देखने का प्रयास करते हैं, वे वास्तव में देश के भोले भाले लोगों को गुमराह करने का काम कर रहे हैं। वे नहीं चाहते कि देश के लोग सच्चाई को जानकर उसको अपने जीवन में उतारें और समर्थ बन सकें। गीता में दिए हुए मेरे एक प्रिय श्लोक में कहा गया है कि क्रोध के कारण स्मृति का नाश होता है, जिसके कारण बुद्धि का नाश हो जाता है और अंत में माया के वशीभूत होने के कारण स्वयं का नाश हो जाता है। इससे हमें यह पता चलता है कि गीता हमें मानवता और भलाई की ही सीख देती है।

अंत में मैं यही कहना चाहता हूँ कि मेरे लिए गीता एक धर्मग्रंथ ने होकर एक मार्गदर्शक है जो सदैव ही मुश्किल समय में मेरा सही मार्गदर्शन करती है। गीता में भी यही लिखा गया है कि जब-जब धरती पर अधर्म और अन्याय का बोलबाला होता है, तभी ईश्वर अवतार लेते हैं और धर्म की रक्षा करते हैं तथा अधर्मियों का विनाश करते हैं। यदि हम किसी भी ग्रंथ का अध्ययन करें और वह मानव और मानवता को सही दिशा की ओर ले जाए, वहीं सदग्रंथ कहलाने योग्य है। मेरी नज़र में गीता इस युग के लिए सर्वाधिक उपयुक्त पुस्तक है जो जनमानस को कर्म के प्रति उन्मुख कर कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

निलय धकाल
कक्षा – ग्यारहवीं

असली विजेता

एक गाँव में मोहन नाम का एक लड़का रहता था। उसके पिताजी एक मामूली किसान थे। एक दिन मोहन के पिताजी ने उसे अपने साथ शहर लेकर गए। वहाँ उन्हें मैदान साफ करने का काम मिला था। उस मैदान में दौड़ प्रतियोगिता आयोजित होनी थी। मोहन उस मैदान को देखकर बहुत खुश हुआ। उसके मन में भी मैदान में दौड़ की तीव्र इच्छा हुई।

जब पिता और पुत्र दोनों अपने गाँव पहुँचे तो मोहन ने अपने पिताजी से ज़िद करते हुए कहा कि पिताजी हमारे गाँव में ऐसी दौड़ की प्रतियोगिता होनी चाहिए। मोहन की ज़िद मानकर पिताजी ने गाँव के प्रधान के सामने यह प्रस्ताव रखा। ग्राम प्रधान ने खुश होकर उस प्रस्ताव को अपनी सहमति दे दी। कुछ दिनों में प्रतियोगिता की तैयारियाँ शुरू हो गईं। गाँव के आस-पास के बच्चे उस दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए अभ्यास करने लगे। मोहन के दादाजी ने इन तैयारियों को देखा। मोहन के मन में उत्साह के साथ-साथ अहंकार का भाव भी आ चुका था कि वह सबसे तेज धावक है और इस प्रतियोगिता में वह ही जीतेगा। दादा जी मोहन के इस अहंकार से बहुत दुःखी थे।

अगले दिन प्रतियोगिता शुरू हुई और मोहन की मेहनत रंग लाई। वह इस प्रतियोगिता का विजेता बन गया। दादाजी ने अगले ही दिन एक और प्रतियोगिता का आयोजन किया और कहा कि मोहन तुम विजेता

हो और इस प्रतियोगिता में तुम्हें अवश्य दौड़ना होगा। मैदान में केवल तीन ही प्रतियोगी खड़े थे। जैसे ही सीटी बजी मोहन तेजी से लक्ष्य की ओर दौड़ा लेकिन उसे आसपास कोई नज़र न आया। वह पीछे पलटा तो देखा कि दोनों प्रतियोगी इधर-उधर भटक रहे हैं। मोहन तुरंत पीछे लौटा और देखा उनमें से एक अंधा है और दूसरा एक पैर से विकलांग। मोहन को यह देखकर उन पर दया आ गई। वह रास्ते से वापस लौट पड़ा। वह तेजी से उनके पास गया और दोनों का हाथ पकड़कर लक्ष्य की ओर ले चला। थोड़ी ही देर में उन दोनों को आगे करके मोहन ने यह जीत उन दोनों प्रतियोगियों के नाम के कर दी।

मोहन के दादाजी यह सब देख रहे थे। उन्हें मोहन का यह व्यवहार देखकर बहुत खुशी हुई। वे अपने स्थान से दौड़कर मोहन के पास पहुँचे और उसे गले से लगा लिया। मोहन के दादाजी ने कहा कि आज सही अर्थों में तुम असली विजेता बने हो।

अर्चित रूथिया
कक्षा – नवमीं

मैं जीत गया

मयूर एक सीधा और सरल स्वभाव का लड़का था। वह होशियार तो था लेकिन उसे अपनी खूबियों के बारे में अधिक जानकारी नहीं थी। वह एक छोटे से शहर का रहने वाला था। उसकी अपनी ज़िंदगी में कोई बहुत अधिक अपेक्षाएँ नहीं थी। वह लोगों से अपने आप को लेकर कोई शिकायत नहीं करता था। कभी-कभी हमारी ज़िंदगी में कुछ ऐसे लोग आते हैं जो हमारी ज़िंदगी को पूरी तरह से बदलकर रख देते हैं। शायद मयूर के लिए भी कोई ऐसा ही अवसर आने वाला था। उसके माता-पिता उसे हमेशा यही समझाते थे कि जीवन में हमेशा अपने उद्देश्य को ध्यान में रखकर आगे कदम बढ़ाना और ज़िंदगी को कहीं भटकने मत देना। मयूर अपने जीवन में बहुत ही खुश रहने की कोशिश करता रहता था।

मयूर के अध्यापक हमेशा ही उसकी तारीफ करते रहते थे। एक दिन की बात है, मयूर सुबह से ही खुद को बहुत ही निराश-सा महसूस कर रहा था। लेकिन इस सबके बाद भी वह जल्दी-जल्दी तैयार होकर अपने विद्यालय के लिए चल पड़ा। पूरा दिन उसे बहुत अजीब-सा लगता रहा। वह दोस्तों से बातचीत करने के बजाय एकांत में गुपचुप बैठा रहा। उसी समय एक लड़की ने आकर उससे बातचीत की। मयूर को उससे बात करके अच्छा लगा।

मयूर अब रोजाना उस लड़की के साथ-साथ घूमने लगा और उसके साथ समय बिताना उसे अच्छा लगने लगा। मयूर धीरे-धीरे अपनी पढ़ाई से दूर होता चला गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आगामी परीक्षा में उसका परीक्षा परिणाम बहुत गंदा रहा। परीक्षा परिणाम देखते ही मयूर को बहुत निराशा हुई। मयूर और उसके माता-पिता को उससे ऐसे परीक्षा परिणाम की आशा नहीं थी। उसके माता-पिता ने उसे काफी समझाया और गुरुओं ने भी उसका मार्गदर्शन किया। मयूर की समझ में सारी बात आ गई।

अगले ही दिन से मयूर ने अपना पूरा ध्यान अपनी पढ़ाई पर देना शुरू कर दिया। अब वह देर रात तक स्वाध्याय करने लगा। धीरे-धीरे उसने अपने सभी विषयों को अच्छी तरह से तैयार कर लिया। वार्षिक परीक्षा में उसने जमकर मेहनत की। कुछ दिनों के बाद उसका परीक्षा परिणाम आया और उसमें उसने बहुत अच्छे अंक हासिल किए। उसके अच्छे प्रदर्शन को देखकर माता-पिता की खुशी का ठिकाना न रहा। मयूर भी अपने अंक देखकर बेहद खुश था। उसने अपने माता-पिता से वादा किया कि अब वह कभी किसी गलत राह की ओर नहीं जाएगा। आज मयूर अपने आप को जीता हुआ महसूस कर रहा था। वह समझ रहा था कि भटकाव के कारण न जाने कितने युवा अपने लक्ष्य से अलग हटकर पतन की ओर चले जाते हैं। मयूर आज अपने आपको जीता हुआ महसूस कर रहा था।

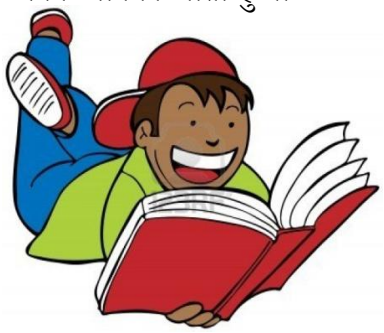

वेदांश जिंदल
कक्षा - ग्यारहवीं

आखिर मैं बेहोश क्यों हुई ?

संसार में अच्छी और बुरी दोनों तरह की शक्तियाँ होती हैं। अगर दुनिया में धनात्मक ऊर्जा है तो ऋणात्मक ऊर्जा से भी इंकार नहीं किया जा सकता। अक्सर लोग भूत-प्रेतों से न डरने की बातें करते हैं लेकिन मैं इसको सच नहीं मानती क्योंकि मैंने खुद, लोगों को कहते सुना है कि यदि मैं मंत्रों का थोड़ा-सा का जाप कर लूँ तो मेरे मन से भय दूर हो जाता है।

मेरे जीवन में भी एक ऐसी ही घटना घटी जिससे मुझे विश्वास हो गया कि जीवन में हर तरह की शक्तियों से हमारा सामना होता है। बात उस समय की है जब हमारे एक दूर के रिश्तेदार के यहाँ शादी थी। हमारे परिवार के सभी लोग उस शादी में गए हुए थे। केवल मैं ही घर पर अकेली थी। मेरे माता-पिता मुझे बता गए थे कि उन्हें वापस लौटने में काफी देर हो जाएगी। मैंने भी सोचा कि यदि माँ और पिताजी घर पर नहीं होंगे तो समय और मजे से गुजरेगा।

माता-पिता के जाने के बाद मैंने शाम का खाना खाया और आराम करने लगी। जब आराम करते-करते मैं ऊब गई तो मैं टी. वी. देखने बैठ गई। अचानक टी. वी. में मुझे एक ऐसी महिला दिखाई दी जिसने एक लम्बी सफेद साड़ी पहनी हुई थी। उसके बाल काफी लम्बे-लम्बे थे। बालों से उसने अपने चेहरे को ढक रखा था। अभी मैं उस महिला को देख ही रही थी कि अचानक बिजली चली गई। चारों ओर अँधेरा छा गया। मुझे ऐसा लगा कि जैसे किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रखा हो। मैं अभी उस महिला को देख ही रही थी कि अचानक कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया। अब मैं और अधिक भयभीत होने लगी। भय के कारण मुझे ऐसा लगने लगा कि वह महिला खून से सना हुआ चाकू लेकर मेरे घर में ही कहीं घूम रही हो मैं जोर-जोर से चीखने लगी। मैं डर से काँपने लगी। मुझे लगा कि मैं बेहोश हो गई हूँ, तभी दरवाज़े की घंटी बजी। मैं उस घंटी के बजने से और अधिक डर गई। मैं दरवाज़े में लगे शीशे से बाहर देखने का प्रयास कर ही रही थी कि अचानक बिजली आ गई। बाहर देखने पर पता चला कि मेरी माँ और पिताजी दरवाज़े के बाहर खड़े हैं और वे ही घंटी बजा रहे थे। पिताजी ने घर में घुसकर मुझे देखते ही पूछा कि मैं इतनी डरी हुई क्यों हूँ ? मैंने पिताजी को सारी सच्चाई कह सुनाई।

पिताजी मेरे डर का कारण समझ गए थे और उन्होंने मुझे बिठाकर काफी समझाया। मैंने पिताजी की बातों से एक बात बहुत अच्छी तरह से समझी कि हमें हमेशा अपने आपको मन से स्वस्थ रखना चाहिए और ईश्वर में सच्ची आस्था रखनी चाहिए। जहाँ ईश्वर के प्रति आस्था होती है, वहाँ बुरी शक्तियाँ प्रवेश नहीं करती हैं। मैं समझ गई थी कि हमें कभी भी ऐसी चीज़ें देखकर अपने मन में बुरे ख्याल नहीं लाने चाहिए।

महिका अग्रवाल
कक्षा - दसवीं

माता-पिता के द्वारा दी गई शिक्षा जीवन में सफलता हेतु अनिवार्य है।

गलती का एहसास

अभिजीत बचपन से ही अपनी कक्षा में हमेशा प्रथम आता था। वह अब बारह साल का हो चुका था। उसे गाड़ी चलाने का बहुत शौक था। वह अपने पिताजी से जब गाड़ी चलाने की अनुमति माँगता तो वह एक ही बात कहते थे कि जब तुम अठारह वर्ष के हो जाओगे तब अवश्य चला लेना। इस समय तुम्हारा गाड़ी चलाना ठीक नहीं है।

जैसे-जैसे वह किशोरवय में आगे बढ़ रहा था, उसका ध्यान पढ़ाई की ओर से भटकने लगा। वह दिन-रात दोस्ती में समय बिताने लगा। वह देर रात तक दोस्तों के साथ घूमता और फिर चुपचाप घर आकर सो जाता। उसकी इन बदली हुई आदतों के कारण वह पढ़ाई में भी पिछड़ने लगा। वह अपनी माँ को बहुत चाहता था। इस कारण वह अपनी सब बातें अपनी माँ से कह लेता था। वह पिताजी से छुपकर दोस्तों के साथ गाड़ी चलाता था। माँ को जब ये सारी बातें उसने बताईं तो माँ ने अभिजीत को सावधान करते हुए ऐसा न करने की सलाह दी।

एक दिन उसने अपने पिताजी से कहा कि वह उनकी कार चलाना चाहता है। यह सुनकर पिताजी ने कहा कि कार चलाने के लिए अभी वह छोटा है। अगर वह कार में चालक की सीट पर बैठेगा तो उसे बाहर की चीज़ें कद छोटा होने के कारण दिखाई नहीं देंगी। उस बात को सुनकर अभिजीत को बहुत गुस्सा आया क्योंकि अब वह पिताजी से छिपकर अपने दोस्त की कार कई बार चला चुका था। उसे कहीं न कहीं यह लगने लगा कि पिताजी उसे कार चलाने के लिए देना ही नहीं चाहते हैं। उसके मन में पिताजी के प्रति सम्मान की भावना कुछ कम होने लगी।

पिताजी को अभिजीत के विषय में सारी जानकारी नहीं थी। जब अभिजीत का परीक्षाफल आया तो देखा कि कक्षा में पहला स्थान पाने वाला वह लड़का कक्षा में अंतिम चौथे स्थान पर पहुँच गया है। यह सब देखकर पिताजी को बहुत बुरा लगा और वे सोचने लगे कि उनके पालन-पोषण में ऐसी कौन-सी कमी रह गई थी जिसके कारण अभिजीत पढ़ाई में इतना पिछड़ता जा रहा है।

पिताजी उदास होकर बैठे हुए थे। उनको उदास देखकर माँ ने उनसे कहा कि आप इतना उदास क्यों हैं ? अभिजीत की माँ ने कहा कि हमारा अभिजीत आपके सही से बातचीत न करने के कारण थोड़ा भटक गया है। पिताजी ने उनसे कहा कि तुम यह क्या कह रही हो ? मैंने उससे कब बातचीत नहीं की ! माँ ने उन्हें समझाते हुए कहा कि अब आप ज्यादा से ज्यादा समय देकर उससे उसकी दिल की बात पूछा करो।

पिताजी बहुत ही हतप्रभ थे। उनको आज महसूस हो रहा था कि शायद समय न देने के कारण आज उनका बेटा उनसे बहुत दूर हो गया है। उन्होंने मन ही मन निश्चय किया कि वे अपने बेटे से अपना संबंध सुधारेंगे जिससे कि उनका बेटा सही रास्ते पर लौट सके। अभिजीत के पिताजी ने अपनी पत्नी से कहकर अभिजीत के पसंद का सारा खाना तैयार कराया और अपने बेटे के आने का इंतज़ार करने लगे। रात के नौ बजने वाले थे कि अभिजीत का एक मित्र दौड़ता हुआ उनके घर पहुँचा और बताया कि उसका कार चलाते हुए एक्सीडेंट हो गया है। अभिजीत के माता-पिता तुरंत उस अस्पताल की ओर भागे जहाँ अभिजीत भर्ती था। अभिजीत बहुत बुरी तरह से घायल हुआ था।

अपने माता-पिता को सामने देखते ही वह रो पड़ा। उसने अपने पिताजी से कहा कि उसने उनकी बात न मानकर बहुत बड़ी गलती की है। अब वह ऐसी गलती दोबारा नहीं करेगा। यह सुनते ही माता-पिता की आँखों में आँसू आ गए और उन्होंने अभिजीत को गले से लगा लिया। इस घटना के बाद वह फिर से पढ़ाई में प्रथम आने लगा।

आदित्य कुमार उपाध्याय
कक्षा - नवमीं

छूकर मेरे मन को .....

दि असम वैली स्कूल भारत के प्रसिद्ध आवासीय विद्यालयों में अपनी एक अलग पहचान रखता है। उत्तर-पूर्व में स्थित यह विद्यालय इस क्षेत्र के रहने वाले हम सभी बच्चों के लिए किसी वरदान से कम नहीं है। चंद वर्षों में ही इस विद्यालय ने एक उत्तम शैक्षणिक संस्थान होने का गौरव प्राप्त किया है। सबसे पहले मेरे पिताजी को अपने मित्रों से इस विद्यालय के बारे में पता चला तो उन्होंने विद्यालय के विषय में सारी खोजबीन की। सभी जानकारियाँ बटोरने के बाद उन्होंने मुझसे विद्यालय के बारे में चर्चा की और मैंने भी अपने कुछ दोस्तों से विद्यालय के बारे में पता किया। विद्यालय के बारे में जानकर जब हम पूरी तरह से संतुष्ट हो गए तब पिताजी ने मेरे लिए विद्यालय में प्रवेश प्रक्रिया में मेरा पंजीयन करा दिया।

मैंने इस विद्यालय में ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश किया। मेरे सदनाध्यक्ष डॉ. राजेश कुमार मिश्र जी थे। उस समय मानस सदन के कप्तान प्रत्युष प्रान दास थे। मुझे आज भी 27 जून, 2018 का वह दिन याद है जब मैं अपना सारा सामान लेकर इस विद्यालय में पहुँचा था। जब तक माँ और पिताजी विद्यालय में रहे, मैं उनके साथ ही घूमता रहा। माता-पिता के जाने के बाद मेरे मित्रों ने मेरे विषय में सारी जानकारियाँ लेनी शुरू कर दीं। मैं बहुत ही स्पष्टता के साथ उनके प्रश्नों का उत्तर देता रहा। कुछ ही घण्टों के बाद मैं अपनी कक्षा के विद्यार्थियों के साथ अच्छी तरह घुलमिल गया। मुझे विद्यालय देखकर एक ओर बड़ी प्रसन्नता हो रही थी तो दूसरी ओर परिवार से दूर होने का थोड़ा-सा दुःख भी था।

शाम के समय मानस सदन में सभी साथियों के साथ एक मीटिंग का आयोजन किया गया। इस मीटिंग में सभी नए विद्यार्थियों की पहचान सभी मित्रों से कराने के लिए सभी को बुलाकर उनका परिचय देने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई। मैंने भी अपने बारे में सभी को अवगत कराया। मेरे सदन के सभी मित्र बहुत ही सहयोगी प्रवृत्ति के हैं जिनकी वजह से मुझे विद्यालय के नवीन वातावरण में खुद को ढालने में समय बहुत कम लगा। जल्दी ही मैं सबमें घुलमिल गया। मेरे सदन के सभी साथी हर पल मेरा सहयोग करते थे जिनकी वजह से विद्यालय में मेरा दो वर्ष का समय बहुत ही अच्छी तरह से व्यतीत हुआ।

आवसीय विद्यालय विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और मेरे विद्यालय ने भी मेरे विकास में सदैव ही मेरा भरपूर सहयोग किया। मैं शुरूआत में थोड़ा लापरवाह अवश्य था लेकिन बारहवीं कक्षा में आते ही विद्यार्थियों में बदलाव आते हैं जिनके फलस्वरूप मैं थोड़ा ज़िम्मेदार विद्यार्थी बन गया। मेरी कर्मण्यता को देखकर विद्यालय ने मुझे इवेंट मैनेजमेंट प्रीफेक्ट तथा सोशियल सर्विस कैप्टन नियुक्त कर दिया। मैंने भी अपनी पूरी तल्लीनता के साथ अपने कर्त्तव्य निर्वहन का प्रयास किया।

विद्यालय के वातावरण ने मुझे एक कर्मठ व्यक्तित्व के रूप में निखारा और चुनौतियों का सामना करना सिखाया। आज मैं गर्व के साथ कह सकता हूँ कि विद्यालय के बाद जीवन में आने वाली चुनौतियों का मैं सफलतापूर्वक

सामना कर सकता हूँ। मैं अपने विद्यालय को धन्यवाद देना चाहूँगा जिसने मुझे एक जागरूक युवा के रूप में विकसित करने में अपनी महती भूमिका निभाई है। मैं अपने सभी मित्रों, अध्यापकों तथा उन सभी सहयोगियों का भी धन्यवाद करूँगा जिन्होंने हमेशा मेरी भलाई के लिए मेरा मार्गदर्शन किया है। अंत में मैं ईश्वर से अपने विद्यालय की उन्नति की कामना करता हूँ।

हर्ष अग्रवाल
कक्षा – बारहवीं

मेरे विद्यालय ने मेरे लिए जो भी सुखद स्मृतियाँ दी हैं, उन्हें शब्दों में व्यक्त कर पाना मेरे लिए बहुत ही मुश्किल है। मैं इस विद्यालय में कक्षा छठवीं में प्रवेश लिया था। मुझे इस सदन में दाखिला लेकर बहुत ही अच्छा लगा था क्योंकि यह सदन अपने साथियों के साथ बहुत ही मित्रवत् व्यवहार रखता है और साथ ही साथ इस सदन के विद्यार्थियों को संगीत की मधुर धारा से विशेष लगाव है। मानस सदन प्रारंभ से ही संगीत के क्षेत्र में अपना विशिष्ट योगदान देता रहा है और मेरा भी रूझान संगीत की ओर था। संगीतमय वातावरण ने मेरी संगीत के प्रति अभिरुचि को और अधिक विकसित करने में मेरी मदद की। मेरे प्रवेश के समय मानस सदन के सदनाध्यक्ष श्रीमान संजय शर्मा जी थे। श्रीमान शर्मा जी ने हमेशा ही मेरा विशेष ध्यान रखा। मेरे ट्यूटर श्रीमान अमर माथुर जी थे जिन्होंने हमेशा ही मुझे एक अच्छा इनसान बनने की सीख दी। मैं भी अपने सदन के साथ बहुत ही गहरा लगाव रखता हूँ।

विद्यालय के सुंदर वातावरण को देखकर मुझे कभी लगा ही नहीं कि मैं कहीं बाहर हूँ। मुझे हमेशा ऐसा लगता है कि यह मेरा दूसरा बड़ा घर है जहाँ मेरे इतने सारे भाई एक साथ मिलजुलकर रहते हैं। मेरे मित्रों के साथ-साथ विद्यालय के सभी अध्यापकगण भी मुझसे इतना ही आत्मीय भाव रखते हैं कि कभी मुझे अपने परिवार की कमी नहीं खलती। मेरी बड़ी बहन कैरिन इसी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही थी जिसके बौद्धिक और बहुआयामी विकास से हम सभी प्रभावित थे। इसी कारण मैंने भी इसी विद्यालय को अपनी कर्मभूमि के रूप में चुना।

कक्षा छः से लेकर बारहवीं तक का मेरा सफर काफी रोमांचक रहा। विद्यालय के सुनहरे प्रागंण में धीरे-धीरे मेरी प्रतिभाओं का निखार होता रहा। मेरे सभी मित्रों ने सदैव ही मेरा सहयोग किया जिसके परिणामस्वरूप आज मैं अपने आपको काफी हद तक आत्मविश्वास से समृद्ध पाता हूँ। इस विद्यालय में आने के बाद मैंने खेलकूद के सभी क्षेत्रों में सहभागिता की और काफी सम्मान भी प्राप्त किया। शैक्षिक क्षेत्र में भी मैंने अपना पूर्ण प्रयास किया जिसके फलस्वरूप मैं सदा ही एक अच्छे विद्यार्थी के रूप में विद्यालय के द्वारा सराहा गया।

मेरे शैक्षिक, सांस्कृतिक और खेलकूद जगत में योगदान को देखकर विद्यालय ने मुझे गुरुजनों के आशीर्वाद से विद्यार्थी-प्रमुख की ज़िम्मेदारी सौंपी। मैंने भी अपनी पूर्ण निष्ठा से उसे पूर्ण करने का सदैव प्रयास किया। आज मैं जो कुछ भी हूँ, उसका पूरा श्रेय अपने अपने विद्यालय, अध्यापकों और अपने मित्रों को देना चाहूँगा। मेरी यही अभिलाषा है कि मेरा विद्यालय प्रतिदिन विकास की सभी सीमाओं को पार करता हुआ विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाए। यह इसी प्रकार अच्छे नागरिकों के निर्माण में सदैव अपना योगदान देता रहे।

आर्यन साहू, कक्षा - बारहवीं

मैं ओजस ज्योति बोरा हजारिका डिब्रूगढ़ का रहने वाला हूँ। मैंने इस विद्यालय में कक्षा छः में, वर्ष 2013 में प्रवेश लिया। इस विद्यालय में प्रवेश लेने की वजह मेरी बड़ी बहनें ओब्जा बोरा हजारिका एवं ओवामिका बोरा हजारिका थीं जिन्होंने वर्ष 2005 एवं 2008 में इस विद्यालय से कक्षा बारहवीं उत्तीर्ण कीं। अपनी बहनों की अच्छी शैक्षणिक एवं अन्य गतिविधियों में दक्षता को देखकर मेरे मन में भी इस विद्यालय में प्रवेश लेने की तीव्र अभिलाषा हुई। मेरे पिताजी ने मेरी मनःस्थिति को देखकर मेरा प्रवेश भी इस विद्यालय में करा दिया।

वह दिन मुझे आज भी अच्छी तरह से याद है जब मैंने पहली बार एक विद्यार्थी के रूप में इस विद्यालय में प्रवेश किया। वह दिन शुक्रवार का था और उस दिन की तारीख 3 मई 2013 थी। मैंने मानस सदन के जूनियर विद्यार्थी के रूप में सदन में प्रवेश किया। उस समय हमारे सदनाध्यक्ष श्रीमान संजय शर्मा जी थे। उन्होंने बहुत ही अच्छे तरीके से मुझे सदन और विद्यालय के विषय में समझाया। पहली बार छात्रावास में आने के कारण अंगद सिंह सेखों को मेरा मेंटर नियुक्त किया गया। अंगद बहुत हँसमुख स्वभाव का विद्यार्थी था। उसने मुझे विद्यालय के विषय में बहुत ही अच्छी तरह से सब कुछ समझाया।

छात्रावास में मेरी दोस्ती सबसे पहले आर्यन साहू से हुई। आर्यन बहुत ही मेधावी तथा समझदार मित्र था। उसने हर पल हर स्थान पर मेरी भरसक मदद की। धीरे-धीरे मैं छात्रावास के अपने सभी साथियों के साथ घुलमिल गया। मुझे अब ऐसा लगता है कि यह छात्रावास मेरा विकसित परिवार ही है। सभी साथी मेरा भरपूर ध्यान रखते हैं। मैंने भी अपने सदन और विद्यालय के लिए बहुत से सार्थक प्रयास किए हैं। मैं पहले से ही टेनिस खेलता था लेकिन टेनिस के प्रति मेरी रुचि इसी विद्यालय में आने के बाद और बलवती होती गई। मैंने विद्यालय में रहकर विद्यालय स्तर, अन्तर-विद्यालयीय और जिला स्तरीय एवं आई. पी. एस. स्तर पर टेनिस खेलकर विद्यालय के नाम को आगे बढ़ाने का काम किया है। मेरे गुरुजनों ने मेरी नेतृत्व प्रतिभा को देखकर मुझे हाउस प्रीफेक्ट बनाया और मैंने भी पूरे मनोयोग से उन ज़िम्मेदारियों के निर्वहन करने का प्रयास किया।

इस विद्यालय में आकर मैंने तैरना, क्रिकेट, फुटबॉल तथा बास्केटबॉल जैसे खेलों में भी महारत हासिल करने की कोशिश की और काफी हद तक सफल भी रहा। मैंने शैक्षिक क्षेत्र में भी अपना अच्छा विकास किया जिसका सारा श्रेय मैं अपने मित्रों तथा गुरुजनों को देना चाहूँगा। विद्यालय ने मुझे इस काबिल बना दिया है कि मैं यहाँ से बाहर जाने के बाद जीवन की सभी चुनौतियों का अच्छी तरह से सामना कर सकूँ। मुझे अपने विद्यालय पर गर्व है जो विद्यार्थियों को आगामी भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करके उन्हें एक ज़िम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास करता है। मैं चाहता हूँ कि यदि भविष्य में मुझे विद्यालय का यह ऋण उतारने का मौका मिला तो अवश्य ही मैं अपना पूरा सहयोग अपने इस विद्यालय को देना चाहूँगा। अंत में ईश्वर से मेरी यही कामना है कि मेरा विद्यालय इसी प्रकार देश के लिए ज़िम्मेदार नागरिकों का निर्माण करता रहे।

ओजस ज्योति बोरा हजारिका
कक्षा - बारहवीं

मैं कपीश हरसिंगपुरिया तिनसुकिया का रहने वाला हूँ। आज से छः वर्ष पहले मेरे पिता ने मुझे इस विद्यालय में प्रवेश दिलाने से पूर्व इण्टरनेट का सहारा लेकर भारत के सभी अच्छे विद्यालयों को खोजा। सब विद्यालयों के विषय में जानने के बाद उन्होंने असम वैली को चुना और इसके विषय में अन्य लोगों से भी जानकारी एकत्रित की। अंत में मुझे इस विद्यालय में प्रवेश दिलाने का निर्णय लिया गया। मैंने भी अपने मित्रों से इस विद्यालय के विषय में काफी सुना था इसलिए मैं यहाँ आने को काफी उत्साहित था।

विद्यालय में प्रवेश होने के बाद मेरे माता-पिता, बहन और चाचा मुझे यहाँ छोड़ने आए। मैं 5 मई 2013 को विद्यालय में पहुँचा। विद्यालय में फैली प्राकृतिक छटा को देखकर मैं और मेरा परिवार बहुत ही खुश था। जिस समय मैं मानस सदन में पहुँचा उस समय श्रीमान संजय शर्मा जी हमारे सदनाध्यक्ष थे। मेरे गुरुजनों ने मुझे और मेरे पिता को विद्यालय की गतिविधियों के विषय में विस्तार से समझाया। तेजराज कश्यप को मेरा विद्यार्थी मार्गदर्शक चुना गया। तेजराज ने मुझे विद्यालय और सदन को अच्छी तरह समझने में मेरी भरसक मदद की।

माता-पिता से दूर रहने पर मुझे छात्रावास के रूप में मेरा एक नया परिवार मिला। यहाँ रहकर मैंने अपने नए मित्र बनाए। मेरा सदन शैक्षिक, सांस्कृतिक और खेलकूद सभी क्षेत्रों में बेहद अच्छा रहा है जिसके परिणामस्वरूप मैं भी सभी क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन करता रहा। मेरी प्रतिभा को देखते हुए मेरे गुरुजनों ने मुझे उप-सांस्कृतिक छात्र प्रमुख के रूप में ज़िम्मेदारी दी जिसका मैंने बखूबी निर्वहन करने का प्रयास किया। मैंने सदैव ही अपने विद्यालय और सदन के साथियों से बहुत कुछ सीखा है जिनका मैं आजीवन ऋणी रहूँगा।

आज जब विद्यालय से दूर होने का समय नज़दीक आ रहा है, तो लगता है कि बाहर की खुली दुनिया मेरे लिए किसी चुनौती से कम नहीं होगी। मुझे विद्यालय ने इस तरह से अनुशासित और शैक्षिक उत्कृष्टता प्रदान की है जिससे कि मैं बाहर दुनिया की चुनौतियों से सहजता से सामना कर सकूँ। मैं अपने विद्यालय के विषय में यही कहना चाहूँगा कि यह हमारे लिए किसी मंदिर से कम महत्व नहीं रखता। मेरी यही अभिलाषा है कि यह दिनोंदिन उन्नति की ओर बढ़कर देश के ज़िम्मेदार नागरिकों का निर्माण करता रहे।

कपीश हरसिंगपुरिया
कक्षा – बारहवीं

मैंने चार वर्ष पहले दि असम वैली स्कूल में प्रवेश किया। यह समय इतनी जल्दी व्यतीत हो जाएगा इसका मुझे अंदाजा ही नहीं था। कक्षा नवमीं में प्रवेश लेने के समय मैं बहुत ही अपरिपक्व थी। इस विद्यालय में आने के बाद ही मैंने बहुत कुछ अनुभव किए जिसके बाद आज मैं स्वयं को निर्णय लेने में समर्थ पाती हूँ। जब हम एक छोटे परिवार से बड़े परिवार में कदम रखते हैं तो हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। मुझे लगता है कि यह दुनिया ऐसी है जहाँ आपको सभी प्यार करते हैं और हर काम आसानी से हो जाता है। विद्यालय में आने के बाद ही मेरा इस

सच्चाई से परिचय हुआ कि यदि आप दूसरों का सहयोग करने के लिए तैयार होते हैं तो लोग आपका भी खुले हृदय से सहयोग करते हैं और यदि दूसरों के प्रति स्नेह रखते हैं तो आपको उतना ही स्नेह मिलता है। सच्चाई यह है कि समाज में हर तरह के लोग रहते हैं जो आपकी हर क्षण परीक्षा लेते हैं। जीवन की व्यावहारिक परिपाटी ही असली व्यक्तित्व का निर्माण करती है। बाहरी दुनिया में कदम रखने से पहले यह जानना भी ज़रूरी है कि दुनिया किस प्रकार अच्छाई-बुराई, झूठ-सच और अन्य गुणों का समिश्रण रखती है। यह जानने के बाद ही आप खुद को इस काबिल बनाते हैं कि अच्छी तरह से लोगों में आवश्यकतानुसार घुलमिल सकें। विद्यालय के अनुशासित वातावरण ने मुझे अनुशासन का महत्त्व समझाया।

मेरे विद्यालय के साथियों ने सदैव ही मुझे अपना सहयोग प्रदान किया। मैंने यहीं पर आकर दुनिया के अनेक धर्मों के विषय में बहुत कुछ सीखा। यदि कभी मेरे जीवन में कोई दुःख के पल आए तो सभी अपने दोस्तों को मैंने अपने साथ खड़े पाया है। विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखने की कला भी मैंने अपने गुरुजनों और साथियों से ही सीखी है। आज मैं अपने साथियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हूँ। यह आत्मविश्वास भी मेरे विद्यालय की ही देन है। जीवन में सफलता असफलताओं की सीढ़ियों पर चढ़कर मिलती है। यह गहन ज्ञान भी मेरे विद्यालय की ही देन है। न जाने कितनी बार ऐसा समय आया जब मैं हताश होने लगी और न जाने कब मेरे दोस्तों के प्रेरणाप्रद वाक्यों ने मुझे इतना प्रेरित किया कि मैं हताशा से निकलकर अपनी जंग खुद लड़ने खड़ी हुई और परिस्थितियों पर विजय प्राप्त की।

मेरी सदनाध्यक्षा ने मेरे आत्मविश्वास और साहस को देखकर मुझे हाउस प्रीफेक्ट का पद भार सौंप दिया और मैंने भी उनके विश्वास को कायम रखने के लिए जी तोड़ मेहनत की। इस पद ने मुझे सिखाया कि शिक्षा के साथ-साथ नेतृत्व के गुण भी विद्यार्थी के जीवन और क्षमतावान बनाते हैं। जब विद्यालय से विदा लेने का समय निकट आ रहा है तो मुझे लगता है कि बाहर की दुनिया में जाने के बाद श्रीमान झा साहब के द्वारा दिया जाने वाला भोजन, आधी-आधी रात तक दोस्तों के साथ पढ़ाई और उनकी बातें बहुत याद आएंगी। ट्यूटोरियल में अपनी मित्रों के साथ ट्यूटर के घर जाना, उनके बनाए हुए पकवानों का आनंद लेना और मस्ती करना भी शायद जीवन में कभी दोबारा मिलेगा। यहाँ सभी से मुझे बेहद स्नेह मिला है, वह शायद ही मैं कभी भूल सकूँगी। मेरा एक ही सपना है कि मेरा विद्यालय मेरे जैसे सभी विद्यार्थियों के सपनों का साकार करने वाला मंदिर बनकर रहे।

श्रुति कोठारी
कक्षा – बारहवीं

------ हिंदी वर्ग पहेली --------

संकेत –

1. सुंदर वर्ण और आकृति
2. मिट्टी से बना फूल लगाने का पात्र
3. एक ही तरह के लोग
4. वस्त्र
5. उल्टी लगना
6. विनीत
7. मुख्य, प्रधान, अत्यंत
8. छोटा पत्थर का टुकड़ा
9. उच्च कुल का
10. नाज़, अदा
11. अचेत
12. खाली हाथ खड़े होना
13. बाघ की माँद
14. कूड़ा-कर्कट
15. धरती
16. ओस
17. रस
18. लघु होने का भाव, लघुता
19. बौखलाया हुआ
20. बेकार

संख्या वाले कॉलम के वर्ण को आधार बनाकर शब्द पूर्ण कीजिए। वर्ग पहेली के हल का संकेत क्रमवार दिया गया है।

मेधा परीक्षण

चित्रकार से पहले के समान दूसरा चित्र निर्माण करते समय उसमें कुछ गलतियाँ रह गई हैं। जितने कम समय में आप सभी गलतियों की संख्या ढूँढ लेते हैं, उतनी आपकी बुद्धि तीव्रगामी है।

जूली घर जाते समय भूल-भुलैया से भरे हुए रास्तों में अपने घर का रास्ता भूल गई है। उसे सही रास्ते से उसके घर पहुँचने में उसकी मदद कीजिए।

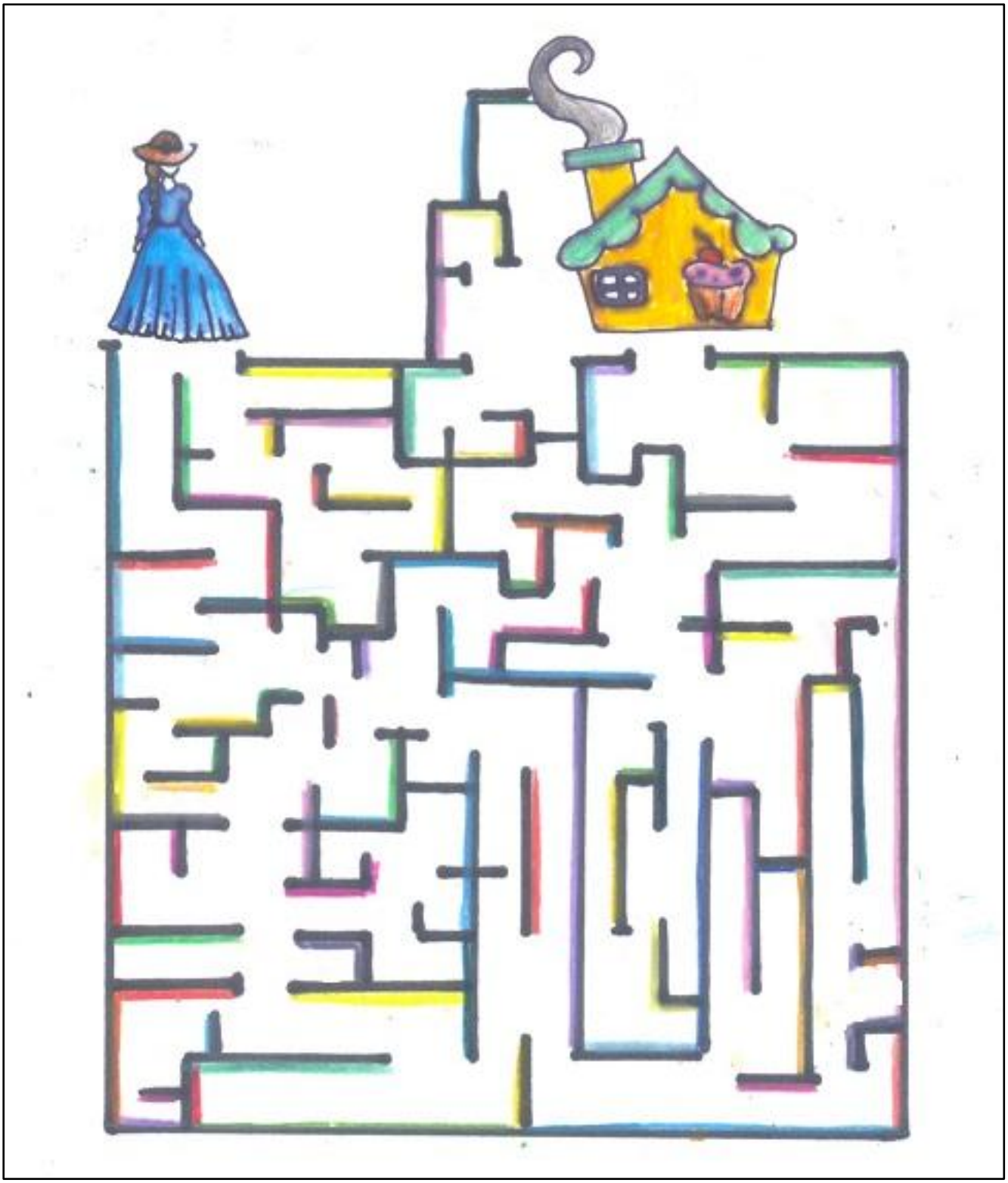

देखो हँस न देना.....

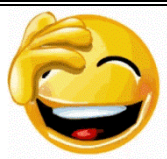

पार्थ - यह मोबाइल मुझे कंगाल करके छोड़ेगा। दस बार इसकी बैटरी बदल चुका हूँ।

हर्षित - मगर क्यों ?

पार्थ - जब भी इस्तेमाल करता हूँ, तभी लिखकर आ जाता है – बैटरी लो।

पिता - बेटा, छोड़ दे यह फेसबुक, यह तुझे रोटी नहीं देने वाली।

बेटा - कोई बात नहीं पापा, रोटी बनाने वाली तो दे ही देगी।

दो मित्र आपस में बातें कर रहे थे।

पहला मित्र - यार, मेरा मित्र मोहन बड़ा पागल निकला। वह आज कुएँ में कूद गया और अपनी जान से हाथ धो बैठा।

दूसरा मित्र - तुम्हारा मित्र पागल नहीं महान पागल था।

पहला मित्र - भला वो कैसे ?

दूसरा मित्र - अरे जब वह कुएँ में कूदा था, तो उसे जान की जगह पानी से हाथ धो लेना चाहिए था।

वर्ग पहेली का हल :

१ रौ		२ ग		३ ए	क	४ क		५ जी
६ न	त	म	स्त	क		७ प	र	म
क		ला		थै		ड़ा		च
	८ प		९ कु	ली	१० न		११ बे	ल
१२ हा	थ	झा	ड़	के	ख	ड़े	हो	ना
१३ थ	री		१४ क	च	रा		श	
फै		१५ अ		ट्टे		१६ को		१७ आ
१८ ला	घ	व		१९ ब	द	ह	वा	स
ना		२० नि	ख	ट्टे		रा		व

দ্য অসম ভেলী স্কুল

জাগৰণ ২০১৯

অসমীয়া বিভাগ

সূচীপত্র

নানা চিন্তা নানা ভাৱনাৰে প্ৰৱন্ধৰ কুঁকিত

১) দেশপ্রেম — প্রিয়াঞ্চী শর্মা
২) শিক্ষা — কৃষিভ কলিতা
৩) য'তেই ইচ্ছা ত'তেই বাট — ঋতুদ্বীপ ডেকা
৪) কথা শুনিলেহে — হানা চানিফাৰ আহমেদ
৫) সফলতাৰ মাপকাঠি — নৱদ্বীপ ডেকা
৬) চেষ্টা — মানস কেলেং
৭) জীৱন ৰঙীন কৰিবলৈ — দিৱীজা দিব্যজ্যোতি
৮) শিক্ষাই মানুহৰ জীৱন পোহৰ কৰে — চিন্ময় তামুলী

অসমীয়া তৃতীয় বিষয়ৰ ছাত্র-ছাত্রীৰ মনৰ কথা

৯) সফলতা — ঋষভ ঘোষ
১০) মোৰ ভাইটি — পিয়ুষ পাল
১১) মা — যশ আগৰৱাল
১২) দেউতালৈ বুলি — অনুকৃতি কাশ্যপ
১৩) সময় — হর্ষিত তসনিৱাল
১৪) অসম — সমর্থ মহত্ব
১৫) খেল — চিৰাগ আগৰৱাল
১৬) বাতৰি কাকত — বংশিকা শর্মা
১৭) কি কৰিম — সিদ্ধি গুপ্তা
১৮) ব্লেক হল — কৃতার্থ কৌশিক
১৯) গছ — কৃষ্টি পাঠক
২০) কিমান প্রয়োজন — ফাৰিহা জামান
২১) তোমালৈ বৰ মনত পৰে — অধ্যয়ন শইকীয়া
২২) মেছী — জায়ান আবিৰ

মহাকাশৰ বিষয়ে

২৩) মংগল গ্রহত জীৱন থকাৰ সম্ভাৱনা — মানস কেলেং
২৪) মোৰ মহাকাশ যাত্রা — ভিষাজ গোস্বামী

২৫) জোনবাই — ভায়োলিনা বৰুৱা

গল্পৰ কৰণিত

২৬) মা আৰু মই — জীৱিথা শীল
২৭) সোণপাহী — খ্যাতি বৰা
২৮) বিপদৰ বন্ধু — টানিষ্কা কৃষ্ণাত্রেয়
২৯) নৰ-পিশাচ — সৌৰভ মাণ্টা
৩০) চাতুৰীৰ ফল — ঈশিকা দাস

ইটো সিটো বহুতো

৩১) চাফ-চিকুণতা — নয়নিকা বৰা
৩২) ধুনীয়া মানালি — সার্থক মহত্ব
৩৩) মোৰ ৰেল যাত্রা — নীহাৰিকা গোস্বামী

পঞ্চম শ্রেণীৰ ছাত্র-ছাত্রীৰ মনৰ খবৰ

বিষয় - ছাত্র হিচাপে আমাৰ আচাৰ ব্যৱহাৰ কেনে হোৱা উচিত ?

৩৪) — আস্মীত ফুকন
৩৫) — নিশান্ত শর্মা
৩৬) — উর্বশী বৰা
৩৭) — অয়ন শইকীয়া
৩৮) — প্রিয়ানী শর্মা

কবিতাৰ কৰণিত

৩৯) বৰষুণ — শুভেচ্ছা বৰা
৪০) দেউতা — হিমীকা ৰাণী বৰা
৪১) সেই নদীখন — জীৱিথা শীল
৪২) ফাষ্ট চামাৰ ফেষ্ট — তাচমিন য়ুচৰা আহমেদ
৪৩) কলম — অর্চিত ফুকন
৪৪) ডাকোৱাল — ৰাজেন ভৰালী
৪৫) চামাৰ ফেষ্ট — যুৱৰাজ ভূঞা
৪৬) কাগজ — দুলু দত্ত
৪৭) লিমাৰিক - অসম পুৰাণ — প্রাঞ্জল শইকীয়া

জাগৰণ ২০১৯

নানা চিন্তা নানা ভাৱনাৰে প্ৰৱন্ধৰ কুঁকিত ---

দেশপ্ৰেম

প্ৰিয়াঞ্চী শৰ্মা
দশম শ্ৰেণী

যিখন দেশৰ ধূলি-বালিৰ বুকুত ওমলি-জামলি, যাৰ বতাহ-পানী খাই সেউজীয়া বুকুত ডাঙৰ-দীঘল হ'লো, য'ত পশু-পক্ষীৰ মাতে আমাক সদায় পুৱা-সন্ধ্যা আনন্দ দিয়ে, যাৰ আকাশে-বতাহে, গছ-বননিয়ে, পৰ্বতে-পাহাৰে আমাৰ স্মৃতি বিজড়িত হৈ আছে সেইখনেই আমাৰ দেশ ভাৰতবৰ্ষ। এইখন দেশৰ লগত আমাৰ জন্ম-জন্মান্তৰৰ সম্বন্ধ । সেয়েহে আমাৰ অন্তৰত দেশৰ প্ৰতি এক নিবিড় ভালপোৱা , অন্তহীন মৰম অনবৰতে জাগ্ৰত হৈ থাকে।

এইখন দেশৰ প্ৰতিজন মানুহৰে অন্তৰত দেশপ্ৰেম আছে। সেয়ে ই কেতিয়াবা সুপ্ত হৈ থাকে আৰু কেতিয়াবা জাগ্ৰত হৈ যায়। ই জাগ্ৰত হয় প্ৰয়োজনত। দেশৰ স্বাধীনতাৰ কাৰণে বহুত লোকে প্ৰাণ আহুতিও দিছে। তাৰোপৰি দেশ যেতিয়া বহিঃশত্ৰুৰ দ্বাৰা আক্ৰান্ত হয় তেতিয়া সমগ্ৰ দেশ জাতি-ধৰ্ম-বৰ্ণ নিৰ্বিশেষে সকলো একগোট হৈ আগবাঢ়ি আহে দেশ ৰক্ষাৰ বাবে। দেশপ্ৰেমৰ বাবেই বহুতো লোকে মৃত্যুক সাৱটি ল'বলগীয়াও হৈছে। শ্বহীদ হৈ তেওঁলোকৰ নাম সোণালী আখৰেৰে জিলিকাইছে। নিজৰ দেশৰ পৰা আঁতৰি থাকিলেহে মানুহে অনুভৱ কৰিব পাৰে যে নিজৰ দেশখন কিমান মৰমৰ। ইয়াৰ আকৰ্ষণ মানুহে বাহিৰত থাকিলেহে অনুভৱ কৰিব পাৰে।

দেশপ্ৰেমৰ পৰাই বিশ্বপ্ৰেমৰ সৃষ্টি হয়। ইয়াৰ দ্বাৰা আমাৰ বিশ্বৰ লগত পৰিচয় হয়। উদাহৰণ স্বৰূপে চন্দ্ৰায়ন হৈছে এটা জলন্ত নিদৰ্শণ। সকলো বিজ্ঞানী একগোট হোৱাৰ উপৰিও দেশৰ সকলো লোকে প্ৰাৰ্থনা জনাইছে ইয়াৰ সফলতাৰ বাবে। ইতিহাসে দেশপ্ৰেম জগাই তোলাত সহায় কৰে। দেশৰ বাবে আত্ম বলিদান দিয়াৰ মনোৰম কাহিনীবোৰ পঢ়ি আমি উৎসাহ আৰু অনুপ্ৰেৰণা লাভ কৰো । সেয়েহে মোৰ মনতো দেশপ্ৰেমৰ ভাৱ সৰুৰে পৰাই অনুভৱ কৰো।

শিক্ষা

কৃষিভ কলিতা
অষ্টম শ্রেণী

ছাত্রৰ মূল কৰ্তব্য অধ্যয়ন । অধ্যয়নৰ জৰিয়তে আমি ভৱিষ্যতে সফল হ'ব পাৰো। শিক্ষা আমাৰ জীৱনৰ এক অমূল্য সম্পদ । শিক্ষাৰ অবিহনে আমি জীৱনৰ বাটত পিচ পৰি ৰ'ম । শিক্ষাৰ জৰিয়তে লাভ কৰা জ্ঞানৰ দ্বাৰা আমি জীৱনৰ প্ৰয়োজনীয় সকলো বস্তু আয়ত্ব কৰিব পাৰো । আমি যদি পঢ়া শুনা নকৰি দিনবোৰ সাধাৰণভাৱে ভাৱনাত ডুবি পাৰ কৰো তেনেহলে আমাৰ বহুতো হানি হ'ব। শিক্ষা এজন মানুহৰ জীৱনৰ ডাঙৰ শক্তি । যদি আমি শিক্ষাৰ জৰিয়তে প্ৰকৃত জ্ঞান লাভ কৰিব পাৰো ,তেনেহলে আমি জীৱনৰ সকলো যুদ্ধত জয় লাভ কৰিম । শিক্ষাৰ জৰিয়তে আমি সমাজৰ উন্নতিৰ বাবে অভিযন্তা, চিকিৎসক অথবা আন কোনো বিশিষ্ট ব্যক্তি হ'ব পাৰো । জ্ঞানীজনক কোনেও হৰুৱাব নোৱাৰে না ঠগিব পাৰে। কিয়নো শিক্ষাৰ জৰিয়তে আমি সৎ চিন্তাৰ দ্বাৰা ভাল আৰু বেয়াৰ মাজত পাৰ্থক্য বুজি পাবলৈ সক্ষম হওঁ । শিক্ষাৰ অবিহনে আমি জীৱনত আগবাঢ়িব নোৱাৰিম, ভৱিষ্যতে আমি মনে বিচৰা ধৰণৰ উন্নত জীৱন উপভোগ কৰিব নোৱাৰিম । পঢ়া-শুনা কৰাৰ ফলত আমি সমাজৰ অশিক্ষিতজনকো শিক্ষা প্ৰদান কৰি তেওঁলোকক জ্ঞানৰ পোহৰ দেখুৱাব পাৰো । অৱশেষত ক'ব পাৰো শিক্ষাই আমাক জীৱনৰ বাটত আগবাঢ়ি যোৱাত সহায় কৰাৰ লগতে সৎ বুদ্ধি আৰু জ্ঞান প্ৰদান কৰে ।

য'তেই ইচ্ছা ত'তেই বাট

ঋতুদ্বীপ ডেকা
অষ্টম শ্রেণী

জগতত মানুহে কৰিব নোৱাৰা কাম একোৱেই নাই। আমি চেষ্টা কৰিলে সকলো কাম কৰিব পাৰো । মানুহে যদি চৰাইৰ দৰে উৰিব পাৰে , মাছৰ দৰে সাঁতুৰিব পাৰে তেনেহলে চেষ্টা কৰিলে আমি মানসিক শক্তিৰদ্বাৰা যি ইচ্ছা তাকেই কৰিব পাৰো। অৰ্থাৎ য'তেইইচ্ছা ত'তেই বাট। আমি কিবা এটা কাম কৰিবলৈ হ'লে সেই কামৰ প্ৰতি সদিচ্ছা থাকিব লাগিব । ইচ্ছাৰ অবিহনে আমি কোনো কামত

সফল হ'ব নোৱাৰিম । আজিকালি প্ৰায়ে জীৱনত হোৱা অসফলতাৰ বাবে বহুজনে আত্মহত্যা কৰা দেখা যায় ।কাৰণ সেই কামৰ বাহিৰে আন কোনো কাম কৰাৰ প্ৰতি তেওঁলোকৰ ইচ্ছাই নাথাকে । যদি মনত সদিচ্ছা থাকে তেনেহলে যি কোনো কামতে সফলতা লাভ কৰিব পাৰি আৰু এই সফলতাৰ বাবে সদিচ্ছাৰ লগতে আমাক প্ৰয়োজন হ'ব কষ্ট কৰিব পৰা শক্তি । এইখিনিতে সৰুতে শুনা এটা সাধু মনত পৰিছে । এবাৰ দুটা ভেকুলী এটা গাতত পৰিল । দুটাৰ ভিতৰত এটাই বাৰম্বাৰ চেষ্টাৰ অন্তত গাঁতৰপৰা ওলাই আহিবলৈ সক্ষম হ'ল আৰু আনটো চেষ্টাৰ অভাৱত গাঁতৰ ভিতৰতেই মৃত্যু হ'ল। অৰ্থাৎ সাধুটোৰপৰা এইটোৱেই শিকিলো যে , আমাৰ জীৱনলৈ অহা অসফলতাক আমি আমাৰ মনৰ শক্তি আৰু সদিচ্ছাৰ জৰিয়তে সফলতালৈ পৰিবৰ্তন কৰি জীৱনৰ বাটত জয়ী হ'ব পাৰিম ।

কথা শুনিলেহে.....

হানা চানিফাৰ
অষ্টম শ্ৰেণী

'ছাত্ৰানং অধ্যয়নং তপঃ' এই সংস্কৃতত লিখা বাক্যশাৰীৰ অৰ্থ হৈছে অধ্যয়নেই হৈছে ছাত্ৰৰ প্ৰধান কৰ্তব্য । কিন্তু যিদৰে আমাৰ সকলো আঙুলি সমান নহয় ঠিক সেইদৰে সকলো ল'ৰা ছোৱালী সমান নহয় । হয়তো কোনো ল'ৰা - ছোৱালী যদি পঢ়াত ভাল, আন কোনো আকৌ নাচ গান অৰ্থাৎ সাংস্কৃতিক দিশত অথবা খেলা ধূলাত ভাল । প্ৰতিটো কাম কৰিবলৈ আমাৰ কেৱল ইচ্ছা থাকিলেই নহ'ব কামটো সফল কৰি তুলিবলৈ আমি যত্নও কৰিব লাগিব ।এই কথাষাৰ কিন্তু কমলৰ মগজুত নোসোমায় । জীৱনটোত কেৱল খাইছে আৰু শুইছে ,এলাহে যেন কমলৰ লগ নেৰা হ'ল । তাৰ মাকে তাক এই স্বভাৱটোৰ বাবে সদায় গালি পাৰে । কিন্তু কমলেনো কেতিয়া তাৰ মাকৰ কথা শুনে ? ' মায়ে দেখোন মোক নিতৌ গালি পাৰিয়েই থাকে ' সি ভাৱে- 'আজিনো কি নতুন কথা'! কমল যি দিশত গৈ আছিল তাৰ যে ভৱিষ্যত কেতিয়াও ভাল নহ'ব সেইকথা তাৰ মাকে গম পাইছিল। কমলৰ দেউতাকে তাক সৰুতে তাৰ ইচ্ছা মতে কাম কৰিবলৈ দিছিল আৰু সেইকাৰণে সি ডাঙৰ হৈ মাক দেউতাকৰ কোনো কথাই নুশুনা হৈছিল । যিটো ল'ৰাৰ ভগৱানৰ প্ৰতি ভক্তি তথা ভয়-শংকা নাই তেনেস্থলত মাক দেউতাকৰ কথা কিয় বা শুনিব ? আনহাতে কমলহঁতৰ ঘৰত কাম কৰা বাইদেউৰ ল'ৰা ৰবীন বৰ শৃংখল । সিয়ো কমলৰ বয়সৰেই । কিন্তু সি কমলৰ সম্পূৰ্ণ বিপৰীত । সি যথেষ্ট নম্ৰ , শান্ত আৰু ডাঙৰক যথেষ্ট সন্মান কৰে । সি কিতাপ পঢ়ি বৰ ভাল পায় আৰু নিজৰ আজৰি

সময়খিনি কিতাপ পঢ়িয়েই কটায় । শ্রেণীত প্রথম স্থান পাবলৈ সদায় কষ্ট কৰে । ডাঙৰ হৈ সি এজন ভাল চিকিৎসক হোৱাৰ সপোন মনত পুহি ৰাখিছে । লাহে লাহে সময় বাগৰিল। কমল আৰু ৰবীনৰ হাইস্কুল শিক্ষান্ত পৰীক্ষাৰ ফলাফল দেখি সকলো আচৰিত হ'ল।কমলে পৰীক্ষাত বৰ বেছি নম্বৰ নাপালে কিন্তু ৰবীনে অসমৰ ভিতৰত প্ৰথম স্থান লাভ কৰিবলৈ সক্ষম হ'ল ।নিজৰ ফলাফলক লৈ কমলে বৰ লাজ পালে । সেইদিনা কমলে নিজৰ ভুল অনুভৱ কৰিলে। আনহাতে ৰবীনে নিজ ইচ্ছাৰ বলত দৰিদ্ৰতাকো নেওচি নিজ লক্ষ্য পথত উপনীত হ'ল । এনেদৰেই মানুহৰ মনত যদি সদিচ্ছা থাকে তেনেহ'লে জীৱনৰ হাজাৰ বাধা অতিক্ৰম কৰি নিজৰ সপোনৰ বাটেৰে আগবাঢ়ি সফলতা লাভ কৰিব পাৰে ।

সফলতাৰ মাপকাঠী

নৱদ্বীপ ডেকা
অষ্টম শ্ৰেণী

আমি সকলোৱে জীৱনত সফল হোৱাটো বিচাৰো । সেয়েহে বহু ভাবি চিন্তি বিভিন্নজনৰ পৰামৰ্শ লৈ নিজ লক্ষ্য স্থিৰ কৰিব লাগে। কিন্তু আজিৰ সমাজত এজন চিকিৎসক অথবা এজন অভিযন্তাকহে সফল ব্যক্তি হিচাপে গণ্য কৰা হয় । কিন্তু এইয়া জানো সঁচা হয় ? ছাত্ৰ ছাত্ৰীসকলেও কেৱল উপাধি লাভতহে গুৰুত্ব দিয়া দেখা যায় । অধিকাংশ ছাত্ৰই বাল্যকালৰে পৰাই লক্ষ্য স্থিৰ কৰি লোৱা উচিত । লগতে মনত ৰখা উচিত যে আমি সেই কাম হে কৰিব লাগে যি আমাৰ মনে বিচাৰে। কেতিয়াবা দেখা যায় সৰুতে লোৱা এটা সিদ্ধান্ত ডাঙৰ হোৱাৰ লগে লগে সলনি হৈ যায় । ইয়াৰ কাৰণ আধুনিক শিক্ষাৰে শিক্ষিত হোৱাৰ অন্তত সংসাৰত প্ৰৱেশ কৰোতে সেই কামৰ প্ৰতি নিজকে উপযুক্ত অনুভৱ নকৰে । এনে হ'লেও আমি হাৰ মানিব নালাগে । বিভিন্নজনে আমাক জীৱনৰ এনে সময়ত বহু কটু কথাও শুনাব পাৰে । কিন্তু আমি আমাৰ মনে বিচৰা জীৱনটোৰ কথা ভাবি আগবাঢ়ি যাব লাগে যেতিয়ালৈকে আমি আমাৰ সপোন সফল কৰিব নোৱাৰো । জীৱনে আমাক সফলতা প্ৰদান কৰিব যদিহে আমি মনৰ দৃঢ়তা নেহেৰুৱাও আৰু এনেদৰেই আমি আমাৰ ইচ্ছা শক্তিৰ জৰিয়তে জীৱনৰ বাটত সফল হ'ব পাৰিম বুলি মোৰ দৃঢ় বিশ্বাস । দৃঢ়তাই যে সফলতাৰ মাপকাঠী এই কথা আমি এই জীৱনটোতেই অনুভৱ কৰিবলৈ সক্ষম হ'ম।

চেষ্টা

মানস কেলেং
সপ্তম শ্রেণী

জীৱন ৰঙীন কৰিবলৈ অধিক কষ্টৰ প্ৰয়োজন -এই কথাষাৰ সঁচা । কিন্তু সেই কষ্ট আমিনো কেনেকৈ আৰু ক'ত কৰিব লাগে ? এই প্ৰশ্নৰ কোনো এটা নিৰ্দিষ্ট উত্তৰ নাই । কাৰোবাৰ বাবে হয়তো পঢ়া শুনা হ'ব পাৰে , হয়তো খেলা ধূলা নাইবা কাৰোবাৰ বাবে দুয়োটাই হ'ব পাৰে । আচলতে কষ্ট নকৰিলে আমি জীৱনত কেতিয়াও সফল হ'ব নোৱাৰিম । ময়ো ভৱিষ্যতে এজন ডাঙৰ আৰু সফল ব্যক্তি হ'ব বিচাৰো। তাৰবাবে অধিক কষ্টও কৰিব লাগিব । আমি সকলোৱে পণ্ডিত বোপদেৱক চিনি পাওঁ। তেখেতৰ বিষয়ে পঢ়া বোপদেৱ নামৰ পাঠটিৰপৰা আমি জানিব পাৰিলো যে পণ্ডিত বোপদেৱেও নেৰানেপেৰা চেষ্টাৰ অন্ততহে জধামূৰ্খ হোৱা স্বতেও ডাঙৰ পণ্ডিত হ'ব পাৰিছিল । এইয়া মাত্ৰ এটা উদাহৰণহে । আৰু বিচাৰিলে এনেধৰণৰ উদাহৰণ আমি বহুতো পাম। জীৱনত চেষ্টাৰ অসাধ্য আচলতে একো নাই । এজন ছাত্ৰ হিচাপে আমি সদায় সৎ পথত থাকি কষ্ট কৰিলে জীৱনত সফলতা লাভ কৰিম ।

জীৱন ৰঙীন কৰিবলৈ

দ্বিবিজা দিব্যজ্যোতি জাজোদিয়া
সপ্তম শ্রেণী

যেতিয়া এখন কাগজত কোনো এখন ছবি অঁকা হয় তেতিয়া কেৱল কাঠপেঞ্চিলৰহে ব্যৱহাৰ হয় । যাৰদ্বাৰা ছবিখন দেখিবলৈ অসম্পূৰ্ণ যেন লাগে ।কিন্তু সেই ছবিখনত যেতিয়া আমি কিছু ৰঙৰ ব্যৱহাৰ কৰো তেতিয়া যেন ছবিখনে প্ৰাণ পাই উঠে । ময়ো মোৰ জীৱনটো ৰঙীন কৰিব বিচাৰো। কিন্তু কেনেকৈ ? আমাৰ পূৰ্বপুৰুষসকলে কৈ থৈ যোৱাৰ দৰে ' কষ্টই সফলতাৰ মূল চাবিকাঠি ' এই বাক্যশাৰী আমি মানি চলিব লাগিব । ময়ো মোৰ জীৱনটো ৰঙীন কৰিব বিচাৰো আৰু তাৰবাবে মই এতিয়াৰপৰাই চেষ্টা কৰিছো । কেৱল পঢ়া-শুনাই নহয় তাৰ লগতে মই ভালপোৱা খেল আৰু সংগীতটো সমানেই গুৰুত্ব দিছো । ভৱিষ্যতে মই এগৰাকী পদাৰ্থ বিজ্ঞানী হোৱাৰ সপোন পুহি ৰাখিছো ।সেয়েহে বিজ্ঞানৰ সকলো বিষয় আয়ত্ব কৰিবলৈ যত্ন কৰিছো। শ্ৰেণীকোঠাৰ ভিতৰতেই হওঁক বা বাহিৰতেই হওঁক শিক্ষকৰ প্ৰতিটো কথা শুনিবলৈ চেষ্টা কৰো । জীৱনত আমি কিমান সফল হ'ব পাৰিম নাজানো।কিন্তু সফলতাৰ বাবে চেষ্টা কৰিম আৰু মই মনত পুহি ৰখা এই সপোনটো বাস্তবত পৰিণত কৰাৰ বাবে চেষ্টা কৰি যাম।

শিক্ষাই মানুহৰ জীৱন পোহৰ কৰে

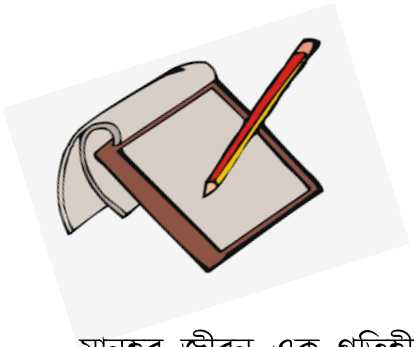

চিন্ময় তামূলী
নৱম শ্রেণী

মানুহৰ জীৱন এক গতিহীন যাত্রা । আমি এই যাত্রা এক অজান পথেৰে অতিক্রম কৰি সম্পূর্ণ কৰো । এই যাত্রা সহজো নহয় আৰু সুষমো নহয় । মানৱ জীৱনৰ এই কঠিন পথটি এক অজান অন্ধকাৰে আৱৰি ৰাখে । এই অন্ধকাৰ কোনো সাধাৰণ প্রদীপে পোহৰাব নোৱাৰে । এই অজান অন্ধকাৰ হৈছে অজ্ঞানতাৰ অন্ধকাৰ । এই অজ্ঞানতাৰ অন্ধকাৰ মাথোন আমি জ্ঞানৰ পোহৰেৰে আঁতৰাব পাৰো । আজিৰ পৃথিৱীৰ প্রজন্ম হৈছে বিজ্ঞানৰ প্রজন্ম। এনে সমাজত অজ্ঞানতাৰ অন্ধকাৰ লৈ ঘূৰি ফুৰিলে আমি পিছ পৰি ৰ'ম। আমি সকলোৱে জানো যে জ্ঞানৰ কোনো অন্ত নাই । ঠিক সেইদৰে এই অন্ধকাৰক শেষ কৰা পোহৰৰো কোনো অন্ত নাই । এই অন্ধকাৰক নাশ কৰিবলৈ আমাক মাথো প্রয়োজন অধ্যয়নৰ । জীৱনত বিশদভাৱে কৰা অধ্যয়নৰ জ্ঞানৰ পোহৰে আমাৰ জীৱন যাত্রাৰ পথ যথেষ্ট উজলাই তুলিব পাৰে।

পূর্বৰ কথা কিছু সুকীয়া আছিল। সমাজত সকলোৰে সৈতে খোজ মিলাই চলিবলৈ প্রয়োজন হোৱা জ্ঞানৰ পোহৰ আমি আমাৰ পৰিয়ালৰ বয়োজ্যেষ্ঠজনৰ পৰা, লগতে সমাজৰপৰাই আহৰণ কৰিব পাৰিছিলো । যৌথ পৰিয়ালৰ ব্যৱস্থা নথকাৰ কাৰণে বর্তমান এনে শিক্ষা আজিৰ ছাত্র-ছাত্রীয়ে পোৱা দেখা নাযায়। আজিৰ যুগত আধুনিক জ্ঞানৰ শিক্ষাৰে শিক্ষিত হৈ আধুনিকতাৰ সৈতে নিজকে খাপ খুৱাব পাৰিব লাগিব । তেতিয়াহে আমি আধুনিকতাৰ পথত আগুৱাই যাব পাৰিম । কিন্তু ই সমভৱ হ'ব যদিহে প্রথমেই আমি আমাৰ নিজৰ জীৱনৰ পথ অজ্ঞান আন্ধাৰৰ পৰা মুক্ত কৰিব পাৰো। এয়া কোনো কঠিন কাম নহয়। আমাৰ সম্পূর্ণ জীৱনৰ সফলতা নির্ভৰ কৰে অধ্যয়নে আৰু জ্ঞান আহৰণৰ ওপৰত। আমাৰ সফলতাতহে সমাজ আৰু দেশৰ উন্নতি । সেইবাবে মানৱ জীৱনৰ পথ উজলাবলৈ মাথো জ্ঞানৰ পোহৰেই যথেষ্ট । আমি প্রতিজনেই যদি এনেদৰেই নিজৰ নিজৰ পথ উজলোৱাৰ দায়িত্ব গ্রহণ কৰো তেনেহ'লে আহিবলগীয়া প্রজন্মৰ সৈতে বিজ্ঞান আৰু প্রযুক্তিবিদ্যাৰ সহায়ত আমি এখন নতুন পৃথিৱীৰ সপোন দেখিব পাৰিম ।

অসমীয়া তৃতীয় বিষয়ৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ মনৰ কথা

সফলতা

ঋষভ ঘোষ
সপ্তম শ্ৰেণী

এই পৃথিৱীত বাৰু কিমান মানুহে সফলতা পায় ? কোনোবাই বাৰু ভাবিছেনে যে সফলতা কেনেদৰে পোৱা যায় । এনেকুৱা বাৰু কি কথা আছে যে যাৰ দ্বাৰা আমি সফলতা লাভ কৰিব পাৰো। প্ৰকৃত কথাটো হ'ল আমি কষ্ট কৰিলেই জীৱনত সফলতা লাভ কৰিব পাৰিম। কেবল কাম কৰাৰ খাটিৰত কাম কৰাতকৈ অতি মনোযোগেৰে কাম কৰিলে সেই সফলতা আৰু সোনকালে পোৱা যায়। কাৰণ পৃথিৱীত বহুত মানুহে কষ্ট কৰা দেখা যায় কিন্তু সফলতা লাভ কৰা দেখা নাযায়। কিয়নো তেওঁলোকৰ প্ৰকৃত ইচ্ছা আৰু মনোযোগৰ অভাৱ। বহুতেই হয়তো ক'ব যে তুমি এইটো নোৱাৰিবা, সেইটো নোৱাৰিবা... কিন্তু তুমি কি পাৰিবা বা কি নোৱাৰিবা সেইটো নিৰ্ভৰ কৰিব তোমাৰ ইচ্ছা আৰু মনোযোগৰ ওপৰত। কোনো মানুহেই কাৰো জীৱন গঢ়ি দিব নোৱাৰে। আমি আমাৰ নিজৰ জীৱন নিজে গঢ়িব লাগিব। নিজৰ জীৱনটো ভাল হলেহে নিজৰ পৰিয়াল বা সমাজখন ভাল হ'ব। অৱশেষত মই এটা প্ৰয়োজনীয় কথা কও যে নিজৰ জীৱনটোৰ লগত যদি নিজৰ পৰিয়ালটোও সুখত থাকিব পাৰে তেনেহলেই জীৱনত সফলতা লাভ কৰা বুলি ক'ব পৰা যায়।

মোৰ ভাইটি

পীয়ূষ পাল
সপ্তম শ্ৰেণী

ভাইটিৰ কথা মোৰ বৰ মনত পৰিছে। সি বহুত সৰু। তাৰ কথা মোৰ বৰ মনত পৰে। কিন্তু কি কৰো উপায় যে নাই। মই ইয়াত থাকো মানে বোৰ্ডিং স্কুলত থাকো। মই অসম ভেলী স্কুলত পঢ়ো। ইয়াত থাকি মই ঘৰৰ কাকো লগ পাব নোৱাৰো। কিন্তু মোৰ লগ পাবলে মন যায়। বিশেষকৈ ভাইটিলৈ মোৰ খুব মনত পৰে। সি বৰ ভাল। ভাইটিয়েও চাগে মোলৈ সিমানেই মনত পেলায়। কেতিয়াবা কথাটো ভাবিলে মোৰ বৰ দুখ লাগে। কান্দি পেলাবৰ মন যায়। কিন্তু মোৰ কোনো উপায়ো নাই। আজি ক্লাছত মোৰ মনলে অহা যিকোনো এটা বিষয়ৰ ওপৰত লিখিবলৈ দিয়া কাৰণে বাৰে বাৰে মোৰ ভাইটিৰ কথা মনলৈ আহিল আৰু সেয়ে মই ভাইটিৰ কথাকে লিখিলো। কাৰণ তালৈ মোৰ বৰ মনত পৰে।

মা

যশ আগৰৱাল

সপ্তম শ্রেণী

মোৰ মা বৰ ধুনীয়া। তেওঁৰ নাম মঞ্জু আগৰৱাল। তেওঁ মোক সদায় প্রশংসা কৰে। মোৰ কেতিয়াবা ভুল হলেও তেওঁ মোক বুজাই দিয়ে। এবাৰ মোৰ জৰ হওঁতে মায়ে মোৰ ওচৰতে বহি মই যি খাম বুলি কলো তাকেই আনি দিলে। মোৰ বৰ ভাল লাগিল। চতুর্থ শ্রেণীলৈকে মায়ে মোক পঢ়ুৱাইছিলে। কিন্তু এতিয়া আমি নিজে পঢ়িব লাগে। কাৰণ মই এতিয়া বোর্ডিং স্কুলত পঢ়ো। মই প্রথম বোর্ডিং স্কুললে আহিবৰ দিনা মায়ে বৰকৈ কান্দিছিলে। মাৰ দুখ লাগিছিল আৰু মোৰো দুখ লাগিছিল। মালৈ মোৰ বৰ মনত পৰে কাৰণ মায়ে মোক বৰ মৰম কৰিছিল আৰু সদায় নতুন নতুন খাদ্য বনাই খুৱাইছিল। মাক মই বৰ ভাল পাওঁ আৰু সদায় সন্মান কৰো।

দেউতালৈ বুলি...

অনুকৃতি কাশ্যপ

সপ্তম শ্রেণী

দেউতা --- আজি মই তোমাৰ বিষয়ে লিখিবলৈ ওলাইছো । শ্রেণীকোঠাত বাইদেৱে যেতিয়া তোমাৰ মনলৈ যি ভাব আহে তাকেই লিখা বুলি ক'লে তেতিয়া মোৰ মনলৈ তোমাৰ কথাই আহিল। তোমাক মই বৰ ভাল পাওঁ। তুমি মোৰ কাৰণে সকলোতকৈ শ্রেষ্ঠ। তুমি মোক বহুত মৰম দিছা। যি লাগে তাকেই দিছা, কেতিয়াও মোক নিৰাশ কৰা নাই। অৱশ্যে ময়ো তোমাক যথেষ্ট ভাল পাওঁ আৰু সন্মান দিওঁ। যদিও কেতিয়াবা তোমাৰ ওপৰত মোৰ বৰ খং উঠে তথাপিও মই তোমাক বৰ ভাল পাওঁ। তুমি ইমান খঙাল নহয় যদিও তোমাৰ যেতিয়া খং উঠে তুমি গোটেই জগতখনেই কঁপাই দিয়া। কিন্তু এটা কথা মই সদায়েই মানো যে তুমি বৰ শান্ত আৰু মৰমিয়াল। মোৰ ভাইটিয়েও তোমাক বৰ ভাল পায়। তুমি কোৱা বহুতো সৰু-সুৰা কথা আৰু কামবোৰলৈ মোৰ বৰ মনত পৰে। বেলেগৰ কাৰণে সেইবোৰ ভাবিবলগীয়া কথা নহয় যদিও মোৰ বাবে সেই আটাইবোৰ কথাৰেই গুৰুত্ব আছে। মোক দিয়া উপদেশ বা মোক কৰা মৰমৰ কাৰণেই মোৰ তোমালৈ অনবৰতেই মনত পৰে। ময়ো তোমাৰ নিচিনা হ'বলৈ বিচাৰিছো দেউতা.....। দেউতা..... তুমি যেতিয়া এইখন পঢ়িবা তেতিয়া তুমি গম পাবা যে মই তোমাক কিমান ভাল পাওঁ-----।

সময়

হর্ষিত তসনিৱাল
অষ্টম শ্রেণী

সময়ৰ বৰ প্রয়োজন। এবাৰ সময় গুছি গ'লে সি কেতিয়াও উভতি নাহে। সময়ৰ কাম আমি সময়ত কৰিব লাগে। সময়ৰ কাম সময়ত নকৰা বাবে মানুহে বহুত অসুবিধাত পৰিবলগীয়া হয়। পিছত সেই কামবোৰে আমাক একেলগে হেঁচা মাৰি ধৰে আৰু আমি একেলগে আটাইবোৰ কাম কৰিব নোৱাৰা হওঁ। ডাঙৰ ডাঙৰ মনীষি সকলেও সময়ৰ বিষয়ে সেই একে কথাকেই কৈ গৈছে। আমি এই আটাইবোৰ কথা বুজি পাও যদিও বহু সময়ত আমি ভুল কৰো । সময়ৰ কাম সময়ত নকৰি পিছত দুখ বা কষ্ট এই আটাইবোৰ পাবলগীয়া হয়। ছাত্র জীৱনত এই সময়ৰ ওপৰত ধ্যান দিয়া উচিত।

অসম

সমর্থ মহত্ব
অষ্টম শ্রেণী

মোৰ ঘৰ অসমত। অর্থাৎ মই অসমত থাকো। অসম খন এখন অতি ধুনীয়া ঠাই। ইয়াৰ প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্য অতি মনোৰম। মোৰ জন্ম অসমতে হৈছিল। পঢ়া-শুনাও মই অসমতে কৰিছো। অসম নামটো শুনিলেই মোৰ অসমৰ এশিঙীয়া গড়ৰ কথা মনলৈ আহে। অসমৰ এশিঙীয়া গড় পৃথিৱী বিখ্যাত। আকৌ অসম বুলি কলে কাজিৰঙাৰ লগতে নানান হাবি-বননি, গছ-গছনিৰ লগতে বিহু, ঢোল, পেঁপা, শংকৰদেৱ, নামঘৰ, কামাখ্যা মন্দিৰ আদিৰ কথাও মনলৈ আহে। অসমখন মই খুউব ভাল পাওঁ।

খেল

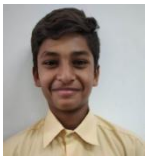

চিৰাগ আগৰৱালা
অষ্টম শ্রেণী

সৰুৰ পৰা ডাঙৰলৈ আমি আটায়ে কিবা নহয় কিবা খেল খেলো । পৃথিৱীত বিভিন্ন ধৰণৰ খেল আছে। সেই খেলসমূহৰ কিছুমানে আমাৰ শৰীৰ আৰু কিছুমানে আমাৰ মগজু সুস্থ কৰি ৰাখে। আমি সাধাৰণতে ক্রিকেট, ফুটবল, ভলীবল, বাস্কেটবল, বেডমিন্টন আদি খেলৰ যোগেৰে স্বাস্থ্য ভালে ৰাখিব পাৰো। খেলিলে মনটো ভাল লাগে আৰু আমি শক্তি পাওঁ। খেলাৰ লগে লগে আমি যোগ বা প্রাণায়াম আদিও কৰিব লাগে। যোগ আৰু প্রাণায়ামে আমাৰ শৰীৰ আৰু মন দুয়োটাই সুস্থ ৰাখে । খেলা-ধূলাৰ মাজেৰে আমি আনন্দ ফূর্তিও লাভ কৰিব পাৰো।

বাতৰি কাকত

বংশীকা শর্মা
অষ্টম শ্রেণী

ৰাতিপুৱাই অহা বাতৰি কাকতখন যে আমাৰ কিমান জৰুৰী। পৃথিৱীখনত নো কি হৈ আছে বা কি চলি আছে সেই সকলো কথাৰ গম আমি বাতৰি কাকত খন পঢ়িলেই জানিব পাৰো। বিভিন্ন ভাষাৰ বাতৰি কাকত আছে যদিও প্রত্যেক মানুহেই নিজৰ নিজৰ ভাষাৰ বাতৰি কাকত খন পঢ়ি বৰ ভাল পায়। কাৰণ নিজৰ ভাষাৰ বাতৰি কাকত খন পঢ়ি সকলোৱে সুবিধা পায়। বর্তমান ছাত্র-ছাত্রীসকলে বাতৰি কাকতখন হাতত লৈ পঢ়া দেখা নাযায়। তেওঁলোকৰ বাতৰি কাকত পঢ়াৰ প্রতি মনোযোগ নাই। কাৰণ আজি কালি সকলো খবৰ ইণ্টাৰনেটৰ যোগেদি মোবাইলত হাততেই পোৱা যায়। কিন্তু সাধাৰণ জ্ঞান পাবৰ বাবে বা দেশৰ খবৰ জানিবৰ বাবে আমি দৈনিক বাতৰি কাকতখন পঢ়া অভ্যাস কৰিব লাগে। কাৰণ মোবাইলত আমি বিচৰা খবৰটোহে পাম, কিন্তু বাতৰি কাকতখনত একেলগে আটাইবোৰ খবৰ নিবিচাৰিলেও হাততে পাম। সেয়ে আমি সদায় বাতৰি কাকত পঢ়িব লাগে।

কি কৰিম

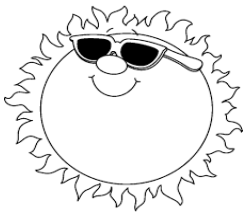

সিদ্ধি গুপ্তা
অষ্টম শ্রেণী

বৰ গৰম কাৰণে গৰমৰ দিনকেইটা আমি খুব বেয়া পাওঁ, কিন্তু গৰম দিনত ওলোৱা আম, কঠাল, জাম আদি খাই বৰ ভাল লাগে। গৰমত বাহিৰত ওলাই ফুৰিবলে বৰ বেয়া লাগে কিন্তু ঘৰৰ ভিতৰত এ. চি. টো চলাই বহি থাকিবলে বৰ ভাল লাগে। গৰমৰ দিনকেইটাত জৰ , কাহ , চর্দি আদি বেমাৰ আজাৰো যথেষ্ট হোৱা দেখা যায়, কিন্তু কি কৰিম সদায় আইচ ক্রীম, ঠাণ্ডা ফলৰ ৰস , পেপচি, কোকাকোলা আদি নেখালে দেখোন গৰমটো কমিয়েই নাহে। সেয়ে গৰমৰ দিনকেইটা বৰ বেয়া পাও যদিও ভাল লগা খাদ্যবোৰ খাবলৈ পাওঁ কাৰণে বৰ ভালো পাওঁ । বুজি নাপাওঁ এতিয়া কি কৰিম?

ব্লেকহ'ল

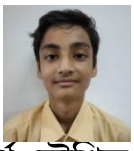

কৃতার্থ কৌশিক
সপ্তম শ্রেণী

আমাৰ বিশ্বব্রহ্মাণ্ডখন সূর্য্য, তৰা , গ্রহ, নক্ষত্রৰে গঠিত। এই বিশ্বব্রহ্মাণ্ডতেই আমি বাস কৰা পৃথিৱীখনো আছে । আমাৰ বিশ্বব্রহ্মাণ্ডখনৰ ভিতৰতেই থকা ব্লেকহ'লৰ বিষয়ে আজি মই লিখিবলৈ ওলাইছো । ব্লেকহ'ল বা কৃষ্ণগহ্বৰ এনে এক শক্তি যে তাৰ ভিতৰলৈ কোনোধৰণৰ বস্তু এবাৰ প্রবেশ কৰিলে বাহিৰলৈ ওলাই আহিব নোৱাৰে। এই স্থানত মহাকর্ষণীয় বলৰ মান ইমান বেছি হয় যে কোনোধৰণৰ বস্তু এবাৰ ইয়াত প্রবেশ কৰিলে বাহিৰলৈ ওলায় আহিব নোৱাৰে আৰু কোনো বস্তুৱেই ইয়াক পাৰ কৰি যাব নোৱাৰে । কোনো বস্তুৰ ভৰ প্রয়োজনতকৈ বেছি হ'লে সেই বস্তু স্বাভাৱিক অৱস্থাত নাথাকে , সেইদৰে ব্লেকহ'ল বা কৃষ্ণগহ্বৰবো যথেষ্ট ভৰ আছে । ব্লেকহ'ল নাম হোৱাৰ কাৰণ হ'ল যে ই নিজৰ দিশলৈ অহা সকলো পোহৰ বা ৰশ্মি নিজৰ দিশলৈ টানি লয় আৰু ঘূৰি যাব নোৱাৰে । যেতিয়া কোনো ডাঙৰ তৰাৰ বিস্ফোৰণ হয় তাৰ কিছু অংশক চুপাৰনেৰা কয়। বিস্ফোৰণ হোৱা তৰাবোৰৰ অংশ লগ লাগি এটা ৰূপ লয় যাক নিউট্রনষ্টাৰ বোলে, এই নিউট্রনষ্টাৰবোৰেই একেলগ হৈ ব্লেকহ'ল বা কৃষ্ণগহ্বৰৰ সৃষ্টি হৈছে বুলি বিজ্ঞানীসকলে জনাইছে । কোনো কোনো ব্লেকহ'ল আমাৰ সূর্য্যতকৈ প্রায় ১০ গুণ ডাঙৰ আৰু আকৌ কোনোটো ৭০০ কোটিগুণতকৈও ডাঙৰ । এলৰ্বাট আইনষ্টাইনৰ ''General Theory of Relativity '' ৰ লগত সংগতি ৰাখি বহু বিজ্ঞানীয়ে ব্লেকহ'লৰ ধাৰণা কৰিছে । বিজ্ঞানীসকলে এই সম্পর্কত বর্তমানেও পৰীক্ষা নিৰীক্ষা কৰি থকাৰ কথা আমি জানিব পাৰিছো আৰু ভৱিষ্যতে আমি মহাকাশৰ এনেধৰণৰ বহু ৰহস্যপূর্ণ কথা জানিব পাৰিম বুলি আশা কৰিছো।

গছ

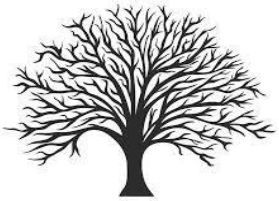

কৃষ্টি পাঠক
অষ্টম শ্রেণী

গছৰ পৰা আমি বহুত উপকাৰ পাওঁ। গছে আমাক ফুল-ফল দিয়াৰ উপৰিও গছৰ পৰা আমি কাঠ বা খৰীও পাওঁ। গছে প্রকৃতিখন শুৱনি কৰি ৰাখে। চাৰিওফালে থকা গছৰ সেউজীয়া ৰঙে পৰিবেশ মধুৰ কৰে । সেয়ে আমি গছ ৰুব লাগে। কেতিয়াও কাটিব নালাগে। গছে আমাক ছাঁ দিয়ে, বতাহ দিয়ে, বিভিন্ন চৰাই-চিৰিকটিয়ে গছত বাঁহ সাজে, নানান পোক-পতংগই গছত আশ্রয় লৈ থাকে আৰু সকলোতকৈ ডাঙৰ কথা গছে আমাক উশাহ-নিশাহ লোৱাত সহায় কৰে । অর্থাৎ গছৰ পৰা আমি অক্সিজেন পাওঁ। গছে আমাক বহুত কিবা-কিবি দিয়ে , আমি মাথোঁ গছ নাকাটি গছজোপাক প্রাণ হে দিব লাগে।

কিমান প্রয়োজন ---

ফাৰিহা জামান
অষ্টম শ্রেণী

আমি প্রত্যেকেই জানো যে পানী আমাৰ কাৰণে কিমান প্রয়োজনীয়। পানী এনেকুৱা এবিধ জুলীয়া পদার্থ যাৰ কোনো ৰঙ নাই , কিন্তু পিয়াহৰ পানীটুপি খালেই এনেকুৱা লাগে যেন অমৃতহে পান কৰিছো। যদিও আমি অমৃত খাই পোৱা নাই। বর্তমান খোৱা পানীৰ বৰ অভাৱ হৈ পৰিছে। মাটিৰ তলত থকা পানীৰ স্তৰ ক্রমান্বয়ে কমি আহিছে। কাগজে পত্রই বা দূৰদর্শনত এই বিষয়ে নানান আলোচনাও হৈছে। বিজ্ঞানীসকলে এই বিষয়ে নানান অভিযান চলাই এই মতত উপনীত হৈছে যে আমি যদি গছ ৰুব পাৰো তেনেহ'লে আমি মাটিৰ তলৰ পানী প্রচুৰ পৰিমাণে পাব পাৰো। আমি অবাবতে যথেষ্ট পানী পেলাও। যাৰ কাৰণে আমি এতিয়া বিপদৰ সন্মুখীন হ'বলগীয়া হৈছে। জধে-মধে গছ কটাৰ বাবে আৰু পানী খৰছ কৰাৰ বাবে আমাৰ অসুবিধাৰ সৃষ্টি হৈছে । পানী শুকাই শুকান হৈ যোৱা বাবে আৰু গছ-গছনি কাটি জীৱ-জন্তু থকা মেলাত অসুবিধা হোৱা কাৰণে আমিও আজি-কালি সঘনাই সেইবোৰৰ পৰা অসুবিধাত পৰিবলগীয়া হৈছে। সেয়ে আমি গছ ৰুব লাগে আৰু পানী বচাব লাগে।

তোমালে বৰ মনত পৰে---

অধ্যয়ন শইকীয়া
ষষ্ঠ শ্রেণী

মোৰ মা বহুত ভাল। মই মাক বৰ ভাল পাওঁ। মই হোষ্টেলত থাকো। মাৰ পৰা মই বহুত দূৰত থাকো । সেইকাৰণে মালৈ মোৰ বৰ মনত পৰে। মা নহ'লে মই থাকিব নোৱাৰো। বাৰে বাৰে মোৰ মাৰ ওচৰলৈ যাবলৈ মন যায়। কিন্তু উপায় নাই , হোষ্টেলত থাকি সদায় মাক লগ পোৱাটো সম্ভৱ নহয়। কেতিয়াবা মোৰ খুব কান্দিবলে মন যায়। কিন্তু কান্দিবও নোৱাৰো । বৰ কষ্ট পাওঁ । যা হওঁক--- তোমাৰ ওচৰলে যাবলৈ আৰু তোমাক লগ পাবলৈ বৰ মন যায় মা --- । তুমি জগতৰ সকলোতকৈ শ্রেষ্ঠ মা। তোমাক মই বৰ ভাল পাওঁ।

মেছী

জায়ান আবিৰ
ষষ্ঠ শ্রেণী

মই খেলি বৰ ভাল পাওঁ । মোৰ প্রিয় খেল হৈছে ফুটবল। ফুটবল খেলি মই আনন্দ অনুভৱ কৰো। মোৰ প্রিয় খেলুৱৈ হ'ল লিয়োনেল মেছী। মেছীৰ খেল চাই মই বৰ ভাল পাওঁ। মোৰ মতে পৃথিৱীৰ ভিতৰতে সর্বশ্রেষ্ঠ খেলুৱৈ হ'ল মেছী। তেওঁৰ খেলাৰ ষ্টাইল মই বৰ ভাল পাওঁ আৰু ময়ো তেনেদৰে খেলিবলৈ চেষ্টা কৰো। ফিফা বিশ্ব কাপৰ ফাইনেল খেলত তেওঁ তিনিটাকৈ গোল দি সুন্দৰ খেল প্রদর্শন কৰি শ্রেষ্ঠ খেলুৱৈৰ সন্মান পাইছিল। । মই সেই খেলখন বাৰে বাৰে চাবলৈও আমনি নাপাওঁ। ময়ো এদিন ডাঙৰ হৈ মেছীৰ নিচিনা খেলিব পাৰিম বুলি আশা ৰাখিছো আৰু তেনেদৰে কষ্ট কৰি খেলিও আছো।

মহাকাশৰ বিষয়ে

মংগল গ্রহত জীৱন থকাৰ সম্ভাৱনা

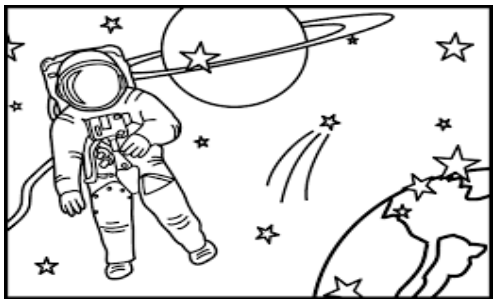

মানস কেলেং
সপ্তম শ্রেণী

বিশ্বব্রহ্মাণ্ড হৈছে স্থান আৰু কাল সম্বন্ধীয় সমস্ত বিষয়।পৃথিৱীৰ অন্যান্য সমস্ত গ্রহ,সূর্য তথা অন্যান্য তৰা আৰু নক্ষত্র, জ্যোতিবলয়ৰ স্থান আৰু তাৰ অন্তর্বর্তী গুপ্ত পদার্থ, যিবোৰ এতিয়াও তাত্বিকভাৱে জ্ঞাত কিন্তু সঠিককৈ পর্যবেক্ষিত নহয়- এইধৰণৰ সকলো পদার্থ আৰু শক্তি লগ লাগি যি জগত তাকেই মহাবিশ্ব বা বিশ্বব্রহ্মাণ্ড বোলা হয়।

সূর্যক কেন্দ্র কৰি চাৰিওফালে প্রদক্ষিণ কৰি থকা ৮টা গ্রহ ক্রমে বুধ , শুক্র , পৃথিৱী, মংগল, বৃহস্পতি, শণি, ইউৰেনাচ আৰু নেপচুনৰ লগতে সিহঁতৰ উপগ্রহসমূহ, গ্রহবোৰৰ মাজত অৱস্থান কৰি থকা অসংখ্য গ্রহাণু আৰু সূর্যৰ লগত মহাকর্ষণ শক্তিৰ বলত বান্ধ খাই ইয়াক প্রদক্ষিণ কৰি থকা সকলো মহাজাগতিক পদার্থক একেলগে সৌৰজগত বোলে আৰু আমি এই সৌৰজগতৰ তৃতীয়তম গ্রহ ,অর্থাৎ পৃথিৱীৰ বাসিন্দা ।

মই আজি এই সৌৰজগতৰ চতুর্থ গ্রহ ,মংগল গ্রহৰ বিষয়ে অলপ লিখিবলৈ ওলাইছো । বৈজ্ঞানিকসকলৰ গৱেষণাত মংগল গ্রহত পানীৰ অস্তিত্ব থকাৰ কথা প্রমাণিত হৈছে। মংগল গ্রহটোক পৃথিৱীৰপৰা ৰঙা বৰণৰ দেখি ।এই গ্রহটোৰ ভূ-ত্বক পৃথিৱীৰ ভূ-ত্বকৰ সৈতে বহুখিনি মিল আছে । ইয়াত অতি ক্ষীণ বায়ুমণ্ডল আছে । পৃথিৱীৰদৰে আগ্নেয়গিৰি , মৰুভূমি আৰু মেৰুদেশীয় বৰফো আছে । সৌৰজগতগতৰ সর্ববৃহৎ পাহাৰ আৰু গিৰিখাদটোও ইয়াতে আছে । ১৯৯৬ চনত অৰবিটাৰ কেমেৰাৰ সহায়ত মংগলৰ কিছু ছবি তোলা হৈছিল । ইয়াৰপৰা মংগলত তৰল পানীৰ অস্তিত্বৰ কথা জানিব পাৰি । মংগল গ্রহ আৰু পৃথিৱীৰ প্রায়ে মিল থকালৈ চাই মংগলত প্রাণী অথবা জীৱন থকাৰো সম্ভাৱনাৰ কথা বিজ্ঞানীসকলে কৈছে যদিও এতিয়াও কোনো তথ্য লাভ কৰা নাই ।

মোৰ মহাকাশ যাত্রা

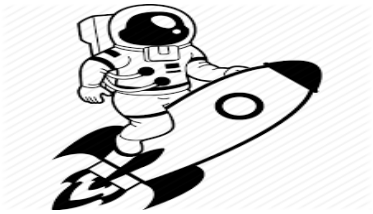

ভিষাজ গোস্বামী

অষ্টম শ্রেণী

দহ ,ন , আঠ , সাত, ছয়, পাঁচ , চাৰি , তিনি , দুই ,এক --- হঠাৎ এটা প্রকাণ্ড জোকাৰণি তাৰপিছত এসোপা বগা ধোৱাই আমাক চাৰিওফালৰপৰা আৱৰি ধৰিলে । কি হ'ল ভালকৈ বুজি পোৱাৰ আগতেই আমি বোধকৰো পৃথিৱীৰ পৰা বহুত দূৰ আতৰি আহিলো । আমি মানে মই বিজ্ঞানী ডঃ বৰুৱা ,সংগীতকাৰ প্রণামী বাইদেউ, বিখ্যাত ফুটবল খেলু�ৰে প্রাণেশ্বৰ বসুমতাৰী আৰু এটা কুকুৰ ভাৰাক । ASRO (Assam Space Research Organisation) অসম মহাকাশ গৱেষণা সংস্থা, আচলতে ডঃ তৰুণ চন্দ্র গগৈৰ একক প্রচেষ্টাত সৃষ্টি হোৱা এই সংস্থাটো বর্তমান পৃথিৱী বিখ্যাত হৈ পৰিছে । ডঃগগৈ এজন নাচাৰ বৈজ্ঞানিক আছিল । তাৰপৰা ভাৰতলৈ আহি তেওঁ 'ইচৰো'ৰ মুখ্য বৈজ্ঞানিকৰূপে কাম কৰিছিল। এতিয়া অৱসৰ লোৱাৰ পিছত নিজৰ জন্মভূমি অসমলৈ আহি এটা গৱেষণাকেন্দ্র যোৰহাটত স্থাপন কৰিছে । মুখ্যমন্ত্রী সোণোৱাল দেৱৰ সহায়ত সংস্থাটোৱে যথেষ্ট উন্নতি কৰিবলৈ সক্ষম হৈছে।

২০১৮ চনত অসম চৰকাৰে 'এচৰ'ৰ দ্বাৰা মহাকাশলৈ এখন মহাকাশযান পঠোৱাৰ সিদ্ধান্ত লৈছিল। ইয়াক লৈ বহুজনে সমালোচনা কৰিলেও ডঃ গগৈৰ ওপৰত আছিল সকলোৰে অগাধ বিশ্বাস । মহাকাশলৈ কোন কোন যাব তাক লৈ বিভিন্ন মহলে পৰামর্শ দিয়াত সিদ্ধান্ত লোৱা হ'ল যে এজন বিজ্ঞানী, এজন সংগীতকাৰ, খেলজগতৰপৰা এজন আৰু লগতে এজন ছাত্রও যাব লাগে। মহাকাশলৈ যাবলৈ কেৱল ইচ্ছা আৰু সাহস থাকিলেই নহ'ব । শাৰীৰিকভাৱেও সুস্থ হ'বও লাগিব। সেইবাবে যথেষ্ট পৰীক্ষা কৰা হয়। একো নভবা নিচিন্তাকৈ মই মোৰ নামটো দি দিছিলো মহাকাশৰপৰা পৃথিৱীখন চাবলৈ মোৰ বৰ হেঁপাহ আছিল । এই পৰীক্ষা দিবলৈ যাওঁতে মোৰ লগৰবোৰে হাঁহিছিল ,কিন্তু আচৰিতধৰণে ঈশ্বৰৰ কৃপাত মোৰ নামটো নির্বাচন কৰা হ'ল । ৰাতিটোৰ ভিতৰতেই মই বিখ্যাত হৈ পৰিলো । লগৰ বোৰেও মোক মই পাগল হৈছো নেকি সুধিলে। ক'লে যে 'জাননে দহ কৌটি বছৰলৈ তই পৃথিৱীৰ চাৰিওফালে ঘূৰি থাকিবি ?' পৰিয়ালৰ মানুহবোৰেও মোক যাবলৈ কোনোকাৰণতে পৰামর্শ নিদিলে । মাৰ অৱস্থাই নাই। দিনে

ৰাতিয়ে কেৱল কান্দিছে । দেউতা কিন্তু মোৰ দৰেই অটল । তেওঁৰ মতে প্ৰত্যক মানুহেই জীৱনত এবাৰ প্ৰত্যাহ্বান গ্ৰহণ কৰিবই লাগিব। যদিহে মই নাযাওঁ তেনেহ'লে বেলেগ কোনোবা যাব । মই যামেই , যি হয় হ'ব ।

তাৰপিছত ? এতিয়া মই মহাকাশত । ঘড়ীটোলৈ চালো। বাৰটা বাজি পোন্ধৰ মিনিট । দিনৰ নে ৰাতিৰ ধৰিবই নোৱাৰি । মহাকাশত দিন ৰাতি নাই । হঠাৎ প্ৰণামী বাইদেৱে চিঞৰিলে , 'চোৱাহিচোন ইয়াৰপৰা আমাৰ পৃথিৱীখন কিমান সুন্দৰ দেখি' । মই যাবলৈ বুলি উঠোতে বৰ বিমোৰত পৰিলো । মোৰ গাৰ ওজন একেবাৰে নাই। মই লাহে লাহে উৰি যোৱাদি গ'লো। বাঃ, কি মজা । মোৰ লগে লগে ভাৰাকেও উৰি আছে । সিও বৰ আনন্দ পাইছে। আমাৰ পৃথিৱীখন কিমান যে সুন্দৰ । যেন এখন নীলা চাদৰে সেউজীয়া পৃথিৱীখন মেৰাই থৈছে। উত্তৰ আৰু দক্ষিণ মেৰুৰ বৰফবিলাক সূৰ্যৰ পোহৰত চিকমিকাই আছে । পাহাৰবিলাক দেখিবলৈ একোডাল দীঘল সাপৰ দৰে । ভাৰতবৰ্ষখন বৰ সৰু, অসমখন দেখা নাপালোৱেই । বগা বগা ডাৱৰবোৰে ঢাকি থৈছিল ।মই আগফালে গৈ জোনটো চালো । জোনটো পৃথিৱীতকৈ সৰু। তাত ডাঙৰ ডাঙৰ গাঁত দেখা পালো । সেই গাঁতবোৰক আইতাই তুলসী গছ বুলি কৈছিল । আচলতে সেইবোৰ জোনৰ গাত থকা একো একোটা ডাঙৰ গাঁত । মহাশূণ্যৰ মাজেদি পোহৰ আহিব পাৰিলেও শব্দ তৰঙ্গ আহিব নোৱাৰে ।সেইবাবে এটা বিশেষ যন্ত্ৰৰ সহায়েৰে আমি আটাইকেইজন মহাকাশচাৰীয়ে কথা পাতিছিলো । ডঃ বৰুৱাই আমাক মাজে মাজে খবৰবোৰ দি থাকে । পৃথিৱীখনৰ লগত যোগাযোগ কৰি তেওঁ মহাকাশযানখনৰ প্ৰয়োজনীয় কামকাজবোৰ কৰি থাকে । তেওঁ বিভিন্নধৰণৰ পৰীক্ষা নিৰীক্ষাবোৰ কৰি থকা দেখা পাওঁ ।

এনেদৰে কেইবাদিনো পাৰ হৈ গ'ল । এদিন ডঃ বৰুৱা চাৰে ক'লেহি যে আমাৰ পৃথিৱীলৈ ঘূৰি যোৱাৰ সময় পালেহি । পিছে এটা সমস্যা আছে । যানখন গৈ ক'ত পৰিব তাৰ সঠিক গণনা কৰিব পৰা হোৱা নাই। যদি সাগৰত পৰে তেন্তে কোনো অসুবিধা নহয় । কিন্তু মাটিত পৰিলে আমাৰ এজনো বাচিব নোৱাৰিম সম্ভৱ । হঠাৎ এনে লাগিল যেন ভূমিকম্পৰ দৰে ? যানখন জোকাৰি উঠিল । মই ভয়তে ভাৰাকক সাৱটি ধৰিলো । তাৰপিছত কিবা এটা জোৰেৰে আহি মোৰ গালত পৰিলহি । খকমককৈ উঠি বহিলো । গাৰুটো সাৱটি ধৰি আছো । সন্মুখত মা, ''কি হ'ল তোৰ ? মুখেৰে কি বৰবৰাই আছ' ? কেইটা বাজিল খবৰ আছেনে ? হ'মৱৰ্কবোৰ কৰিব লাগে নে নালাগে ?'' আঃহ ,তাৰমানে মই সপোনহে দেখিছিলো । বুকুখন এতিয়াও কঁপি আছে । সপোনতে মই হ'মৱৰ্ক কৰিলো হ'বলা । গৰমৰ বন্ধত আমাক মহাশূণ্যৰ বিষয়ে এখন ৰচনা লিখিবলৈ দিছিল। কিনো লিখিম তাকে ভাবি থাকোতেই যোৱা ৰাতি টোপনি আহিল । টোপনিতে মই মহাশূণ্যত কেইবাদিনো থাকি আহিলোগৈ । কি মজাৰ অভিজ্ঞতা ....। বাঃ বাইদেউ আপোনাক ধন্যবাদ । আপোনাৰ হ'মৱৰ্কটোৰ কাৰণেই আজি মহাশূণ্যত এসপ্তাহ থাকি অহাৰ অভিজ্ঞতা লাভ কৰিলো ।

জোনবাই

ভায়োলিনা বৰুৱা
সপ্তম শ্রেণী

আমি সকলো এই বিশ্বব্রহ্মাণ্ডৰ বাসিন্দা । এই ব্রহ্মাণ্ডত বহুতো জীৱ অণুজীৱই বাস কৰে । ওপৰলৈ চালে আমি যিখন আকাশ দেখো , সেইখনেই হৈছে মহাশূণ্য। এই মহাশূণ্যৰ বিষয়ে অতীতৰেপৰা বহুতো বিজ্ঞানীয়ে জানিবলৈ অধ্যয়ণ কৰিবলৈ চেষ্টা চলাই আহিছে । এই মহাকাশ বা মহাশূণ্য অতি ৰহস্যপূর্ণ । এই মহাকাশৰ হাজাৰ হাজাৰ গ্রহ নক্ষত্রৰ ভিতৰৰ এটা গ্রহ হৈছে আমি বাস কৰা এই পৃথিৱীখন । এই পৃথিৱীখনৰ উপৰিও যি সমূহ গ্রহ নক্ষত্র আছে সেইসমূহৰ বিষয়ে অধ্যয়ন কৰিবলৈ মোৰ বৰ মন যায় ।

এই মহাকাশত দেখা পোৱা গ্রহ উপগ্রহসমূহৰ ভিতৰত জোনবায়ে মোক সদায় আকর্ষিত কৰি আহিছে। সৰুৰেপৰাই সন্ধিয়াৰপৰা পুৱঁতি নিশালৈকে দেখা পোৱা এই জোনবাইক মোৰ এবাৰ চুই চাবলৈ বৰ মন যায়। সৰুৰেপৰা আইতা ককাহঁতৰ মুখত শুনি অহা জোনবাই সম্পর্কীয় গীত-মাতবোৰেও মোক আকর্ষিত কৰে । জোনবাইৰ গাত দেখা পোৱা সেই ক'লা দাগবোৰৰ বিষয়ে জানিবলৈও মোৰ মন যায়। লাহে লাহে মই জোনবাইৰ বিষয়ে অধ্যয়ন কৰিবলৈ চেষ্টা কৰিছো আৰু অধ্যয়ন কৰি জানিব পাৰিছো যে জোনবাই হৈছে প্রাকৃতিকভাৱে স্থায়ী একমাত্র উপগ্রহ আৰু সৌৰজগতৰ পঞ্চমটো বৃহৎ উপগ্রহ । জোনবাইৰ দেশত প্রথম ভৰি থোৱা মহাকাশ বিজ্ঞানীজন হৈছে নীল আর্মষ্ট্রং । ১৯৬৯ চনৰ ২৪ জুলাইৰ দিনা নীল আর্মষ্ট্রঙে জোনবাইৰ দেশত ভৰি দি মুঠ ২১ ঘণ্টা ৩২ মিনিট সময় এই জোনবাইৰ দেশত কটাইছিল । এই উপগ্রহটো সম্পূর্ণৰূপে শিল আৰু বালিৰে ভৰপূৰ ।পৃথিৱীৰপৰা জোনৰ দূৰত্ব হৈছে ৩৮৪,৪০০ কিলোমিটাৰ । বায়ু আৰু পানী নোহোৱাৰ বাবে জোনত কোনো জীৱই বাস কৰিব নোৱাৰে । আনহাতে জোনৰ উষ্ণতাৰ হাৰ উচ্চতম ২৬০ ডিগ্রী ফাৰেণহাইট আৰু উষ্ণতা নিম্নগামী হৈ ২৮০ডিগ্রী ফাৰেণহাইট হয় । দিনৰভাগত জোনত অতিমাত্রা গৰম হোৱাৰ বিপৰীতে ৰাতিৰভাগত ইয়াৰ তাপমাত্রা অতি নিম্নগামী হয়। বিভিন্ন সময়ত বিভিন্ন বিজ্ঞানীয়ে জোনবাইৰ দেশত ভৰি দি অধ্যয়ন চলাই আহিছে সেইসকল সফল বিজ্ঞানীৰ দৰে মোৰো জোনৰ বিষয়ে বিশদভাৱে জানিবলৈ বৰ মন যায় । সময়ৰ লগে লগে মই জোনৰ বিষয়ে তথা বিশ্বব্রহ্মাণ্ডৰ বিষয়ে আৰু অধিক খৰচি মাৰি জানিবলৈ আৰু অধ্যয়ন কৰিবলৈ চেষ্টা কৰিম ।

গল্পৰ কৰণিত

মা আৰু মই

জীৱিথা শীল
নৱম শ্ৰেণী

আমাৰ বিদ্যালয়ত শিশু দিৱস বৰ সুন্দৰ ভাৱে পালন কৰা হয়। যোৱা বছৰৰ শিশু দিৱসো বৰ উলহ-মালহেৰে পালন কৰা হৈছিল । মই ৰং মনেৰে বিদ্যালয়লৈ যাবলৈ ওলালো। লগৰ বন্ধুসকলে মোক ম'বাইল নিবলৈ কৈছিল বুলি আগদিনা ৰাতিয়েই মই মাক কলো । মায়ে কোনো উত্তৰ নিদিলে। পিছদিনা স্কুললৈ যোৱাৰ আগত মাক ফোনটোৰ কথা সোধাত মায়ে একেবাৰতে নিদিও বুলি ক'লে । মাৰ তেনে উত্তৰত মোৰ বৰ খং উঠিল । মাক ইয়াৰ কাৰণ সোধাত ক'লে যে স্কুললৈ ফোন নিয়াতো নিয়ম নহয় । খঙতে মাক কলো, 'সকলোৰে মাকে যদি দিব পাৰে তুমি কিয় দিব নোৱাৰা মা' বুলি চিঞৰি উঠিলো । 'তোমাৰ ভালৰ বাবে মাজনী , কেনেবাকৈ যদি তুমি ধৰা পৰা বহুত ডাঙৰ কথা হব।' বহুতবাৰ মাক চেষ্টা কৰাৰ পিছতো মায়ে ফোনটো নিদিলে । 'তুমি কেৱল মোৰ বেয়া বিচাৰা, মই দুখ পালেই তুমি সুখী হোৱা '--- এনেদৰে মাক বহুত বেয়াকৈ কৈ খঙত ঘৰৰপৰা ওলাই আহিলো।

স্কুলত আহি গম পালো লগৰ সকলোৱে মবাইল ফোন আনিছে । মনটো আৰু বেছি বেয়া লাগি গ'ল । লগৰ সকলোৱে লুকাই লুকাই য'ত ত'ত ফটো তোলাত ব্যস্ত । মই অকলে বেজাৰত বহি অনুষ্ঠান উপভোগ কৰিবলৈ চেষ্টা কৰিলো। অলপ সময়ৰ পাছত লগৰ ল'ৰা এজন আহি ক'লে যে শিক্ষকে মবাইলফোন অনাৰ কথা গম পাইছে, গতিকে তোমাৰ ফোনটো সোনকালে লুকুওৱা । সকলোৱে ভয়তে ম'বাইল ফোনবোৰ লুকুৱাবৰ বাবে ঠাই বিচাৰি ফুৰিবলৈ ধৰিলে । কোনো কোনোৱে বেগৰ ভিতৰত লুকুৱাই জোপোহাৰ আঁৰত লুকুৱাই থ'লে । শিক্ষকসকলে আহি সকলোতে বিচাৰিবলৈ ধৰিলে । জোপোহাৰ আঁৰত লুকুৱাই থোৱা বেগটোৰ লগতে আন আন ঠাইত লুকুৱাই থোৱা ম'বাইল ফোনবোৰ বিচাৰি পালে । মই আৰু দুজনে ম'বাইল ননাৰ কথা প্ৰমাণ হ'ল । শিক্ষকে আমাক ভাল ল'ৰা-ছোৱালী বুলি ক'লে । বাকী সকলোৰে ফোনবোৰ তেওঁলোকে ৰাখি থ'লে আৰু মাক দেউতাকক স্কুললৈ মাতি পঠিয়ালে । সকলোৱে কান্দি কাটি হুলস্থূল কৰিলে । সেইসময়ত মই ৰাতিপুৱা মাক বেয়াকৈ কোৱাৰ বাবে অনুশোচনাত ভুগিলো । স্কুল ছুটি হোৱাৰ পিছত মই ঘৰ আহি পাই দেখো যে মায়ে মই ভালপোৱা মাংসৰ তৰকাৰী ৰান্ধি আছে । মুখেৰে একো নোকোৱাকৈ মাক পিছফালৰপৰা

জোৰেৰে সাৱটি ধৰিলো ।‘ কি হ’ল মাজনী’- মায়ে সুধিলে । মোৰ চকু দুটা চলচলীয়া হৈ গ’ল । ‘মা মোক ক্ষমা কৰা , মই তোমাক বেয়াকৈ ক’ব নালাগিছিল । আজি তুমিহে মোক বচালা ’। মাক দিনটোৰ সকলো কথা ক’লো । মায়ে মোক মৰমেৰে মূৰত হাত বুলাই সুধিলে ‘আজিৰপৰা মোৰ সকলো কথা শুনিবা নে ?’ মই মূৰ জোকাৰি মাৰ কথাত সন্মতি দিলো আৰু মনে মনে এনে এগৰাকী মা পোৱাৰ বাবে ভগৱানক অশেষ ধন্যবাদ জনালো ।

সোণপাহী

খ্যাতি বৰা
চতুর্থ শ্রেণী

এসময়ত এখন দেশত এজন ৰজা আছিল। তেওঁৰ তিনিজন ল’ৰা আৰু এজনী মৰম লগা ছোৱালী আছিল। তাইৰ নাম আছিল সোণপাহী । তাই সৰুৰে পৰা বৰ জ্ঞানী আৰু সাহসী। কিন্তু ল’ৰাকেইজন অহংকাৰী আৰু অকামিলা আছিল। চাৰিওটা লাহে লাহে ডাঙৰ হৈ আহিল। ইপিনে ল’ৰাকেইটা দিনে দিনে বহুত বেছি সোৰোপা আৰু বেছি অহংকাৰী হৈ আহিবলৈ ধৰিলে। ৰজাও লাহে লাহে বুঢ়া হৈ আহিল। ৰজাই ডাঙৰ ল’ৰাটোক ৰজা পাতিম বুলি মনে মনে ঠিৰাং কৰিলে। এই কথা ডাঙৰ ল’ৰাটোৱে গম পাই আৰু বেছি অহংকাৰী হৈ পৰিল আৰু উদ্ভাণ্ডালি কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে। আনহাতে সৰু ল’ৰা দুজনো ককায়েকৰ লগত লগ লাগি জনসাধাৰণক বহুত অত্যাচাৰ কৰিবলৈ আৰম্ভ কৰিলে। দেশৰ প্রজাসকল অতীষ্ঠ হৈ পৰিল আৰু ৰজাৰ ওচৰ চাপিলে। ৰজাই কথাটো ভাবি চিন্তি সিদ্ধান্ত ল’লে যে তেওঁৰ মৃত্যুৰ পাছত দেশৰ ৰাণী তেওঁৰ একমাত্র ছোৱালী সোণপাহী হ’ব। কাৰণ তেওঁৰ তিনিজন ল’ৰাৰ এজনো যোগ্য নাছিল । গতিকে তেওঁ দেশখন উপযুক্ত পাত্রীৰ হাতত গটাই মৃত্যু বৰণ কৰাৰ আগতেই মূর্খ পুত্রসকলক দেশৰ পৰা বহিষ্কাৰ কৰিলে । অধিক অহংকাৰৰ বাবেই তিনিওজন লৰাৰ পতন হ’ল।

বিপদৰ বন্ধু

টানিষ্কা কৃষ্ণাত্রেয়
তৃতীয় শ্রেণী

ৰূপা আৰু অনুপমা দুয়োজনী একেখন স্কুলতে পঢ়া ছোৱালী। কিন্তু দুয়োজনীৰ মাজত কেতিয়াও ভাল বন্ধুত্ব নাছিল। ৰূপা বৰ দুখীয়া ঘৰৰ ছোৱালী আৰু অনুপমা ৰব ধনী ঘৰৰ ছোৱালী

আছিল। অনুপমাই ৰূপাক কেতিয়াও ভাল ব্যৱহাৰ নকৰিছিল , কাৰণ তাই দুখীয়া আছিল। এবাৰ পৰীক্ষাৰ আগে আগে অনুপমাৰ বৰ গা অসুখ হ'ল আৰু কেইবাদিনো ধৰি স্কুল যাব নোৱাৰিলে। কথাটো গম পাই ৰূপাই মনত খুব দুখ পালে। এদিন গধূলি তাই অনুপমাৰ ঘৰলৈ গৈ খবৰ ল'লে আৰু তাইক পঢ়া-শুনাতো সহায় কৰি দিলে। তাৰ পিছত লাহে লাহে দুয়োজনীৰে মাজত বৰ ভাল বন্ধুত্ব স্থাপন হ'ল। অনুপমাই নিজৰ ভুল বুজিব পাৰিলে। ধনী আৰু দুখীয়া লৈ মানুহৰ বন্ধুত্ব নগঢ়ে। যি বন্ধুৱে বিপদৰ সময়ত সহায় কৰে সেইজনহে প্ৰকৃত বন্ধু।

নৰ-পিশাচ

সৌৰভ মাণ্টা
ষষ্ঠ শ্ৰেণী

এসময়ৰ কথা। ওমপ্ৰকাশ নামৰ এজন বুঢ়া মানুহ আছিল। তেওঁলোকৰ গাঁৱৰ ওচৰৰ গাঁওখনত এডোখৰ বিশেষ ঠাই আছিল য'ত মানুহ-দুনুহ বেছিকৈ নাযায়। প্ৰকৃততে কোনো মানুহে ভয়তেই সেই ঠাইখনলৈ নাযায়। প্ৰত্যেকেই কয় যে সেই ঠাইখনত হেনো এবাৰ যদি কোনো মানুহ যায় তেনেহ'লে হেনো কেতিয়াও ঘূৰি নাহে। এই কথাটো শুনি ওমপ্ৰকাশৰ মনত সদায় এটা কৌতুহল যে মানুহবোৰ সেই ঠাইখনলৈ গ'লে কিয় ঘূৰি নাহে। কথাটো ওমপ্ৰকাশে বিশ্বাস কৰিব পৰা নাছিল। এদিন ওমপ্ৰকাশে সেই গাঁওখনৰ ওচৰেৰে পাৰ হৈ যাওঁতে হঠাৎ প্ৰকাণ্ড শৰীৰৰ মানুহ এজন সেইফাললৈ আহি থকা দেখা পালে। ওচৰে-পাজৰে থকা সকলো মানুহৰ দৌৰা-দৌৰি লাগিল। ক'ত লুকাও ক'ত নুলুকাও কৈ আটাইবোৰ মানুহ পলাই পত্ৰং দিলে । ওমপ্ৰকাশেও গছ এজোপাৰ আঁৰত লুকাই নিজকে ৰক্ষা কৰিলে। কিন্তু বাটেৰে গৈ থকা এজন বৰ শান্ত প্ৰকৃতিৰ মানুহক সেই ৰাক্ষসটোৱে গাৰ জোৰেৰে উঠাই লৈ গ'ল। কিন্তু মানুহজনক ক'লৈ লৈ গ'ল সেইটো চাবলৈ ওমপ্ৰকাশৰ সাহস নহ'ল । হঠাতে তাৰ সেইটো এটা সপোন সপোন যেন লাগিল। কিন্তু গাঁওখনত হুৱা-দুৱা লাগিল। কথাটো বিশ্বাস কৰিবলৈ টান যদিও সঁচাকেই ঘটনাটো ঘটি গ'ল। সেইদিনাৰ পৰা ওমপ্ৰকাশৰ মনত কৌতুহল আৰু বেছি হ'ল।

এবাৰ ওমপ্ৰকাশে ওচৰৰ পুলিচ থানাত তেওঁৰ মনৰ সন্দেহটোৰ বিষয়ে বিবৰি ক'লে । পুলিচেও তেওঁৰ কথাটো গুৰুত্ব সহকাৰে ল'লে আৰু এদিন ওমপ্ৰকাশৰ লগত সেই ঠাই খনলৈ গৈ ওলাল। তাত কোনো মানুহ-দুনুহ নেদেখি অলপ হাবিতলীয়া ঠাই এখনৰ ফালে তেওঁলোক আগবাঢ়িল। কিছুদূৰ যোৱাৰ পিছত তেওঁলোকে মানুহৰ হাড়-মূৰ কিছুমান দেখিবলৈ পালে। আৰু অলপ দূৰ

আগুৰাই গৈ এটা গুহাৰ দৰে দেখিলে। আটাই কেইজনেই গুহাটোলৈ আগুৰাই গৈ গুহাটোৰ ভিতৰত সোমাই দেখিলে যে এজন প্ৰকাণ্ড চেহেৰাৰ মানুহে ৰজাৰ দৰে আসন এখনত বহি কিবা খাই আছে। ওমপ্ৰকাশে সেই নৰ-পিশাচটোক দেখি চিনি পালে আৰু পুলিচৰ মানুহ কেইজনক ইংগিত দিলে যে এইজনেই সেইজন মানুহ। সেই গুহাটোৰ ভিতৰলৈ গৈ অন্য এটা গুহাত দেখা গ'ল যে প্ৰায় ১৫-২০ জন মান মানুহ গুহাটোৰ ভিতৰত বন্দী হৈ আছে। তেওলোকক সোধাত তেওঁলোকে আচল কথাটো ক'লে যে এই ৰাক্ষসটোৱে আমাক বন্দী কৰি থৈছে। সি প্ৰতিদিনাই এজন এজন মানুহ কেতিয়াবা কেঁচাই-কেঁচাই খায় আৰু কেতিয়াবা জুইত পুৰি বা ভাজি খায়। সেইকাৰণে সি আমাক ইয়াতে বন্দী কৰি থৈ দিছে। কথাবোৰ শুনি মানুহবোৰক গুহাটোৰ পৰা মুকলি কৰি দিলে আৰু পুলিচৰ সহযোগিতাত ওমপ্ৰকাশে সেই পিশাচটোক ধৰি নি তাক গোটেই জীৱন সশ্ৰম কাৰাদণ্ড দিলে। গাঁৱৰ মানুহে ওমপ্ৰকাশৰ এই কামৰ বাবে যথেষ্ট প্ৰশংসা কৰিলে আৰু তেওঁলোকে সেই নৰ-পিশাচটোৰ পৰা মুক্তি পালে।

চাতুৰীৰ ফল

ঈষিকা দাস
ষষ্ঠ শ্ৰেণী

এখন গাঁৱত দুজন খেতিয়ক আছিল। ৰাম আৰু ধ্যান । ৰাম বৰ পৰিশ্ৰমী কিন্তু ধ্যান বৰ এলেহুৱা। দুয়োজনে একেলগতেই কাম কৰিছিল যদিও ধ্যানৰ তুলনাত ৰামে বহুত কাম কৰিছিল। ৰাম বৰ দুখীয়া কিন্তু ধ্যানৰ ঘৰুৱা অৱস্থা যথেষ্ট ভাল। ৰাম যথেষ্ট পৰিশ্ৰমী কাৰণে সেই দেশৰ ৰজাই তেওঁক এটা সোণৰ কলহ দিলে। কাৰণ ৰামে বৰ কষ্ট কৰি খেতি কৰিছিল আৰু ৰাজভঁৰালত জমা দিছিল। সোণৰ কলহটো পাই ৰামে আনন্দমনে আনি নিজৰ পত্নীক দিলে। ধ্যানে এই কথাটো গম পাই ৰামৰ ঘৰৰ ওচৰে পাজৰে ঘূৰি ফুৰিবলৈ ধৰিলে। ৰামৰ পত্নীয়ে সোণৰ কলহটো পাই কলহটো প্ৰথমতে ঘৰত সযতনে ৰাখিলে । চোৰে নিব বুলি সিহঁতৰ ঘৰৰ পিছফালে থকা কুঁৱাটোত থোৱাৰ কথা ভাবিলে আৰু ৰামৰ লগত আলোচনাও কৰিলে। ধ্যানৰ নজৰ ৰামৰ সোণৰ কলহটোৰ ওপৰত আছিল। কলহটো কুঁৱাৰ ভিতৰত থোৱাৰ কথা শুনি সেই দিনাই ৰাতি সি কুঁৱাত জাপ দিলে। কিন্তু ৰামৰ পত্নীয়ে প্ৰকৃততে মানুহক শুনাবৰ নিমিত্তেহে সেই বুদ্ধিটো সাজিছিল। সোণৰ কলহটো সিহঁতে কুঁৱাটোৰ ভিতৰত থোৱা নাছিল, ঘৰতেই ৰাখিছিল। ধ্যানে বহুত চেষ্টা কৰিও কুঁৱাটোৰ পৰা উঠিব নোৱাৰি তাতেই মৰি থাকিল। সেইকাৰণে কোৱা হয় অতি লোভ কৰা বেয়া। লোভেই পাপ পাপেই মৃত্যু। অতি চাতুৰি কৰা বাবে ধ্যান আজি মৃত্যুমুখত পৰিবলগীয়া হ'ল।

ইটো - সিটো বহুতো

চাফ-চিকুণতা

নয়নিকা বৰা
তৃতীয় শ্রেণী

এদিন ৰবিবাৰে মোৰ লগৰীয়াসকলৰ লগত বনভোজলৈ গৈছিলো। আমি যিখন ঠাইলৈ গৈছিলো সেইখন ঠাই বৰ ধুনীয়া আছিল। সেইদিনা বহুত মানুহ তালৈ বনভোজ খাবলৈ আহিছিল। আমি দেখিছিলো যে বনভোজলৈ অহা মানুহবোৰে খোৱা বস্তুৰ পেকেট, কাগজ, পলিথিন আদি য'তে ত'তে পেলাইছে। তাৰপিছত মই মোৰ লগৰীয়াবোৰক ক'লো - চা-চোন , মানুহবোৰে জাৱৰবোৰ কেনেকে য'তে ত'তে পেলাইছে। আমি মানুহবোৰৰ ওচৰলৈ গ'লো আৰু ক'লো - কিয় জাৱৰবোৰ য'তে ত'তে পেলাইছা ? নাপাই নহয় --- ৰাষ্টাটো লেতেৰা হ'ব । তেতিয়া মানুহবোৰে আমাক হাঁহিবলৈ ধৰিলে আৰু কিছুমানে গালি পাৰিবলৈও ধৰিলে। আমি কিন্তু কাৰো কথা নুশুনিলো । ৰাষ্টাৰ জাৱৰবোৰ উঠাই কাষতে থকা ডাষ্টবিন এটাত পেলাই দিলো। তাকে দেখি মানুহকেইজনে লাজ পালে। আমি কলো - চাফ- চিকুণতাই আমাৰ প্ৰকৃতিক ধুনীয়া কৰি ৰাখে । তেতিয়াহে আমাৰ স্বাস্থ্যও ভালে থাকিব । এই কথা শুনি মানুহকেইজনে লাজ পালে আৰু তাৰ পৰা আঁতৰি গ'ল ।

ধুনীয়া মানালি

সার্থক মহত্ব
তৃতীয় শ্রেণী

এইবাৰ গৰমৰ বন্ধত আমি হিমাচল প্ৰদেশৰ কুলু আৰু মানালিলৈ গৈছিলো। আমি এনিশা কুলুত থাকিলো। কুলু চহৰৰ মাজেদি বিয়াচ নদীখন বৈ গৈছে। পাছদিনা আমি মনোৰম মানালি পালোগৈ। মানালি বৰ ধুনীয়া। বৰফেৰে ভৰা পাহাৰীয়া ঠাই। মানালিখন আপেলৰ বাগিছাৰে ভৰা। আমি থকা ৰিজ'টখনৰ নামো এপল কাণট্রি । আমি মানালিত বিভিন্ন ধৰণৰ ৰোমাঞ্চকৰ খেল উপভোগ কৰিলো। ইয়াৰ ৰৌতাং পাছত বৰফৰ বিভিন্ন খেলা হয়। মানালি সঁচাকেই ভগৱানৰ সুন্দৰ সৃষ্টি। কেতিয়াবা মানালিলৈ যাবাচোন।

মোৰ ৰেলযাত্ৰা

নিহাৰীকা গোস্বামী
চতুৰ্থ শ্ৰেণী

এবাৰ আমাৰ পৰিয়ালৰ আটাইবোৰেই ৰেলেৰে কলিকতালৈ ফুৰিবলৈ গৈছিলো। ৰেলত যাত্ৰা কৰি বৰ আনন্দ লাগিল। গোটেই দিনটো ৰেলত বিভিন্ন ধৰণৰ খোৱা বস্তু আহিবলৈ ধৰিলে। দেউতাই তাৰে কিছুমান বস্তু আমাক খাবলৈ কিনি দিলে কিন্তু আমি কোৱা আটাইবোৰ বস্তু আমাক খাবলৈ নিদিলে। যাওঁতে আমি বহুতো নদী, পথাৰ আৰু নানান মনোমোহা দৃশ্য দেখিবলৈ পালো। কিছুমান ষ্টেশ্যনত ৰেলখন ৰয়। তেতিয়া বহুত মানুহ উঠে আৰু কিছুমান নামে । এবাৰ ষ্টেশ্যনত ৰেলখন ৰওঁতে দেউতাই পানী আনিবলৈ নামি গৈছিলে। বহুত দেৰি দেউতা নহা দেখি মোৰ বৰ ভয় লাগিছিল। কিন্তু অলপ সময়ৰ পিছত দেউতাক দেখা পাই মনটো ভাল লাগি গ'ল। এনেদৰে গৈ গৈ এটা সময়ত আমি কলিকতা পালোগৈ। গোটেই ৰেল ভ্ৰমণৰ সময়ছোৱা আমি বহুত ফূৰ্তি কৰিলো। মোৰ বৰ ভাল লাগিল।

পঞ্চম শ্ৰেণীৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ মনৰ খবৰ

বিষয় - ছাত্ৰ হিচাপে আমাৰ আচাৰ-ব্যৱহাৰ কেনে হোৱা উচিত ?

আস্মীত ফুকন

ছাত্ৰ হিচাপে আমাৰ আচাৰ-ব্যৱহাৰ ভাল হোৱা উচিত। আমি সদায় আমাৰ শিক্ষক-শিক্ষয়িত্ৰীৰ কথা শুনিব লাগে। চাফ-চিকুণকৈ থকাৰ উপৰিও আমি শৃংখলাপৰায়ণ হ'ব লাগে। পঢ়া-শুনা সময়মতে কৰিব লাগে। লগতে খেলা-ধূলা কৰাৰ উপৰিও খোৱা-বোৱাও সঠিককৈ কৰিব লাগে। আনক কেতিয়াও মিছা কথা ক'ব নালাগে আৰু কাকো ঠগাব নালাগে। বিদ্যালয়লৈ নিয়া কিতাপ-পত্ৰ আগদিনা ৰাতিয়েই পৰিপাটিকৈ ভৰাই থ'ব লাগে। স্কুললৈ নিয়া পেঞ্চিল কাটি জোঙা কৰি থ'ব লাগে আৰু নিজেই জোতা পলিছ কৰিব লাগে। বিদ্যালয়ৰ ইউনিফৰ্ম সঠিকভাবে পিন্ধিব লাগে। কাৰো লগত কাজিয়া-পেছাল কৰিব নালাগে। আমাৰ কাৰণে যাতে কোনেও কষ্ট নাপায় আৰু আমি যাতে সকলোকে সুখী কৰি ৰাখিব পাৰো তাৰ প্ৰতি আমি যত্নপৰ হ'ব লাগে।

নিশান্ত বৰা

ছাত্ৰ হিচাপে আমি সময়ৰ কাম সময়ত কৰিব লাগে। সময়মতে গা ধুব লাগে, ভাত খাব লাগে, পঢ়া-শুনা কৰিব লাগে, খেলা-ধূলা কৰিব লাগে আৰু শৃংখলাপৰায়ণ হ'ব লাগে। আমাক মা-দেউতাই যি দিয়ে তাতেই সন্তুষ্ট থাকিব লাগে। অর্থাৎ যি খাব দিয়ে তাকে খাব লাগে, যি পিন্ধিব দিয়ে তাকে পিন্ধিব লাগে আৰু য'লৈকে যাবলৈ কয় তালৈহে যাব লাগে। বহুত কিবা-কিবি বস্তু বিচাৰি মা-দেউতাক আমনি কৰিব নালাগে। আমাক যি দিয়ে আমি তাতেই সন্তুষ্ট থাকি তেওঁলোকক সহায় কৰিব লাগে। আমাৰ ভালৰ কাৰণে আমাৰ মা-দেউতা, ককা-আইতা বা বৰতা-বৰমাহঁতে কেতিয়াবা গালি পাৰে। কিন্তু সেইবোৰ ভালৰ কাৰণেহে কয় বুলি মনত ৰাখি থ'ব নালাগে। আমাৰ নিজৰ বস্তু-বাহানি পৰিপাটিকৈ ৰাখিব লাগে। আমি লেতেৰা হ'ব নালাগে। ডাঙৰৰ কথা আৰু শিক্ষকৰ কথা শুনিব লাগে। আমি বেয়া কথা ক'ব নালাগে। সঠিক পৰিমাণত খাদ্য খাব লাগে। শ্ৰেণীকোঠাত মনে মনে থাকিব লাগে।

উৰ্বশী বৰা

ছাত্ৰ হিচাপে আমি আমাৰ কাম সময়মতে কৰিব লাগে। সময়মতে শুব লাগে আৰু সময়মতে উঠিব লাগে। তেতিয়াহে আমাৰ স্বাস্থ্য ভালে থাকিব। আমি শৃংখলাবদ্ধভাবে সকলো কাম কৰিব লাগে। ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে সদায় উচিত পৰিমাণৰ খাদ্য খাব লাগে। আমাৰ সকলো কামৰ দায়িত্ব আমি নিজেই ল'ব লাগে। পঢ়া-শুনা ভালকে কৰাৰ উপৰিও আমি ভাল ভাল বন্ধুৰ লগত বন্ধুত্ব গঢ়িব লাগে । কাজিয়া-পেছাল কৰা বা পৰীক্ষাত নকল কৰা আদিৰ দৰে বেয়া কামৰ পৰা আমি সদায় দূৰত থাকিব লাগে। নিজৰ বহী-কিতাপ, পঢ়া টেবুল আৰু বিচনা-পত্ৰ চফাকৈ ৰাখিব লাগে। উৎসৱ-পার্বনত আমি ভাগ ল'ব লাগে। আইতা-ককাৰ খবৰ ল'ব লাগে। সময় পালে ঘৰৰ বাগিছাৰ গছ-গছনিবোৰৰ যত্ন ল'ব লাগে। জীৱ-জন্তুক মৰম কৰিব লাগে। আমি আমাৰ পিতৃ-মাতৃৰ লগতে শিক্ষক-শিক্ষয়িত্ৰীৰ কথা শুনিব লাগে। আমি আটায়ে সকলোৰে লগত মিলি-জুলি থাকিব লাগে।

অয়ন শইকীয়া

ছাত্র হিচাপে আমাৰ প্ৰধান কাম হৈছে অধ্যয়ন কৰা। অধ্যয়নৰ জৰিয়তে আমি ভৱিষ্যৎ জীৱন গঢ়ি তুলিব পাৰো। পঢ়া-শুনাৰ প্ৰতি অৱহেলা কৰা অকণো উচিত নহয়। পঢ়া-শুনা কৰিলে আমাৰ গাঁওখন বা সমাজখনক ভালদৰে আগুৱাই নিব পাৰিম। আমি শিক্ষক-শিক্ষয়িত্ৰীক আৰু জ্যেষ্ঠজনক সন্মান কৰিব লাগে। ঘৰৰ সকলো কাম নিয়াৰিকৈ কৰিব লাগে। কাৰো লগত হাই-কাজিয়া কৰিব নালাগে। আমি নিজে পৰিপাটিকৈ থাকিব লাগে। ডাঙৰে কৰা ভাল কামবোৰ চাই আমিও কৰিব লাগে। সমনীয়াৰ লগত পঢ়া-শুনাৰ কথা আলোচনা কৰিব লাগে।

প্ৰিয়ানী শৰ্মা

ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলৰ মূখ্য উদ্দেশ্য হৈছে বিদ্যা আহৰণ কৰা। কিন্তু সেই বিদ্যা আহৰণ কৰাৰ উপৰিও ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকল আন কিছুমান গুণৰ অধিকাৰী নহ'লে ভৱিষ্যত জীৱনটো অসাৰ হৈ পৰে। চৰিত্ৰ গঠন ছাত্ৰ জীৱনৰ এক অপৰিহাৰ্য্য অংগ। সৰুৰে পৰাই ছাত্ৰসকলে চৰিত্ৰ গঠনত গুৰুত্ব দিব লাগে। ছাত্ৰ সদায় বিনয়ী হ'ব লাগে, নম্ৰ হ'ব লাগে, সাধু হ'ব লাগে আৰু ভক্তিপৰায়ণ হ'ব লাগে। এই গুণসমূহ নাথাকিলে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীসকলে ভৱিষ্যতে বহুতো কষ্ট ভোগ কৰিবলগীয়া হয়। পিতৃ-মাতৃ আৰু শিক্ষা গুৰুৰ আদেশ মানি চলাটো ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ বাবে অতি প্ৰয়োজনীয়। ভাই-ভনীৰ লগতে ওচৰ চুবুৰীয়াকো আমি মৰম-চেনেহ কৰিব লাগে। তেওঁলোকৰ লগতো আমি মিলা-প্ৰীতিৰে থাকিব লাগে।

কবিতাৰ কৰণিত

বৰষুণ

শুভেচ্ছা বৰা
চতুর্থ শ্ৰেণী

টুপ্ টুপ্ টুপ্ টুপ্
বৰষুণ পৰে
আকাশত ডাৱৰে
গাজনি মাৰে।
বৰষুণ আহিলে
মই ভাল পাওঁ
কাগজৰ নাওঁ লৈ
খেলিবলৈ যাওঁ।
টুপ্ টুপ্ টুপ্ টুপ্
বৰষুণ পৰে
বিল, জান-জুৰি
পানীৰে উপচি পৰে ।
পানীবোৰ বাঢ়িলেই
বানপানী হয়
ঘৰ-দুৱাৰ খেতি-পথাৰ
সকলো বুৰায়।

দেউতা

হিমিকাৰাণী বৰা
নৱম শ্ৰেণী

ঘৰৰ মূল মানুহজন
বহুতেই কাঢ়া,
গোটেই দিন কষ্ট কৰে
ৰাতি ধৰে পঢ়া।
দেউতাৰ সকলোতকৈ মৰমৰ
মই প্ৰথম পুত্ৰী
আমাৰ মাৰ পেটমচা
দ্বিতীয় মোৰ ভাতৃ।
দেউতা মোৰ সাহস
আন্ধাৰ ৰাতিৰ চাকি
তেওঁৰেই মোৰ প্ৰেৰণা
গোটেই জীৱন জুৰি।
ধন্যবাদ এই বিধাতাক
যে উপজিলো মই
এই ধুনীয়া জগতখনত
তোমাৰ পুত্ৰী হৈ।

সেই নদীখন

জীৰিথা শীল
নৱম শ্ৰেণী

সেই পুৰণি নদীখন
এতিয়া একেবাৰে শুকাই গ'ল।
আমি ৰংমনেৰে যে গা ধুইছিলো---
সেয়াও হয়তো পানীৰ লগতে বৈ গ'ল।
মোৰ এতিয়াও মনত আছে,
দেউতাৰ লগত মাছ মাৰিব যাওঁতে
কেনেকৈ যে জাপ মাৰি উঠিছিল কেবাটাও মাছ---
সেই পুৰণি নদীখনলৈ
মোৰ খুব মনত পৰে।
আয়ে খং কৰোতে,
মই যে নদীখনক সকলো কথা কৈ
ইনাই-বিনাই কান্দিছিলো
সেই কান্দোনলৈ এতিয়াও মোৰ বৰ মনত পৰে ।
বিদ্যালয়লৈ যাম বুলি কৈ
সমনীয়াৰ লগত সাঁতুৰিব গৈছিলো,
মায়ে পাছত গম পাই চেকনিৰে পিতোতে
কান্দি কান্দি সেই নদীখনকেই কৈছিলো---
এই সকলো আনন্দ ফূৰ্তিৰ দিন জানো আৰু ঘূৰাই পাব পাৰিম
সেই লগৰীয়াসকলো এতিয়া নোহোৱা হ'ল
সেই নদীৰ পাৰত এতিয়া জাৱৰৰ দ'ম হ'ল
কেৱল সেই সকলো ঘটনা
মোৰ মনত ৰৈ গ'ল।

ফার্ষ্ট চামাৰ ফেষ্ট

তাচমিন য়ুচৰা আহমেদ
সপ্তম শ্রেণী

গৰমৰ দিনত আমাৰ স্কুলত
পাতিছিলে চামাৰ ফেষ্ট
ফুড কোৰ্টত কত যে দোকান
কত যে ল'লো টেষ্ট।
তিনিদিন ধৰি পঢ়াশুনাৰ
কোনো খবৰ নাই
গান-বাজনাত মগ্ন হ'লো
উলাহতে তত নাই।
কঁপি কঁপি মঞ্চত উঠিলো
গালো এটা গান
ভাল হৈছে নে বেয়া হৈছে
একো নাজানো আন।
নাচ গান চাই খাই বৈ
মন উৰণীয়া হ'ল
হাতত থকা টকাকেইটা
তাকো শেষ হৈ গ'ল।
খোৱা-বোৱাও শেষ কৰিলো
বোলছবিও চালো
কেতিয়ানো আৰু চামাৰ ফেষ্ট আহে
তাৰেই চিন্তা কৰিলো।

কলম

অৰ্চিত ফুকন
পঞ্চম শ্রেণী

কলম পেঞ্চিল নোহোৱাহেঁতেন
কি হলহেঁতেন দশা
পঢ়াশুনা কৰা কথাবোৰৰ
মিছা হ'লহেঁতেন আশা।
পৰীক্ষাৰ সময়ত কলমটোৰেহে
ভাগ্য নির্ণয় কৰে
পঢ়িশুনি নগ'লে দেখোন
দুর্ভাগ্যই দেখা দিয়ে।
কলম নোহোৱা হ'লে কোনেও
কৰিব নোৱাৰে উন্নতি
ব্যৱহাৰ নজনাৰ ফলত কাৰোবাৰ
হৈছে অধোগতি।
ভালে বেয়াই সকলোৰে তাত
হয় দেখো বিৰাজমান
কলমৰেই মাথো ৰাখিব পাৰি
সকলোৰে মান।

ডাকোৱাল

ৰাজেন ভৰালী
সহকাৰী শিক্ষক
(পদাৰ্থ বিজ্ঞান বিভাগ)

হেৰা ডাকোৱাল, ক'লৈ গ'লা ?
আকৌ আহিবানে এবাৰ মোৰ পদূলিত ?
ক্ষন্তেক ৰৈ চাইকেলৰ টিলিঙাটো বজাবা,
মই লৰমাৰি যাম
মৰমৰ চিঠিখনৰ বাবে
কি যে মিঠা মিঠা লগা অপেক্ষা,
বাৰাণ্ডাত ঠিয় হৈ
তোমালৈ ৰৈ থাকিম,
দিনৰ পিছত দিন ধৰি,
তুমি আকৌ আহিবানে মোৰ পদূলিত
জীৱনৰ ছন্দবোৰ এতিয়া মোবাইলত বন্দী,
খবৰবোৰ যেন কাৰোবাৰ ৰগৰ,
এখোজ নিলগৰ বন্ধুলৈ
শুভেচ্ছাৰ ফুলৰ থোপা ---
মোবাইলত উৰি যায়,
পলকতে 'মেচেজ বক্স'ত পৰি শুষ্ক হয়
আন্তৰিকতাৰ এনাজৰী এতিয়া
মোবাইলৰ 'মিচড কল'ত
হেৰা ডাকোৱাল আকৌ এবাৰ আহিবা
তোমাৰ টিলিঙাৰ শব্দলৈ বাট চাই ৰ'ম ।

চামাৰ ফেষ্ট

যুৱৰাজ ভূঞা
নৱম শ্ৰেণী

আমাৰ স্কুলত গৰম দিনত
চামাৰ ফেষ্ট আহিল
কোল্ড ড্রিংকছ আৰু আইচক্রিমৰ
বহুত দোকান বহিল।
দীঘল দীঘল লাইন লাগিল
কোল্ড ড্রিংকছ খাবলে'
তাতোকৈও দীঘল লাইন লাগিল
আইচক্রিমৰ সোৱাদ লবলে'।
অতি হেঁপাহেৰে ৰৈ আছে
লাইনত মানুহবোৰ
গমেই নাপালে কেনেকৈনো গল
আপদীয়া সময়বোৰ।
ঘণ্টাৰ পিছত ঘণ্টা ৰওতেওঁ
মোৰ দেখোন সুযোগ নাহিল
অলপ পিছতহে গম পালো
আইচক্রিম শেষ হৈ থাকিল।
কি কৰো কি নকৰো বুলি
মহা বিবুধিত পৰিলো
আইচক্রিম, কোল্ড ড্রিংকছ খাবলৈ নাপাই
ঘৰলৈ উভতিলো।

কাগজ

দুলু দত্ত
বিভাগীয় প্রধান
(আই..চি.টি. বিভাগ)

মোক চিনি পাইছানে ?
মই এখন কাগজ
মানুহে যেতিয়াই বল্কল পিন্ধিছিল
মোৰ সৃষ্টিৰ আৰম্ভণিও তেতিয়াই হৈছিল।
এনেয়েতো মোৰ ৰং বগা
কিন্তু আধুনিকতাই মোক ৰঙীন কৰি পেলালে।
ৰঙা, ক'লা, বেঙুনীয়া, গুলপীয়া
সকলো ৰঙতে উপলব্ধ মই ।
মোৰ বুকুত কিমান সাহিত্যৰ সৃষ্টি হ'ল
মই নিজেই নাজানো।
প্ৰেয়সীয়ে লিখা চিঠিৰ পৰা আৰম্ভ কৰি
কূটনীতিক সম্পৰ্কলৈকে,
সফলতাৰ বাৰ্তাৰ পৰা
বিফলতাৰ চৰম হতাশালৈ,
সকলোৰে নৈতিক দায়িত্ব যেন
অকল মইয়েই লৈ থৈছো
কেতিয়াবা কোনোবাই হতাশা আৰু খণ্ডত
মোক ফালি দলিয়ায়ো দিয়ে
আৰু কেতিয়াবা কোনোৱে মোক আবেগিকভাবে
বুকুত সাৱটিও লয়।
মুঠতে মোক লৈ কতৰ যে কিমান
ভাল বেয়া অভিজ্ঞতা!!!
পৰীক্ষাৰ সময়ত মোক দেখিলে
সকলোৱে ভয় কৰে,
অন্তত মই নিজকে বহুত
শক্তিশালী বুলি ভাবিবতো পাৰো !!!
কিন্তু মোৰ অভিমান নাই,
নাই মোৰ অভিযোগো
হয়তো যেতিয়ালৈকে এই মানৱ কুল থাকিব
মই হয়তো এনেদৰেই থাকিম ,
সকলোৱেই মোক এনেদৰেই বিচাৰিব ---
এখন কাগজ পাম নেকি ???

লিমাৰিক

অসম পুৰাণ

প্ৰাঞ্জল শইকীয়া
সহকাৰী শিক্ষক
(সংগীত বিভাগ)

শুনিয়োক সৰ্বজন আমাৰ বচন ।
অসম দেশৰ কথা কওঁ এহিক্ষণ ।
সৰু-বৰ এতিয়া সকলো সমান ।
ডাঙৰক সৰুৱে নকৰে সন্মান।।
উপদেশ-পৰামৰ্শ হ'ল যে অতীত।
কিবা ক'লে কোনেও নকৰে ভয়-ভীত ।।
মদ ভাং চিগাৰেটত ল'ৰাবোৰ পকা।
পানীৰ দৰে বোৱাইছে বাপেকৰ টকা।।
ছোৱালীৰো পোছাকত শালীনতা নাই।
পিতৃ-মাতৃৰ হকা-বাধা অথলেহে যায়।।
অসমৰ নেতাবোৰ ডলাৰ বগৰী।
এটা দলৰ পৰা আনটোলৈ ফুৰে বাগৰি।।
য'তে সুবিধা পায়, পোতে খোপনি।
ৰাইজৰ টকাৰে ভঁৰাল কৰে শুৱনি।।
পাঁচ বছৰ ক'ত থাকে গমকে নেপায়।
ইলেক্চন আহিলেহে মূৰ দাঙি চায়।।
বন্ধ প্ৰদেশ বুলি অসমৰ আছে নাম।
সাধাৰণ জনতাই ভোগে ইয়াৰ পৰিণাম।।

অসমৰ বহাগ বিহু চলে আহাৰত।
বহাগী বিদায় বুলি লিখে বেনাৰত।।
ল'ৰা-বুঢ়া কাৰো গাত তৎ নাইকীয়া।
পুৱালৈকে নাচি বাগি হয় মতলীয়া।
বিহুগীতবোৰো হ'ল বিজতৰীয়া।
থলুৱা গীত-মাতৰ আদৰ নাইকীয়া।।
ওজাপালি, ভাওনা, সত্ৰীয়া কৃষ্টি।
নৱ-প্ৰজন্মই তালৈ নিদিয়ে দৃষ্টি ।।
নিউজ চেনেলবোৰৰ মহিমা অপাৰ।
একেটা বাতৰিকে কৰি থাকে প্ৰচাৰ।।
সকলো বাতৰিকে ব্ৰেকিং নিউজ সজায়।
দিনে-ৰাতি একেখিনিকে থাকে পেঘেনিয়াই।।
যুগৰ পৰিবৰ্তন এয়া সকলোৱে কয়।
সময় বোঁৱতী নদী কালৈকো নৰয়।।
সময়ৰ সোঁতে কৰে সকলো সলনি।
অতীত আৰু বৰ্তমানৰ নহয় ৰিজনি।।
তথাপিও দেখাখিনি বেকত কৰিলো।
অসম পুৰাণৰ কথা ইয়াতে সামৰিলো।।

অন্ধ রাগে

চোখ বন্ধ করলেই দেখি লাল

ভাল লাগছেনা আর জীবনের এই তাল,

কিছু আঘাত করার কেমন যেন ইচ্ছা হয়,

কিন্তু আজ সেই ইচ্ছাপূরণের দিন নয়।

তার থেকে বরং গধুলীর উন্মুক্ত প্রান্তরে,

মিশে যেতে চাই উদ্ভ্রান্ত রোদে,

ক্লান্তির রোদে সমীরণ,

জারিত হোক অন্তরে।

আজ নিখিল আনন্দে মেতে উঠুক

নীলাকাশের শন্খচিল,

পৃথিবীর সমস্ত প্রান্তে জেগে উঠুক,

মানবতার অকৃত্তিম মিছিল ।

Areeq Imran

Class -10

কথা

কথায় কথায় কথার মাঝে

কথার কথাই আসে,

চোখের কথায় বললো কথা

আমায় ভালবাসে।

আমার কথাও তাকে বলি

কথার মুখে হাসি,

আমার সাথে কথাও বলে,

কথা ভালবাসি।

Hrideek Chaudhury

Class - 9

বিদ্যালয় জীবনে খেলাধুলার গুরুত্ত :

খেলাধুলার মাধ্যমে শুধু শরীরচর্চা নয়, নেতৃত্তশক্তি, পারস্পরিক সৌহার্দ, মৈত্রী, ভাতৃত্ত ইত্যাদির চারিত্রিক গুনাবলির প্রকাশ ঘটে। সুস্থ জীবনলাভের জন্য চাই খেলাধুলা। উন্নত দেশগুলোতে সাধারণত কল-কারখানাগুলিতে কাজ শুরু করার আগে শরীরচর্চা করা হয়ে থাকে ; এর দ্বারা কর্মশক্তির বিকাশ হয় এবং মনোনিবেশ ক্ষমতাও বৃদ্ধি পায়। আমরা প্রত্তেকেই জানি, যে স্বাস্থই হল আসল সম্পদ, তাই সুস্থতাই আমাদের মৌলিক কর্তব্য ।

নিয়মিত এবং পরিমিত খেলাধুলার অভ্যাস সুস্থ জাতি ও সুস্থ মানসিকতা গঠনে বিশেষ ভূমিকা গঠন করে এমনকি মানুষ শৃন্খলাপরায়ণ হয়ে ওঠে । তাই শরীরচর্চা এবং খেলাধূলার অভ্যাস সুস্থ মানবজাতি গঠনে এক বিশেষ অগ্রনি ভুমিকা পালন করে ।

Arkaprabha Dutta

Class- 8

TRUTH IS STRENGTH